धींधवाल पब्लिकेशन

DHP 27

Dhindhwal Publication

2nd ग्रेड शिक्षा मनोविज्ञान

वरिष्ठ अध्यापक (द्वितीय श्रेणी), प्रयोगशाला सहायक, शारीरिक शिक्षक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष हेतु समान रूप से उपयोगी

द्वितीय संशोधित संस्करण

जनवरी 2025 तक

- विगत परीक्षाओं में दिसम्बर 2024 तक आये प्रश्न
- अध्याय के बाद वनलाईनर सारांश
- अभ्यास हेतु अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

नरेन्द्र सिंह पंवार
व्याख्यता, स्कूल शिक्षा

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

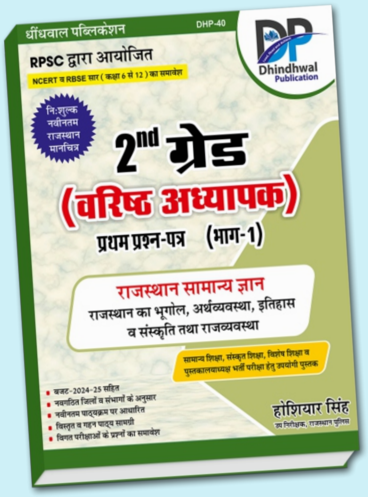

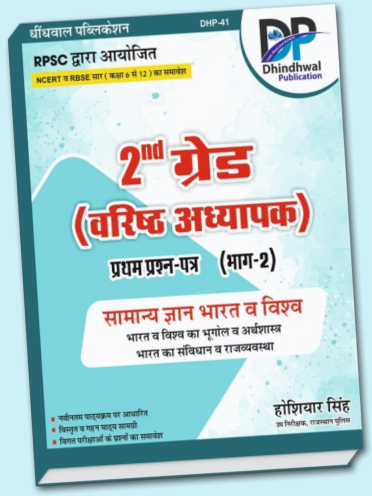

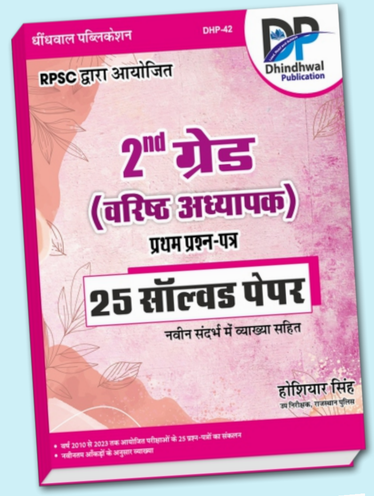

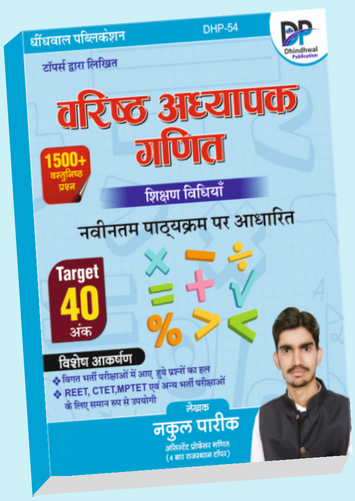

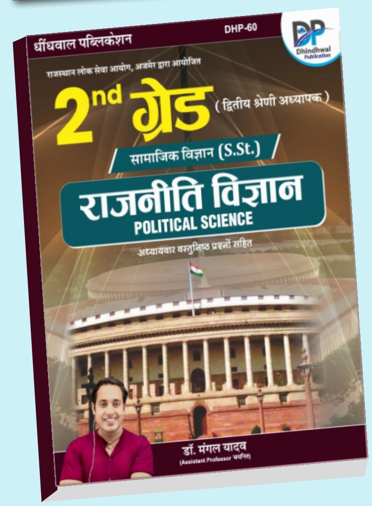

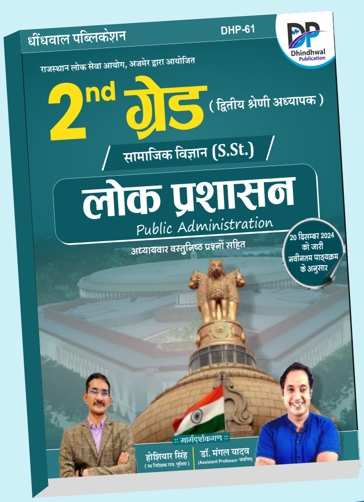

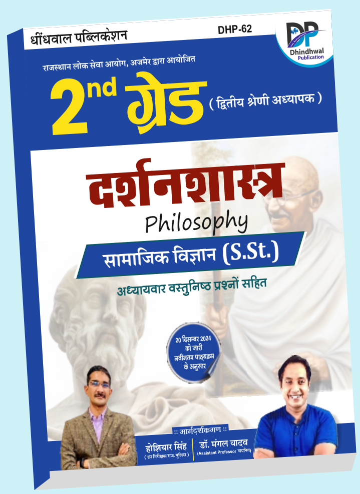

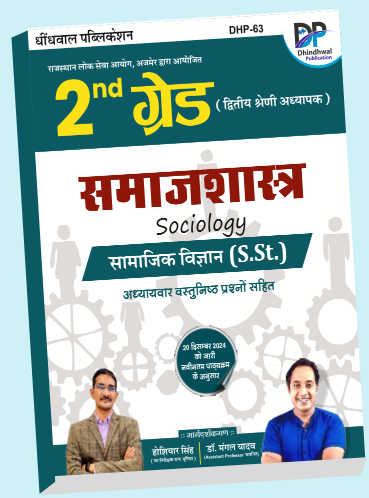

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

जुड़िए पब्लिकेशन के टेलीग्राम चैनल से

@DHINDHWAL2023GK

- नि:शुल्क मार्गदर्शन
- नि:शुल्क टेस्ट सीरीज (पीडीएफ फॉर्मेट में)
- विज्ञप्ति सिलेबस व परिणाम संबंधी जानकारी
- डाउट क्लियर करने के लिए पब्लिकेशन के लेखकों से सीधा संवाद
- भूगोल जैसे विषय के अद्यतन आँकड़े

टेलीग्राम में जाकर धींधवाल पब्लिकेशन/Dhindhwal Publication सर्च करके इसे जोइन कर सकते हैं।

टेलीग्राम ग्रुप का लिंक प्राप्त करने के लिए 8306733800 पर वाट्सअप मैसेज करें।

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

नरेन्द्र सिंह पंवार

B.Ed., M.A.(मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र)

NET - 5 बार उत्तीर्ण, SET - 2 बार उत्तीर्ण
Ph.D. (Pursuing From M.L.S.U., Udaipur)

लेखक परिचय

नरेन्द्र सिंह पंवार का जन्म शाहपुरा (भीलवाड़ा) में हुआ। आपने वर्ष 2018 में तृतीय श्रेणी अध्यापक पद पर श्री नाथद्वारा में कार्य ग्रहण किया, साथ ही वर्ष 2019 में मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल द्वारा आयोजित व्याख्याता परीक्षा में व्याख्याता पद पर चयन हुआ तत्पश्चात् वर्ष 2020 में हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में व्याख्याता पद पर चयन के साथ ही 2020 में ही **RPSC** द्वारा आयोजित व्याख्याता परीक्षा में राजस्थान में 8 वीं रैंक के साथ व्याख्याता पद पर चयन हुआ। वर्तमान में आप व्याख्याता पद पर अपनी सेवाएं उदयपुर में दे रहे है, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है। आपका **RPSC** द्वारा आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती परीक्षा 2022 में साक्षात्कार हेतु चयन हुआ। आपने 16 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठि में भाग लिया एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में 5 रिसर्च पेपर पब्लिश करवा चुके है।

लेखक की अन्य पुस्तके:

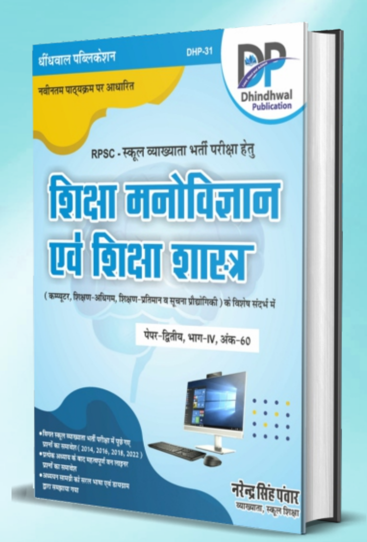

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन प्रस्तुत करते हैं-

शिक्षा मनोविज्ञान

वरिष्ठ अध्यापक (द्वितीय श्रेणी), प्रयोगशाला सहायक, शारीरिक शिक्षक एवं पुस्तकाल्याध्यक्ष हेतु समान रूप से उपयोगी

"अभी तो असली उड़ान बाकी है, परिंदे का इम्तिहान बाकी है,
अभी-अभी तो लांघा है समुद्र, अभी तो पूरा आसमान बाकी है।"

- ✦ प्रामाणिक विषय वस्तु का संकलन।
- ✦ तस्वीरों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण।
- ✦ परीक्षाओं के नवीन पैटर्न के अनुसार गहन व व्यापक पाठ्यसामग्री का संकलन
- ✦ विगत परीक्षाओं में आये हुए **520** से अधिक प्रश्नों का संकलन।
- ✦ अभ्यास हेतु **490** से अधिक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- नरेन्द्र सिंह पंवार
(व्याख्याता, स्कूल शिक्षा, उदयपुर-राज.)

प्रकाशक:-
धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication
- धींधवाल पब्लिकेशन
- Hoshiyar singh Examwala

बुक कोड- DHP-27

© सर्वाधिकार- लेखक

फिक्स रेट ₹ - 225.00

श्री बोहरा गणेशाय नमः
उदयपुर

द्वितीय संशोधित संस्करण

मुद्रक-
पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुनः उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णतः वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अतः ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अतः दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियो,

प्रस्तुत पुस्तक श्री बोहरा गणेश जी एवं मेरे माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक राजस्थान सहित अन्य राज्यों में होने वाली शिक्षक भर्ती परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए समकक्ष पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गई है–

- ➢ पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।
- ➢ विभिन्न सिद्धान्तों एवं अवधारणा को आकर्षक चित्रों के माध्यम से बताया गया है।
- ➢ प्रत्येक अध्याय के बाद वन लाइनर आधारित पाठ का सारांश दिया गया है।
- ➢ वर्ष 2024 तक हुई द्वितीय श्रेणी, CTET एवं व्याख्याता भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नों को शामिल किया गया है।
- ➢ इस पुस्तक को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 एवं 12 की पुस्तकों, इग्नु बोर्ड, विभिन्न ओपन विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों एवं विभिन्न संदर्भ पुस्तकों को आधार मानते हुए तैयार किया गया है।
- ➢ शिक्षा मनोविज्ञान की इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों की मूल समझ को विकसित करना है।

श्रीमान कालूराम जी खौड़ (ADM), श्रीमती सुमन सोनल (SDM नवलगढ़, झुंझुनूं), प्रो. मोनिका नागोरी मैम, प्रो. पूरणमल जी यादव, डॉ. सुमित्रा शर्मा, डॉ. राजू सिंह जी, डॉ. मनीष श्रीमाली (MLSU उदयपुर), डॉ. दिनेश जी बसंल (सहायक निदेशक शिक्षा विभाग, उदयपुर), डॉ. रिपुदमन सिंह उज्ज्वल, डॉ. योगेन्द्र कुमार श्रीमाली, डॉ. नवनीत शर्मा, (RSCERT, उदयपुर) श्रीमती रश्मि मेहता, संदीप जी आमेटा (समसा, उदयपुर), डॉ. एस.एस. शेखावत (सहायक आचार्य), हिम्मत सिंह जी, गोपालकृष्ण जी मेघवाल (तहसीलदार), इरफान सर (सहकारिता विभाग), इंजीनियर राहुल जी मेघवाल, (ज्ञान ज्योति संस्थान, उदयपुर), आनंद जी अग्रवाल (लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर), मंजू टांक, गिरिश जी चौबीसा, दर्जन सिंह जी सिसोदिया, त्रिभुवन जी चौबीसा, (व्याख्याता डाइट, उदयपुर), गौरीशंकर जी सैनी, यशवंत जी मीणा (प्रधानाचार्य), सुरेश जी व्यास, योगेश जी नाहटा, विरेन्द्र सिंह चुण्डावत, इन्द्र जी पुरोहित, चेतन सिंह राजपूत, प्रहलाद सिंह चौहान (व्याख्याता), किशोर सिंह चौहान, हिम्मत सिंह कोठारी, ललित जी, सुनील जी, टीना यादव, महेन्द्र निनामा, अक्षय जी, गुलजारी सर, कलीम खान, महेन्द्र जी, शंकर सिंह जी, मगन जी, कन्हैयालाल जी, मदन जी, कमलेन्द्र जी, ओमसिंह, मनोज काक, भागीरथ सिंह जी, शैलेन्द्र सिंह, लोकेन्द्र सिंह, सिया पालीवाल, हेमलता मेनारिया, समस्त शिक्षक गण का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव मुझे मिलता रहा है, मैं इन्हें सादर नमन करता हूँ।

लेखन कार्य में सुश्री समृद्धि कुंवर पंवार व मेरी धर्मपत्नी मैना कंवर चौहान का विशेष योगदान रहा।

''मोती कभी भी किनारे पे खुद नहीं आते, उन्हें पाने के लिए समुन्दर में उतरना ही पड़ता है।''

''सपने देखने से ज्यादा जरूरी है उन सपनों के पीछे लगन और मेहनत से काम करना।''

नरेन्द्र सिंह पंवार
(व्याख्याता)
मो.– 8003168158
उदयपुर

शिक्षा मनोविज्ञान

क्र. सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
	सेकंड ग्रेड जी.के. (संस्कृत विभाग) 29 दिसम्बर, 2024 (शिक्षा मनोविज्ञान प्रश्न)	1–2
1.	**शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)** (कक्षा की स्थितियों में शिक्षक के लिए इसका अर्थ, कार्यक्षेत्र और निहितार्थ) (Its meaning, scope and implications for teacher in classroom situations.)	3–22
2.	**शिक्षार्थी का विकास (Development of Learner)** (वृद्धि और विकास की अवधारणा, शारीरिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास) (Concept of growth and development, physical, emotional, cognitive, moral and social development.)	23–63
3.	**अधिगम (Learning)** (इसका अर्थ और प्रकार, सीखने के विभिन्न सिद्धान्त और शिक्षक के लिए निहितार्थ, सीखने का स्थानांतरण, सीखने को प्रभावित करने वाले कारक, रचनावादी अधिगम) (Its meaning and types, different theories of learning and implications for a teacher, transfer of learning, factors affecting learning, constructivist learning.)	64–120
4.	**व्यक्तित्व (Personality)** (अर्थ, सिद्धान्त और मापन, समायोजन और इसकी क्रियाविधि, कुसमायोजन) (Meaning, theories and measurement, adjustment and its mechanism, maladjustment.)	121–161
5.	**बुद्धि एवं सृजनात्मकता (Intelligence and Creativity)** (अर्थ, सिद्धान्त और मापन, सीखने में भूमिका, भावनात्मक बुद्धि– अवधारणा एवं अभ्यास) (Meaning, theories and measurement, role in learning, emotional intelligence- concept and practices.)	162–188
6.	**अभिप्रेरणा (Motivation)** (अर्थ एवं अधिगम की प्रक्रिया में भूमिका, उपलब्धि अभिप्रेरणा) (Meaning and role in the process of learning, achievement motivation.)	189–202
7.	**व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Differences)** (अर्थ एवं स्रोत, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, प्रतिभाशाली बच्चे धीमी गति में सीखने वाले, अपराधी) (Meaning and sources, education of children with special need - Gifted, slow learners and delinquent.)	203–220
8.	**शिक्षा में अवधारणा और निहितार्थ** (स्व–अवधारणा, अभिवृत्ति, रुचि और आदतें, अभियोग्यता और सामाजिक कौशल) (Concept and Implications in Education of) (Self concept, attitudes, interest & habits, aptitude and social skills.)	221–244

सेकंड ग्रेड जी.के. (संस्कृत विभाग)
29 दिसम्बर, 2024 (शिक्षा मनोविज्ञान प्रश्न)

1. शेल्डन के वर्गीकरण के अनुसार, निम्नलिखित में से कौनसा व्यक्तित्व प्रकार मिलनसार, बहिर्मुखी एवं स्नेही है?
(1) एक्टोमोर्फिक (2) मीसोमोर्फिक
(3) एंडोमोर्फिक (4) एथलेटिक (3)

2. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है?
(a) पियाजे के अनुसार, आत्मसात्करण अनुकूलन की एक उपप्रक्रिया है।
(b) किसी वस्तु के बारे में वस्तुनिष्ठ या वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता संरक्षण कहलाती है।
(c) व्यवहारों के संगठित पैटर्न को, जिसे आसानी से दोहराया जा सके, उसे स्कीम कहा जाता है।
सही उत्तर का चयन नीचे दिये गये कूट का उपयोग करके कीजिये–
कूट–
(1) (b) तथा (c) सही हैं
(2) (a) तथा (c) सही हैं
(3) (a) तथा (b) सही हैं
(4) (a), (b) तथा (c) सही हैं (2)

3. सीखने के सकारात्मक हस्तांतरण को अधिकतम करने के लिए शिक्षक को करना होगा–
(a) चर्चा का उपयोग।
(b) सुनिश्चित करें कि सामान्य सिद्धांत समझ में आ गए हैं।
(c) अनुक्रमिक कार्यों में निपुणता।
(d) मौलिक कार्य के साथ सीमित अनुभव प्रदान करें।
(e) एकल प्रकार का उदाहरण प्रदान करें।
नीचे दिए गए कूट में से सही विकल्प का चयन करें–
कूट–
(1) (a), (b), (e) (2) (b), (c), (d)
(3) (a), (b), (c) (4) (a), (c), (d) (3)

4. ब्रूक्स एवं ब्रूक्स के अनुसार, निम्नलिखित में से कौनसा रचनावादी शिक्षक का लक्षण नहीं है?
(1) शिक्षार्थियों को ऐसे अनुभवों में संलग्न करें जो विरोधाभास दर्शाते हों।
(2) शिक्षार्थियों की स्वायत्तता को प्रोत्साहित करें और स्वीकार करें।
(3) बन्द प्रश्न पूछकर शिक्षार्थी की पृच्छा को प्रोत्साहित करें।
(4) अनुप्रयोग और प्रदर्शन के माध्यम से शिक्षार्थी की समझ का आकलन करें। (3)

5. निम्नलिखित में से कौनसा उपलब्धि अभिप्रेरणा का घटक नहीं है, जैसा कि डेविड ऑसुबेल द्वारा प्रत्यक्षित किया गया?
(1) संज्ञानात्मक आग्रह (2) आत्म–संवर्धन
(3) संबंधन (4) प्यार और अपनापन (4)

6. बाकर मेहंदी द्वारा निर्मित सृजनात्मकता के शाब्दिक उप–परीक्षण में निम्नलिखित में से कौनसे परीक्षण सम्मिलित हैं?
(a) नवीन संबंध परीक्षण (b) रेखा आकृति पूर्ति परीक्षण
(c) परिणाम परीक्षण (d) अप्रचलित उपयोग परीक्षण
सही उत्तर का चयन नीचे दिये गये कूट का उपयोग करके कीजिये–
कूट–
(1) (a), (b), (d) (2) (a), (c), (d)
(3) (b), (c), (d) (4) (a), (b), (c) (2)

7. निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प अभिवृत्ति का एक घटक नहीं है?
(1) भावात्मक घटक (2) संज्ञानात्मक घटक
(3) लम्बात्मक घटक (4) व्यवहारात्मक घटक (3)

8. निम्नलिखित में से कौनसी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की विशेषता नहीं है?
(1) सीमित मात्रा में प्रश्न पूछते हैं, यद्यपि व्यापक रुचि क्षेत्र होता है।
(2) जागरुक, सूक्ष्म अवलोकन वाले और शीघ्र प्रत्युत्तर देने वाले होते हैं।
(3) द्रुतगति से एवं सरलता से सीखते हैं।
(4) कठिन मानसिक कार्यों को कर लेते हैं। (1)

9. जब कोई बालक अपनी लापरवाही के कारण स्कूल देर से पहुँचता है, तो वह खुद को दोषी मानने के बजाय रास्ते में पड़ने वाली भीड़ को दोषी मानता है। इस प्रकार के समायोजन तंत्र को कहते हैं–
(1) बाधा निराकरण (2) औचित्य–स्थापना
(3) शोधन (4) तादात्म्य स्थापन (2)

10. निम्नलिखित में से शिक्षा मनोविज्ञान का कौनसा क्षेत्र सामाजिक प्रक्रिया के अन्तर्गत वर्गीकृत नहीं है?
(1) खेल (2) अनुकरण
(3) आत्मभाव (4) पाठ्य सहगामी क्रियाएँ (3)

1 शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)

(कक्षा की स्थितियों में शिक्षक के लिए इसका अर्थ, कार्यक्षेत्र और निहितार्थ)
(its meaning, scope and implications for teacher in classroom situations.)

शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education)

Education
↓
E + duco
(out of) (to lead forth)
(अन्दर से) (बाहर निकलना)
अर्थात् आन्तरिक को बाहर निकालना

- शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में **Education** कहा जाता है। इस शब्द की उत्पति **लैटिन भाषा के Educatum** शब्द से मानी जाती है।

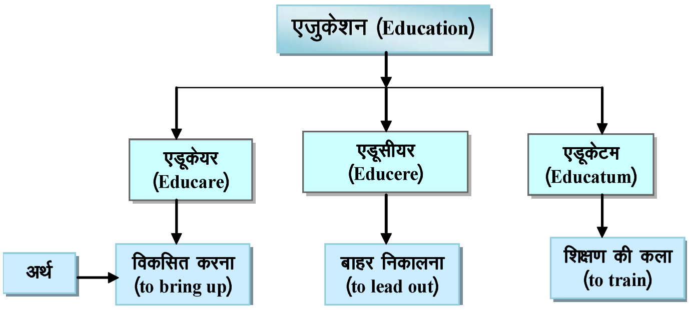

- लैटिन भाषा के "एडूकेटम" शब्द का अर्थ है "शिक्षण की कला" यदि इन तीनों शब्दों की विस्तृत रूप में चर्चा करें तो सार यही आता है कि शिक्षा का अर्थ जन्मजात शक्तियों का सर्वांगीण विकास है।

> **शिक्षा का व्यापक अर्थ–** शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता है और अनुभव करता है।

☞ "शिक्षा में चुम्बक के समान ध्रुवों का होना आवश्यक है इसलिए यह **द्विध्रुवीय** प्रक्रिया है"– रॉस

- इसमें शिक्षा के सभी पहलुओं जैसे शिक्षा के **उद्देश्यों, मूल्यांकन, शिक्षण प्रक्रिया, गतिविधि, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम,** रचनात्मक कार्य आदि को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। वर्त्तमान में **बाल केन्द्रित शिक्षा एवं शिक्षण** – प्रक्रिया को सूचारु रूप से चलाने के लिए **शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकता** जरूरी है।

☞ **ध्यान रहे** – सर्वप्रथम शिक्षा की मनोवैज्ञानिक परिभाषा देने वाले जर्मन शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी (Pestalozzi) है।

☞ "आपने शिक्षा के दो आधार या अंग बताये थे–
(i) मनोवैज्ञानिक (ii) सामाजिक"– जॉन ड्यूवी

- शिक्षा एक **द्विध्रुवीय प्रक्रिया** है– जॉन एडम्स का विचार है कि शिक्षा के दो ध्रुव होते है (i) **विद्यार्थी** (ii) **शिक्षक**।

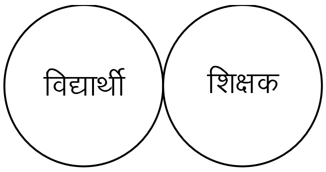

- शिक्षा **त्रिध्रुवीय प्रक्रिया** का नाम है, क्योंकि इसमें इन **तीनों** को शामिल किया जाता है– जॉन डीवी व रायबर्न

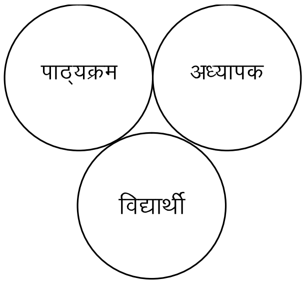

❒ शिक्षा की परिभाषा–(Definition of Education)

☞ "व्यक्ति के आंतरिक पहलू की अभिव्यक्ति शिक्षा है" – स्वामी विवेकानन्द

☞ **"शिक्षा वह हैं जो व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति है"**– रूसो

☞ "शिक्षा मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास है जिनसे वह अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रख सके और अपनी संभावनाएं पूरी कर सके"– जॉन डीवी

☞ "शिक्षा को **मनुष्य** और **समाज** का निर्माण करना चाहिये। इस कार्य को किये बिना शिक्षा **अपूर्ण** है"– डॉ राधाकृष्णन

☞ "**शिक्षा शब्द** का प्रयोग उन सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति में उसके **जीवन–काल** में होते हैं"– डगलस व हॉलेण्ड

☞ **"शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति ओर समाज दोनों के कल्याण से है"**–फ्रेडंसन

☞ "शिक्षा में वे सब प्रभाव सम्मिलित होते हैं जो व्यक्ति पर उसके **जन्म से लेकर मृत्यु तक** पड़ते हैं"– डमविल

❑ शिक्षा–मनोविज्ञान (Education Psychology)

- मनोविज्ञान को **मानव व्यवहार** का विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है। आधुनिक **मनोवैज्ञानिकों** की रुचि वैज्ञानिक उपागमों, विधियों और मूल्यों का उपयोग करते हुए अन्ततः व्यवहार सम्बन्धी **नियमों** के निर्माण में रहती है।
- **वर्तमान मनोविज्ञान के प्राथमिक उद्देश्य– व्यवहार को समझना, उसकी व्याख्या करना, उसका पूर्वानुमान लगाना और उसका नियंत्रण करना।**
- मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहार को कई भागों में **वर्गीकृत** किया है एवं उसका अध्ययन एवं विवेचन किया है जैसे **प्रत्यक्षीकरण**, **परिपक्वता**, **प्रेरणा**, **सीखना**, **संवेग**, **चिंतन**, **समायोजन**, **व्यक्तित्व** आदि।
- मनोविज्ञान एक **विधायक** (Positive) **विज्ञान है**– जिसमें व्यवहार का अध्ययन करने के लिए **वैज्ञानिक विधि का प्रयोग** किया जाता है। वैज्ञानिक विधि में किसी समस्या से सम्बन्धित विषय–सामग्री का **व्यवस्थित रूप से** अवलोकन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके सामान्य निष्कर्ष निकाले जाते हैं।
- **थॉर्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।**
- **जॉन डीवी** नामक **अमेरिकी शिक्षाशास्त्री** ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चिन्तन किया तथा शिक्षा प्रक्रिया पर **मनोवैज्ञानिक** प्रत्ययों व निष्कर्षों का अविस्मरणीय प्रभाव डाला।
- अमेरिका की **NATIONAL SOCIETY OF COLLEGE TEACHERS OF EDUCATION** ने शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

❖ शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ (Definition of Education Psychology)–

☞ "शिक्षा–मनोविज्ञान, मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है।"– **स्कीनर**

☞ "शिक्षा–मनोविज्ञान का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अन्वेषण तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु औपचारिक विधियों के उपयोग से है"– **चैपलिन**

☞ "शिक्षा–मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसका संबंध शिक्षा के सिद्धान्तों तथा समस्याओं से है– **आर.एस. रेबर**

☞ "शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य सम्बन्ध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है, जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक खोज से विशेष रूप से सम्बन्धित है"– **सारे व टेलफोर्ड**

☞ "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो विद्यालयी अधिगम की प्रकृति, दशा एवं मूल्यांकन से जुड़ी हुई है"– **आसुबेल**

☞ "मनोविज्ञान के **सिद्धान्तों** व **परिणामों का शिक्षा** के क्षेत्र में अनुप्रयोग **शिक्षा मनोविज्ञान** है"– **कॉलसेनिक**

☞ "शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के **जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक** के **सीखने के अनुभवों का वर्णन** एवं **व्याख्या** करता है"– **क्रो व क्रो**

☞ **"शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण तथा अधिगम से सम्बन्धित होती है" – स्कीनर**

☞ "शिक्षा मनोविज्ञान, **शैक्षिक परिस्थितियों** के **मनोवैज्ञानिक पक्ष** का अध्ययन है"– **ट्रो**

☞ "शिक्षा मनोविज्ञान, **शैक्षिक विकास** का **क्रमबद्ध अध्ययन** है" –**स्टीफन**

❖ शिक्षा–मनोविज्ञान के प्रमुख क्षेत्र (Major Field of Education Psychology)–

(1) मानव अभिवृद्धि एवं विकास–

(1) वंशानुक्रम एवं पर्यावरण
(2) सामान्य अभिवृद्धि एवं विकास
(3) सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास
(4) अभिप्रेरणा परम्परा आधारभूत सिद्धान्त
(5) व्यक्तिगत विभिन्नताएँ
(6) बुद्धि, अभिरुचियाँ, रुचियाँ

(2) अधिगम:

(1) अधिगम की सामान्य प्रकृति
(2) अधिगम को प्रभावित करने वाले तत्त्व
(3) अभिप्रेरणा एवं अधिगम की प्रविधियाँ
(4) कौशल
(5) तर्क एवं समस्या–समाधान
(6) दृष्टिकोण
(7) पाठशाला निश्चित स्तर का अधिगम
(8) अधिगम में अन्तरण

(3) व्यक्तित्व एवं समायोजन:

(1) संवेग (2) लोगों का मौलिक जीवन
(3) अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य
(4) विशिष्ट बालक (5) चरित्र
(6) सामाजिक प्रतिक्रिया

(4) मापन एवं मूल्यांकन:

(1) मापन के आधारभूत सिद्धान्त
(2) बुद्धि एवं अभिरुचि का मापन
(3) अधिगम का मापन (4) समायोजन का मापन
(5) मापन के परिणामों का मूल्यांकन

11. **विभेदात्मक विधि (Differential Method)**– प्रकृति में **कुछ भी एक समान नहीं** होता है। हमेशा एक–दूसरे से भिन्न बालक देखने को मिलते है यह **भिन्नता ही उसके व्यवहार को निर्देशित** करती है।
- इसी से व्यक्ति की पहचान होती है, क्योंकि कोई भी **शिक्षक** कक्षा में अध्यापन करवाता है तो **वैयक्तिक भेद काफी कठिनाई पैदा** करता है।
- यह विधि बालक के **ज्ञानात्मक, भावात्मक** एवं **क्रियात्मक** पक्ष पर बल देती है। जिससे **व्यक्तिगत भेद का पता** चल जाता है?
- **कैटल ने विभेदात्मक परीक्षण की रचना** तथा **विश्लेषण** में पर्याप्त सहयोग दिया है।

12. **मनोभौतिकी विधियाँ मनोदैहिकी विधि (Psychosomatic Method)**– इस विधि का सम्बन्ध **मन एवं शरीर की दशा** से है **मानव का व्यवहार, परिवेश**, प्रतिक्रिया आदि अनेक आवश्यकता से संचालित होता है, क्योंकि मानव व्यवहार ही भावी संसार का निर्माण करता है।

13. **सहसंबंधात्मक विधि (Co-Relation Method)**– जब किसी परिस्थिति विशेष में **अनेक बार** प्रयोगात्मक शोध नहीं हो पाता तब इसका प्रयोग किया जाता है।
- **जैसे**– (क्या तनाव से बीमारी होती है) इस प्रकार के प्रश्नों में **सहसंबंधात्मक विधि** का प्रयोग किया जाता है।

14. **प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method)**– यह विधि **वुडवर्थ** द्वारा दी गयी।
- इस विधि में प्रश्नों की बनी एक **तालिका** होती है जिसको उतरदाता **स्वयं** भरता है। प्रश्न निर्माण करने वाला एवं **उतरदात्ता** के मध्य **अप्रत्यक्ष सम्पर्क** होता है।
- इसका प्रयोग **उन क्षेत्रों** में अधिक होता जो क्षेत्र बिखरे पहाड़ी, दूर–दराज वाले हो एवं जहाँ **शोधकर्ता** आसानी से नहीं पहुँच पाये तब इसका प्रयोग होता है।

(सहगामी व अनुगामी पत्र का सम्बन्ध प्रश्नावली से है)

➢ **प्रश्नावली के प्रकार**

क. **बन्द** ख. **खुली**
ग. **चित्रित** घ. **मिश्रित**

15. **निरीक्षण विधि (Observation Method)**– प्रेक्षण **तीन प्रकार** के होते हैं।
(i) **सहभागी** (ii) **अर्द्धसहभागी** (iii) **असहभागी**
- इस विधि के **प्रतिपादक वॉटसन** है। इसे मनोविज्ञान की **दूसरी प्रमुख विधि** मानी जाती है।

❖ मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology)

1. **प्रकार्यवाद**– शिकागो संप्रदाय– हार्वेकर।
2. **संरचनावाद**– विलियम वुन्ट, टीचनर।
3. **मनोविश्लेषण वाद**– फ्रायड, जुंग, एडलर।
4. **व्यवहारवाद**– वाटसन, स्कीनर, क्लार्क, हल, टॉलमेन।
5. **गेस्टाल्टवाद**– वर्दीमर, कोफ्का, कोहलर।
6. **प्रेरकीय संप्रदाय या हार्मिक संप्रदाय या प्रयोजनमूलक संप्रदाय**– मैक्डुगल
7. **निर्मितवाद या रचनावाद संप्रदाय**– जेरोम, ब्रुनर
8. **मानवतावादी संप्रदाय**– कार्ल रोजर्स, मास्लो।
9. **वैयक्तिक संप्रदाय**– एडलर
10. **साहचर्य संप्रदाय**– एबिंगहास, एडवर्ड ली थार्नडाईक, पावलाव।
11. **क्षेत्रीय संप्रदाय**– कुर्ट लेविन।
12. **नवफ्रायडवादी संप्रदाय**– एरिक फ्रोम, करेनहार्मी, सलिवान।
13. **संज्ञानात्मक संप्रदाय**– पियाजे, ब्रुनर, मिलर, सीमन।
14. **जैविक उपागम**– डार्विन, गोल्डन, ओल्डस, स्प्रे मैंडल।

☞ ''हमारे लिये 'सम्प्रदाय' मनोवैज्ञानिकों का एक समूह है, जो एक निश्चित विचार प्रणाली रखते हैं, जिससे सब लोगों को उनके अनुसरण के लिये मार्ग संकेत दिया जाता है।''– वुडवर्थ

1. संरचनावाद या अस्तित्ववाद या अन्त:निरीक्षणवाद सम्प्रदाय (Structuralism School)

- संरचनावाद को **विलियम वुन्ट** के **शिष्य टिचनर** द्वारा अमेरिका के **कार्नेल विश्वविद्यालय** से **1892 में** प्रारम्भ किया।
- संरचनावाद के **मूल प्रवर्तक विलियम वुन्ट** ही थे जिन्होने मनोविज्ञान को **1879 में स्वतंत्र विषय** के रूप में देखा गया।
- **संरचनावाद** के अनुसार मनोविज्ञान की **विषय–वस्तु संवेदना यानि चेतन अनुभूति** थी।

➢ **टिचनर** ने **चेतना के तीन तत्व** बताये – **भाव, संवेदन** और **प्रतिमा**।

- **टिचनर** ने **अन्त: निरीक्षण** विधि को मनोविज्ञान की **प्रमुख विधि** माना है।
- यह सम्प्रदाय समूह संरचना के **माध्यम** से अध्ययन करने पर बल देता है।
- **वुन्ट** ने **चेतना के दो तत्व** बताये– **गुण** और **तीव्रता**।

✦ संरचनावाद का शिक्षा में योगदान

- इसी सम्प्रदाय ने मनोविज्ञान को **दर्शनशास्त्र से अलग** करके प्रयोगात्मक स्वरूप प्रदान किया।
- मनोविज्ञान का **स्वरूप** प्रयोगात्मक होने से शिक्षा की नयी पद्धति के बारे में **शिक्षकों में सोचने की तार्किक चेतना** उत्पन्न हुई।

- शिक्षा मनोविज्ञान के दो उद्देश्य – सामान्य एवं विशिष्ट बताये – स्किनर
- शिक्षा बाल केन्द्रित होने के कारण इसमें बालक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- अन्तःदर्शन का अर्थ अपने अन्दर देखना– टिचनर
- मनोवैज्ञानिक का स्वयं का मस्तिष्क प्रयोगशाला होता है और क्योंकि वह सदैव उसके साथ रहता है, इसलिए वह अपनी इच्छानुसार कभी भी निरीक्षण कर सकता है– रॉस
- बन्द, खुली, चित्रित एवं मिश्रित प्रकार है– प्रश्नावली
- हकलाने वाले, अपराधी प्रवृत्ति वाले बालकों की समस्याओं, पिछड़े बालकों एवं बालकों की भिन्नता को समझने में निदानात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान का मानना की बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं द्वारा किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए उपयोगी होता है।
- प्रश्नावली, अनुसूची एवं मानसिक परीक्षण जैसे वस्तुनिष्ठ उपकरण प्रकार्यवादी सम्प्रदाय के है।
- शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, मापन एवं मूल्याँकन, प्रक्रिया की कार्यप्रणाली पर जोर दिया जाता है– प्रकार्यवादी सम्प्रदाय
- अधिगम, अभिप्रेरणा एवं प्रबलन पर जोर देना विशेषता है– व्यवहारवाद
- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक के अपने विषय की अपेक्षा शिक्षार्थी के सम्बन्ध में जानना अधिक महत्त्वपूर्ण है– एडम्स
- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।
- मनोविज्ञान पशु एवं मानव के व्यवहार के अध्ययन का एक विज्ञान हैं।
- मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का विज्ञान है– हार्वेकर
- कैटल ने साहचर्य, प्रत्यक्ष ज्ञान और मनोभौतिकी पर कार्य किया।
- हीनता की भावना प्रणाली बतायी थी– एडलर
- मानसिक रोग का कारण बाल्यकाल में बनी भावना ग्रन्थियों को मानता है– फ्रायड
- हार्मिक का अभिप्राय होता है– प्रेरक
- शिक्षा मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता देना।
- सर्वप्रथम पेस्टालॉजी ने शिक्षा की मनोवैज्ञानिक परिभाषा दी थी।
- शिक्षा मनोविज्ञान में खेल–कूद, मित्रता, अनुकरण, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ और विभिन्न गतिविधियाँ सामाजिक प्रक्रिया के अन्तर्गत आती है।
- किसके सहभागी, अर्द्धसहभागी व असहभागी प्रकार बताये गये – अवलोकन

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. शिक्षार्थियों के समस्या–समाधान कौशलों को उन्नत करने के लिए शिक्षकों को .... को प्रोत्साहित करना चाहिए और शिक्षार्थियों के बीच .... चिंतन को बढ़ावा देना चाहिए। (CTET L-2 15-12-2024)
(1) कार्यात्मक स्थिरता; अपसारी
(2) साधन–अंत विश्लेषण; अभिसारी
(3) मौखिककरण; सादृश्यात्मक (4) विश्वासदृढ़ता; पारस्परिक (3)

2. नई अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौनसी प्रभावी रणनीतियाँ हैं? (CTET L-2 14-12-2024)
(i) उदाहरण प्रस्तुत करना।
(ii) गैर–उदाहरण प्रस्तुत करना।
(iii) अवधारणाओं के बीच संबंधों के बारे में सोच को बढ़ावा देना।
(iv) एक परिभाषा देना और छात्रों को इसे याद करने के लिए प्रोत्साहित करना।
(1) (i), (ii) (2) (i), (iii)
(3) (i), (ii), (iii) (4) (iii), (iv), (i) (3)

3. मनोविज्ञान का कौन सा क्षेत्र मुख्य रूप से कक्षा में शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन पर केंद्रित है? (संस्कृत विभाग स्कूल व्याख्याता (हिन्दी) 2024)
(1) विकासात्मक मनोविज्ञान (2) शिक्षा मनोविज्ञान
(3) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (4) नैदानिक मनोविज्ञान (2)

4. निम्नलिखित में से कौन से क्षेत्र शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्रों में सम्मिलित हैं?
(संस्कृत विभाग स्कूल व्याख्याता (हिन्दी) 2024)
(a) विकास (b) अपवादात्मक बालक
(c) अधिगम प्रक्रिया (d) वैयक्तिक विभिन्नता
सही कूट का चयन कीजिए–
(1) (a) एवं (c) (2) (a), (b) एवं (c)
(3) (a), (b), (c) एवं (d) (4) (a) एवं (b) (3)

5. ''शिक्षा मनोविज्ञान विद्यालय अधिगम तथा उसके समस्त पहलुओं का अध्ययन है''– यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई है? (संस्कृत विभाग स्कूल व्याख्याता (हिन्दी) 2024)
(1) केरोल (2) कॉलसेनिक
(3) क्रॉ एण्ड क्रॉ (4) पील (1)

6. ''शैक्षिक मनोविज्ञान किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।'' यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई? (PTI IInd Grade G.K. 2023)
(1) क्रो एण्ड क्रो (2) पील
(3) क्राउडर (4) स्कीनर (1)

2 शिक्षार्थी का विकास (Development of Learner)

(वृद्धि और विकास की अवधारणा, शारीरिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास)

(Concept of growth and development, physical, emotional, cognitive, moral and social development)

- बाल मनोविज्ञान (**Child Psychology**) वह **समर्थक** या **विद्यायक** विज्ञान है जो बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के विभिन्न **पहलुओं का अध्ययन जन्म से परिपक्वता** तक करता है
- जन्म के समय कौनसी **शारीरिक** एवं **मानसिक शक्तियाँ** मौजूद रहती है और धीरे–धीरे उनका विकास किस प्रकार होता है। यह आधुनिक युग में बाल विकास (Child Development) के नाम से जाना जाता है।
- कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा इसे **विकासात्मक मनोविज्ञान** कहा है क्योंकि **इसमें विकास का अध्ययन किया जाता** है।
- विज्ञान **दो तरह** का होता है। एक **आदर्शक विज्ञान** एवं **दूसरा विद्यायक विज्ञान**। अतः आदर्श विज्ञान में चाहिये से सम्बन्धी अध्ययन के **साथ–साथ, सौन्दर्य विज्ञान, आचार विज्ञान का अध्ययन** जबकि **विधायक विज्ञान** में जो है **वह वास्तविक** है। अतः **वास्तविकता का अध्ययन** किया जाता है। इसलिये कुछ विद्वानों द्वारा इसको **वर्णनात्मक विज्ञान** का नाम दिया जाता है।
- बाल विकास में **बच्चों के व्यक्तित्व, खेलकूद, भाषा, सवेंग, भाव, प्रत्यक्षीकरण** आदि का अध्ययन किया जाता कि इनका **विकास कब** और **कैसे** हुआ है।
- **प्लेटों ने** अपनी पुस्तक Republic में इस तथ्य को स्वीकार किया की **बाल्यावस्था के प्रशिक्षण का प्रभाव** बालक के **व्यावसायिक दक्षता पर अनिवार्य** देखा जाता है।
- अन्य मनोवैज्ञानिकों का वर्गीकरण निम्न देखा जा सकता है। जैसे– **टाइडमैन, पैस्टॉलाजी एवं स्टेनली हॉल** आदि द्वारा दिया गया।

❒ बाल मनोविज्ञान का इतिहास

- सुजननशास्त्र के पिता गाल्टन (फ्रांसीसी) को माना जाता है।

1. **कॉमेनियस–**
- 1628– **School of infancy** की स्थापना की
- 1657– **दो पुस्तकों** की रचना की
  - (i) **प्राथमिक शिक्षा**
  - (ii) **पाठ्यसामग्री को चित्रों के माध्यम से रोचक करना।**

2. **पेस्टालॉजी–**
- 1774 – **Baby Biography** पर आधारित बाल विकास का **सर्वप्रथम वैज्ञानिक विवरण** प्रस्तुत किया
- **स्वयं के** 3½ **वर्ष के बालक पर परीक्षण** किया।

3. **टाइडमैन–** 1787 में **Baby Biography** पर बाल विकास का **शारीरिक** एवं **मानसिक** विवरण प्रकाशित किया।
4. **टैने–** 1869 में Infant child development पुस्तक लिखी।
5. **डार्विन–** 1877 में **Biographical sketch of an Infant** पुस्तक लिखी।
6. **प्रेयर–** **1881** में the mind of the child पुस्तक लिखी।
- **स्वयं के बच्चे की जन्म से** 3½ **वर्ष** तक की Biography तैयार की।

7. **गैसेल–** 1928 में **दो पुस्तकों** की रचना की–
   - **infancy of Human growth**
   - **guidance of mental growth**
8. **जीन पियाजे–** निम्न पुस्तकें
   - **Child conception of the world**
   - **Language and thought of the child**
   - **Moral Judgement of child.**

- अमेरिका में **बाल अध्ययन आन्दोलन** चला यहाँ **स्टेनले हॉल** ने **बाल अध्ययन समिति** (Child study society) व **बाल कल्याण समिति** (Child welfare organisations) की स्थापना की, साथ ही पत्रिका प्रकाशित की थी– Pedagogical seminary
- इंग्लैण्ड में **सली** ने British Association for child study की स्थापना की।
- **न्यूयॉर्क में** 1887 में **बालगृह** की स्थापना हुई।
- **मिलर व डोलार्ड** ने – **Social Learning and Intation.** अधिगम **सिद्धान्त** का प्रतिपादन किया।
- **भारत में** बाल मनोविज्ञान सम्बन्धी अध्ययन का प्रारम्भ 1930 में हुआ, इसका **सर्वाधिक प्रयोग व्यक्तित्व** एवं **मापन के क्षेत्र** में हुआ था। (ताराबाई मोडेक द्वारा किया गया था।)
- भारत में **गिजु भाई बाधेका ने माण्टेसरी** से प्रभावित होकर **सन्** 1920–1930 **में बाल मन्दिर संस्था** (गुजरात) में स्थापित की।
- **स्टेनली हॉल** द्वारा **सबसे पहले प्रश्नावली विधि** का प्रयोग बाल विकास संबंधी अध्ययन के लिए किया था।

✦ विकास क्रम में होने वाले परिवर्तन– हरलॉक (Changes in Development Steps)

(i) **आकार परिवर्तन**– जन्म के बाद **ज्यों–ज्यों बालक की आयु बढ़ती** जाती है, उसके **शरीर में परिवर्तन** होता जाता है। ये परिवर्तन बाह्य एवं आंतरिक **दोनों अवयवों** में होते है।

- **आंतरिक अंग जैसे**– हृदय, मस्तिष्क, उदर फेफड़ा आदि का आकार बढ़ना।
- न केवल **शारीरिक** परिवर्तन बल्कि साथ–साथ **मानसिक परिवर्तन** भी होते रहते हैं।

(ii) **अंग–प्रत्ययों के अनुपात में परिवर्तन**– बालक एवं वयस्क के **अंग प्रत्यंगों में एक अन्तर** होता है। बाल्यावस्था में **हाथ–पैर की अपेक्षा सिर बड़ा होता** परन्तु किशोरावस्था आने पर यह अनुपात वयस्कों के समान होता है।

(iii) **कुछ चिन्हों का लोप**– विकास के साथ ही **थाइमस ग्रंथि, दूध के दांत** आदि का लोप हो जाता है साथ ही **बाल क्रियाओं** एवं **क्रिड़ाओं** को त्याग देता है।

(iv) **नवीन चिन्हों का उदय**– आयु में वृद्धि के साथ–साथ बालक में अनेक **नवीन एवं शारीरिक, मानसिक** चिन्ह प्रकट होते रहते हैं।

- **जैसे**– दाँतों का आना, **लैंगिक चेतना का विकास**, किशोरावस्था में **दाढ़ी एवं गुप्तांगों** पर बाल उगने प्रारम्भ हो जाते हैं।

अभिवृद्धि एवं विकास में अन्तर (Difference between growth and development)

अभिवृद्धि	विकास
अभिवृद्धि एक **बाह्य** परिवर्तन है	यह **आन्तरिक** परिवर्तन है।
अभिवृद्धि एक **संकुचित प्रक्रिया** है	यह व्यापक प्रक्रिया है।
कुछ समय के बाद रूक जाती है	जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
निश्चित दिशा **नहीं** होती	इसकी निश्चित दिशा होती है
केवल परिपक्वावस्था तक	**जीवन पर्यन्त तक है।**
अभिवृद्धि शारीरिक अंगों में होने वाला परिवर्तन है	सार्वभौमिक परिवर्तन है।
अभिवृद्धि एक **मात्रात्मक** है	**मात्रात्मक एवं गुणात्मक है।**
अभिवृद्धि में समन्वय होना आवश्यक नहीं है	यह समन्वित एवं संकलित होता है।
अभिवृद्धि का मापन किया जाता है	इतनी सीधी–सीधी प्रक्रिया नहीं है।
वृद्धि होने से **विकास** हो भी सकता और **नहीं** भी	**विकास, वृद्धि** के बिना भी **सम्भव** है।
अभिवृद्धि **एकीकृत** नहीं होती है	यह **संगठित** होता है।

अभिवृद्धि एवं विकास के सिद्धान्त (Principles of growth and development)

☞ "जब बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है, तब हम उसमें **कुछ परिवर्तन** देखते हैं"– **गैरिसन**

1. **निरन्तर विकास का सिद्धान्त**– गति कभी **तीव्र कभी कम** होती है। जैसे **प्रथम तीन वर्षों में शारीरिक क्रिया तीव्र** होती **बाद में मन्द पड़** जाती है, निरन्तर यह प्रक्रिया चलती रहती है क्योंकि आकस्मिक **कोई परिवर्तन नहीं** होता है।

☞ "**विकास प्रक्रियाओं की निरन्तरता का सिद्धान्त** है इसमें केवल इस तथ्य पर बल देता है कि व्यक्ति में **कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता** है"– **स्कीनर**

2. **मस्तकॉधोमुखी का सिद्धान्त (Cephalocaudal)**– विकास **सिर से प्रारम्भ होकर पैरों की ओर** जाता है अर्थात् यह ऊपर से नीचे की ओर चलता है।

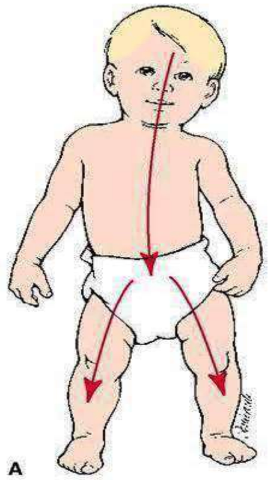

- जैसे **गर्दन** एवं **मुंह** की प्रक्रियायें सबसे पहले होती है। फिर **पेट** एवं **धड़** और **बाद में पैरों के क्षेत्रों में क्रियायें** विकसित होती है। अतः **शिशुओं में संवेदना** का विकास **सबसे पहले शरीर के उपरी भागों से प्रारम्भ** होता है।

3. **निकट से दूर का सिद्धान्त (Proximodistal)**– इसके अनुसार **विकास का क्रम केन्द्र से प्रारम्भ** होता है, फिर **बाहरी विकास** होता है। इसके बाद **सम्पूर्ण विकास, पहले रीढ़ की हड्डी का विकास** उसके बाद में **भुजाओं, हाथ** एवं **हाथ की उँगलियों का बाद** में इनका **संयुक्त विकास** होता है।

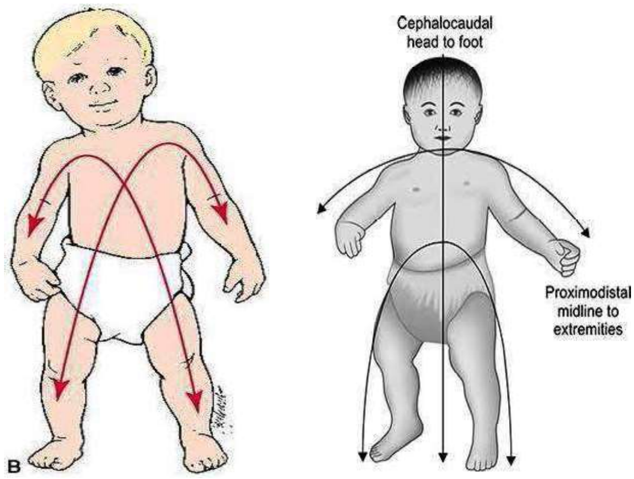

26. भाषा एवं विकास का काल
27. परिस्थितिजन्य परिवर्तन में रुचि–

☞ "बालक अपने को **अति विशाल संसार** में पाता है और इसके विषय अविलम्ब ज्ञान प्राप्त करना चाहता है"– स्ट्रेंग

☞ "बाल्यावस्था के बारे में बताया की **छः, सात एवं आठ वर्ष** के **बच्चों में अच्छे–बुरे का ज्ञान, न्यायपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी** और **सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास** होने लगता है।"– स्ट्रेंग

28. भावना ग्रन्थियाँ (इलेक्ट्रा व ऑडिपस) के **निर्माण का काल**।
29. **तार्किक** एवं **वैज्ञानिक कार्यों** में रुचि का काल।

✦ पूर्व बाल्यावस्था का परिचय (Introduction of Pre Childhood)–

1. खिलौनों की आयु (Toy Age)
2. **कब, क्यूँ, कैसे, कहाँ, क्या** जैसे प्रश्न करने की अवस्था
3. पूर्व टोली एवं पूर्व विद्यालय की अवस्था (Pre Gang Age and Pre School Age)
4. बच्चा अकेला खेलता है, कुछ समय तक वह खिलौनों से खेलता है, लेकिन अधिक समय तक नहीं खेलता है।
5. कुछ मनोवैज्ञानिक इस अवस्था को **'अन्वेषणात्मक या खोज'** आयु (Exploratory Age) के नाम से पुकारते हैं।
6. इस अवस्था में बालक दूसरों का अनुकरण अधिक करता है इसलिए इसे 'अनुकरण की अवस्था' भी कहा जाता है।
7. इस अवस्था में बालक में जिज्ञासा प्रवृत्ति अधिक होती है।
8. इस अवस्था को माता–पिता के आधार पर 'समस्या की अवस्था' भी कहा जाता है।

✦ बाल्यावस्था के बारे में अतिमहत्त्वपूर्ण तथ्य–

➢ बाल्यावस्था में **बालक काल्पनिक जगत** का परित्याग करके वास्तविक जगत में प्रवेश करता है।

➢ बाल्यावस्था में बालक का व्यक्तित्व बहिर्मुखी हो जाता है।

➢ बाल्यास्था के **बालक–बालिकाओं** में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत कम पाई जाती है।

➢ बाल्यावस्था को **संवेगात्मक विकास का अनोखा काल** माना है।

➢ किलपैट्रिक ने बाल्यावस्था को "**प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण**" का काल माना है।

➢ बाल्यावस्था में नैतिक शिक्षा का भी विशेष महत्त्व होता है।

➢ बाल्यावस्था के बालक भयमुक्त रहते हैं, इस अवस्था के बालकों में **सबसे कम कामुकता** पाई जाती है, सृजनशीलता के गुण एवं खेल की आयु एवं सारस अवस्था इत्यादि गुणों से परिपूर्ण होते हैं।

➢ केरेन हॉर्नी **ने इसे मूल दुश्चिंता की अवस्था कहा है।**

➢ सैले के अनुसार– बाल्यावस्था का काल **6–12 वर्ष तक** का होता है।

➢ जोन्स के अनुसार– बाल्यावस्था **7 से 12 वर्ष** तक।

➢ नये कौशलों एवं क्षमताओं का विकास। **वृद्धि का स्वर्णिम काल** बाल्यकाल को माना जाता है।

➢ बालकों को **रचनात्मक** कार्य करने में **सर्वाधिक आनन्द** की प्राप्ति होती है।

➢ बाल्यावस्था में **बालकों में संग्रह करने की प्रवृत्ति** पाई जाती है, अर्थात् बालक विशेष रूप से **काँच की गोलियों, रेल व बस टिकट, सिक्कों, मशीन के भागों** और **पत्थर के टुकड़ों का संचय** करते हैं।

➢ बाल्यावस्था के बालक की रुचियों में **विभिन्नता और परिवर्तनशीलता** होती है।

➢ बालक के संवेगों का **दमन नहीं** किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उसमें भावना ग्रन्थियों का निर्माण हो जाता है।

➢ बाल्यावस्था पूरे जीवन का दर्पण है, जिसमें **भूत, वर्तमान एवं भविष्य का प्रतिबिम्ब** दिखाई देता है।

➢ बाल्यावस्था में बालक का **मानसिक विकास उसके माता–पिता एवं शिक्षकों पर भी निर्भर** करता है।

➢ **12वें वर्ष में बालक में तर्क** और **समस्या–समाधान की** शक्ति का अधिक विकास हो जाता है। बालक विद्यालय में किसी न किसी **टोली** अथवा **समूह** का सदस्य बन जाता है।

➢ पूर्व बाल्यावस्था को **खिलौनों की आयु** कहा जाता है।

➢ उत्तर–बाल्यावस्था को **कुरुपता की आयु** भी कहा जाता है।

➢ बाल्यावस्था में **लड़कों में ऑडीपस** और **लड़कियों में इलेक्ट्रा ग्रन्थि विकसित** होने लगती है।

➢ उत्तर–बाल्यावस्था में **दिवास्वप्न के द्वारा बालक अति आनन्दित** होते हैं।

➢ **कुसमायोजित बालक** दिवास्वप्न अधिक **देखते** हैं।

(A) बाल्यावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development of Childhood)

1. लम्बाई– बाल्यावस्था के प्रारम्भ तक **101 cm** होती है। जबकि यह लम्बाई **बाल्यावस्था के** अन्त तक **140 cm** तक हो जाती है।

● प्रारम्भ के वर्षों में **लड़कों की लम्बाई अधिक** होती है, लेकिन **10–11 वर्ष में लड़कियों की लम्बाई अधिक** हो जाती है।

2. वजन– बाल्यावस्था के **प्रारम्भ में 16 kg** जबकि **अंत तक यह 28 kg** हो जाता है।

● बाल्यावस्था में **वजन में वृद्धि** होती है **9–10 वर्ष की आयु** तक **बालकों का भार बालिकाओं के भार से अधिक** होता है।

- जैसे– उग्र ज्वर और भूख में क्रोधित होना।

2. डार्विन का सिद्धान्त– माना कि **क्रोध के समय** अथवा अन्य किसी संवेग की अभिव्यक्ति के समय हम जो **शारीरिक क्रियाएँ** जैसे **क्रोध में दाँत पीसना** आदि यह सब हमारे पूर्वजों द्वारा किये गये कार्य निहित है।

3. थियोटर पिदरिट का विचार– बताया की हम **दुर्गन्ध के निकट** होते हैं तो हमारी नाक, स्वतः सिकुड़ जाती है। इसके विपरीत जब हम **स्वादिष्ट पदार्थ सेवन** करते तब हम **स्वतः अपनी जीभ से होंठ चाटने** लगते हैं। यह सुखदायक व दुखदायक अनुभव के साथ शारीरिक परिवर्तन घटित होते हैं।

भावना व संवेग में अन्तर

- भावना– इसमें **व्यापकता** होती है और प्रभाव भी व्यापक होते हैं। इसका किसी वस्तु या परिस्थिति से विशेष सम्बन्ध नहीं होता है।
- संवेग– **तीव्रता** होती है। इसका सम्बन्ध **व्यक्ति विशेष वस्तु या परिस्थिति** से होता है।

> **नोट**– भावना, संवेगों की उत्पत्ति के लिए बड़ी आवश्यक है, भावना की भूमि में ही **संवेगों का विकास** होता है इसलिए वुडवर्थ ने भावना की उतेजित दशा को सवेंग कहा है।

मैक्डुगल का वृतात्मक या मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त

- विलियम मैक्डुगल द्वारा बताए गए 14 मूल प्रवृत्ति एवं संवेग–

क्र. सं.	मूल–प्रवृत्ति (Instinct)	संवेग (Emotion)
1.	युयुतसा या लड़ने की प्रवृत्ति (Combat)	क्रोध (Anger)
2.	आत्महीनता या दैन्य की प्रवृत्ति (Submission)	आत्महीनता (Negative Self Feeling)
3.	आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति (Assertion)	आत्माभिमान (Positive Self Feeling)
4.	अर्जन या संग्रह करने की प्रवृत्ति (Acquisition)	अधिकार भावना (Ownership)
5.	आत्म रक्षा या पलायन की प्रवृत्ति (Escape)	भय (Fear)
6.	काम की प्रवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)
7.	कौतूहल या उत्सुकता की प्रवृत्ति (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
8.	विकर्षण या अस्वीकार करने की प्रवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disttrust)
9.	भोजन खोजने की प्रवृत्ति (Food Seeking)	भूख (Hunger)
10.	विनय या शरण में जाने की प्रवृत्ति (Appeal)	करुणा (Distress)
11.	हँसने की प्रवृत्ति (Laughter)	आमोद (Amusement)
12.	रचना या सृजन करने की प्रवृत्ति (Construction)	कृतिभाव (Creation)
13.	पैतृक या प्रभावित करने की प्रवृत्ति (Parental)	वात्सल्य (Tenderness)
14.	समूहिकता (Gregoriousness)	एकाकीपन (Loneliness)

संवेगों पर किये गये परीक्षण

1. शैशवावस्था में संवेगात्मक अभिव्यक्ति –

- गुडनबर्ग– आपने **10 माह तक** के बालकों पर शोध करके पाया जिसमें उन्होंने **कई चित्र** लिए और शोधकर्ता उन विभिन्न परिस्थिति का पता लगाना चाहे जो चित्र लिया गया **मगर** उतना समझ नहीं पाये।
- गेट्स– आपने **छोटे शिशु की जगह प्रोढ़ों का चित्र** लिया क्योंकि प्रौढ व्यक्तियों की मुख्य मुद्रा को पहचानना सरल है।
- गेट्स– शिशु के **जन्म उपरान्त कुछ एक माह तक उसके मुख पर जो मुस्कान प्रतिक्रिया–स्वरूप देखने** को मिलती है, वह समय पाकर हँसी में बदल जाती है।

आलोचना–

- वॉटसन द्वारा– बताया की **शिशु को तेज आवाज या गिरने की सम्भावना से भय और कष्ट, बाधा से क्रोध, प्यार से बोलने पर प्रेम का अनुभव** होता है, जबकि इन सभी को मैक्डुगल जन्मजात मानते जो की गलत है।
- **वॉटसन** ने नवजात शिशुओं के नियमित निरीक्षण द्वारा ज्ञान किया कि नवजात शिशुओं में **सहज क्रियाओं की ही प्रमुखता** होती है। छींकना एवं चूसना भी एक सहज क्रिया है।
- फ्रायड द्वारा– आपने **मैक्डुगल की वृतियों को कोई स्थान प्रदान नहीं** किया आपने मानव में **दो प्रेरक शक्तियाँ** बतायी मृत्युवृत्ति व जीवन वृत्ति को स्वीकार किया है।

जीवन वृत्ति	मृत्यु वृत्ति
Life urges	**death urges**
सुख, प्रसन्नता, प्रेम, सहानुभूति, रचना प्रमूख है।	विनाश, क्रोध, मोह, काम, लोभ, घृणा, दुःख।

- एडलर का मत– आप **फ्रायड के शिष्य** थे एवं आपने मनुष्य के सम्पूर्ण व्यवहार के पीछे केवल एक ''प्रेरणादायक शक्ति'' को कार्य करते हुए बताया है इस शक्ति को आपने **''हीन भावना''** (Inferiority Feeling) के नाम से सम्बोधित किया था।

वन लाइनर अति महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी

- गिरोह अवस्था– उत्तर–बाल्यावस्था जो **5–6 वर्ष लेकर 10–12 वर्ष तक** रहती है तथा जिसमें **बच्चों** में अपने गिरोह या समूह के अन्य सदस्यों द्वारा **स्वीकृत** किया जाना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।
- पूर्व बाल्यावस्था के लिए विकासात्मक कार्य– विद्यालय जाने से पूर्व की अवस्था यानी **10 वर्ष से पहले की अवस्था** है जिसके विकासात्मक कार्य निम्न है–
- चलना एवं बोलना सीखना
- ठोस आहार लेना सीखना

3 अधिगम (Learning)

(इसका अर्थ और प्रकार, सीखने के विभिन्न सिद्धान्त और शिक्षक के लिए निहितार्थ, सीखने का स्थानांतरण, सीखने को प्रभावित करने वाले कारक, रचनावादी अधिगम)
(its meaning and types, different theories of learning and implications for a teacher, transfer of learning, factors affecting learning, constructivist learning)

❒ अधिगम का अर्थ (Meaning of Learning)

- सीखना एक विस्तृत एवं सतत् प्रक्रिया है। अधिगम शब्द का प्रयोग परिणाम एवं प्रक्रिया दोनों रूप में होता है।
- जब व्यक्ति अपनी पुरानी **आदतों** के परे अपने कार्यों को नवीन आदतों द्वारा आरम्भ करने लगता है तब माना जाता कि **व्यक्ति ने अपने व्यवहार में परिवर्तन** कर लिया है।
- सामान्यतः **प्रशिक्षण, अनुभव, कार्यप्रणाली, निरन्तरता** द्वारा जो सीखा जाता वह स्थायी माना गया है। समस्त जीवन में **बदलाव लाने की विशेषता से ही अधिगम की संकल्पना** को व्यापक माना गया है।

- अधिगम एक व्यापक धारणा है यह जन्म से लेकर अन्त तक चलती रहती है। **शैशवावस्था से ही बच्चा निरन्तर नये कौशल सीखते** रहते हैं। नयी सूचनाएं धारण करते हैं। यह औपचारिक या अनौपचारिक किसी भी प्रकार की होती है।
- **उदाहरण**– जब बच्चा **गर्म दुध** या **पानी** या **आग को छू** लेता है तब वह **दुबारा ध्यान** रखता है।
- **प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय व्यवहार** में जो कुछ परिवर्तन होते रहते हैं वह **अधिगम** है।

- अधिगम के अन्तर्गत **मनोवैज्ञानिक** एक वैज्ञानिक के रूप में स्पष्ट रूप से प्रमाणित और विस्तृत तथ्यों पर आधारित परिस्थितियों में **काम करना** चाहता है।
- वह जिस किसी के लिए भी तथ्य जुटाता है, उन्हें वह **बहुत ध्यानपूर्वक प्रमाणित** करता है। अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और **आम प्रचलित प्रक्रिया** है। जन्म के तुरन्त बाद ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और फिर **जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता ही रहता** है।
- सामान्यतः सीखना व्यवहार में परिवर्तन है परन्तु **सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को अधिगम नहीं कहा** जा सकता है।

✦ अधिगम की परिभाषाएँ (Definitions of Learning)

☞ ''व्यवहार में कोई भी परिवर्तन जो व्यक्ति के अनुभवों का फल हो और जो भावी परिस्थितियों का सामना करने में अलग प्रकार से सहायक हो, अधिगम कहलाता है।''– ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन

☞ ''अधिगम, अनुभव के परिणामस्वरूप **व्यवहार में परिवर्तन व्यक्त** करता है''– क्रॉनबेक

☞ ''अधिगम उपयुक्त अनुक्रिया का चयन करना व उसे **उद्दीपन से जोड़ना** है''– थॉर्नडाइक

☞ ''अधिगम अनुभव के परिणामस्वरूप **प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन** है, जो **कम–से–कम** कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है''– मॉर्गन, गिलीलैण्ड

☞ ''**सीखना, विकास की प्रक्रिया है**''– वुडवर्थ

☞ ''सीखना, व्यवहार में उतरोतर सामजंस्य की प्रक्रिया है''– स्कीनर

☞ ''सीखना, आदतों, ज्ञान एवं अभिवृतियों का योग है''– क्रो व क्रो

☞ ''अधिगम, **अनुभव एवं प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन** है''– गेट्स

☞ ''व्यवहार के कारण **व्यवहार में परिवर्तन** अधिगम है''– गिलफोर्ड

☞ ''नवीन परिस्थितियों में **अपने आप को अनुकूलित करना** ही अधिगम है''– हिलगार्ड

☞ ''अनुकूलित क्रिया के **परिणामस्वरूप** आदत का निर्माण ही अधिगम है''– पॉवलव

☞ ''**पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा सुधार अधिगम है**''– कॉलविन

☞ ''वातावरण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी परिवर्तन अधिगम है''– मर्फी

☞ ''किसी **जीवित प्राणी के व्यवहार में एक स्थायी परिवर्तन** है। जो उसे **वंशानुक्रमीय विरासत के रूप में प्राप्त नहीं** होता बल्कि **व्यवहार, प्रत्यक्षीकरण, अभिप्रेरणा** द्वारा होता है''– बिग्गी

☞ ''नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, **सीखने की प्रक्रिया** है''– वुडवर्थ

☞ ''अधिगम एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा **आदतें, ज्ञान** और **अभिवृत्तियों को अर्जित** करता है। जिसमें सामान्य जीवन की मांगों की पूर्ति के लिए आवश्यक है''– बॉज

☞ ''अधिगम, **व्यवहार में सापेक्षिक स्थायी परिवर्तन** है, जो कि **अभ्यास के कारण घटित** होता है''– मेकगॉ

☞ ''अधिगम को मनोवैज्ञानिक कृत्यों एवं प्राणी की विशेषताओं की **कृमिक संशोधन प्रक्रिया** कहा जाता है। अतः यह आन्तरिक एवं बाह्य कारणों द्वारा निर्धारित होती है और यह समायोजन तथा अनुकूलीकरण की ओर संकेत करती है''– एलेक्जेण्डर

- मछली की गंध बिल्ली को काफी अभिप्रेरित कर रही थी एवं **मछली** हर सम्भव बाहर आने का प्रयास करती है एवं **बिल्ली** हरसंभव यह प्रयास करती कि उसके **पंजे** से यह **पिंजरा** खुल जाये एवं बाहर आकर वह **मछली** को प्राप्त कर ले। **संयोगवश** उसका पैर पिंजरा के लीवर पर पड़ जाता है एवं वह बाहर आ जाती है।

- उपरोक्त प्रयोग का **विश्लेषण** करने पर इसमें निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं–
  (i) प्रारम्भ में व्यर्थ प्रयास हुए।
  (ii) **संयोगवश सही अनुक्रिया हुई**
  (iii) प्रत्येक प्रयत्न में धीरे–धीरे अनुक्रिया सही होने लगी।

➢ **थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त** में तीन महत्त्वपूर्ण तत्व हैं–
(1) उद्दीपक तत्व **(Stimulus Elements)**– यह **पर्यावरण आधारित घटना।**
(2) अनुक्रिया तत्व **(Response Elements)**– व्यवहारगत **क्रिया।**
(3) सम्बन्ध या बॉण्ड **(Connection of Bond)**– प्रत्येक उद्दीपक को उससे सम्बन्धित अनुक्रिया से संयोजित करता है।

➢ **नोट**– यह प्रयोग **अनेक बार** किया गया था तभी बाद वाले प्रयोग में पहले की अपेक्षा कम समय लगता है।

➢ सिद्धान्त में निम्न सोपान–

(i) चालक	(ii) लक्ष्य
(iii) लक्ष्य प्राप्ति में बाधा	(iv) उल्टे–सीधे प्रयत्न
(v) संयोगवश सफलता	(vi) स्थिरता

❒ उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत की शिक्षा में उपयोगिता या महत्त्व

1. गणित, विज्ञान, भाषा आदि सीखने में भी करके **सीखने** का महत्त्व है।
2. प्रयोगात्मक विधि, **प्रोजेक्ट सिद्धान्त इसी पर आधारित है।**
3. नये पाठ या नयी क्रिया को सीखने से पहले **छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना** चाहिये।
4. शिक्षक अध्यापन के दौरान **पुनरावृत्ति, अभ्यास कार्य प्रशंसा** एवं **पुरस्कार की सहायता से अभिप्रेरित** करना चाहिये।
5. पूर्व ज्ञान एवं अनुभव का समुचित प्रयोग किया जाना चाहिये।
6. **करके सीखने पर बल।**
7. मन्द बुद्धि बालकों के लिए उपयोगी
8. **क्रमिक रूप** से सीखने पर बल देता है अर्थात् सरल से जटिल की ओर जाना।
9. **धैर्य एवं परिश्रम के गुणों** का विकास होता है।
10. प्रेरणा पर आधारित सिद्धान्त।
11. यह सिद्धांत बालकों में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास करता है।

☞ ''गणित, विज्ञान तथा **समाजशास्त्र** जैसे गम्भीर चिन्तन वाले विषयों को सीखने में उपयोगी है''– क्रो व क्रो

☞ ''यह सिद्धान्त **समस्या समाधान पर अधिक बल** देता है''– गैरिसन

☞ **''पढ़ना, लिखना, गणित सीखाने में यह सिद्धान्त काफी उपयोगी''**– कॉलसेनिक

❖ सीखने या अधिगम के प्रमुख नियम– थॉर्नडाइक

- **शॉर्टट्रिक (PTA + BAMCA)**

(A) मुख्य नियम	(B) गौण नियम
1. प्रभाव का नियम	1. बहु–प्रतिक्रिया का नियम
2. तत्परता का नियम	2. अभिवृत्ति का नियम या मनोवृत्ति
3. अभ्यास का नियम	3. आत्मीकरण का नियम
	4. साहचर्य का नियम
	5. आंशिक क्रिया का नियम

(A) मुख्य नियम (Primary Law)–

1. प्रभाव का नियम **(Law of Effect)**– यह नियम सीखने की प्रक्रिया में पुरस्कार एवं दंड के महत्त्व को प्रकाश में लाता है। जब **बालक को पुरस्कार दिया** जाता तब वह कार्य करने को तैयार हो जाता एवं दण्ड देने पर उसके प्रति अरुचि पैदा होती है।

- इसे **परिणाम का/पुरस्कार व दण्ड/** सुख व दुख का सिद्धान्त भी कहते हैं।
- प्राणी हमेशा **सन्तोष प्रदान करने वाली अनुक्रिया को अपना** लेता है तथा **असन्तोष प्रदान करने वाली अनुक्रियाओं का परित्याग कर** देता है। पुरस्कार और सुख मिलने वाले कार्य में निरन्तरता रहती है।

☞ **''जितना बड़ा पुरस्कार उतनी बड़ी प्रेरणा** तथा **जितनी बड़ी प्रेरणा, उतना ही सुनिश्चित** और **तीव्र अधिगम** होता है।''– बोंरिग

✦ अन्तःदृष्टि सिद्धांत को प्रभावित करने वाले कारक –
1. प्रयास व भूल (Trial and Error)
2. अधिगम परिस्थिति (Learning Situation)
3. अनुभव (Experience)
4. समस्या की संरचना (Structure of Problem)
5. अभ्यास एवं सामान्यीकरण (Repetition and Generalization)
6. बुद्धि (Intelligence)
7. प्रत्यक्षीकरण (Perception)

➢ वर्दीमर ने प्रत्यक्षीकरण के 5 नियम बताए हैं–
1. समग्रता का नियम (**Law of Completeness**)– अधिगम तब समग्र होगा जब उसमें नियमितता, स्थायीत्व एवं सरलता जैसे तत्वों का होना आवश्यक है।
2. समानता का नियम (**Law of Assimilation**)– समान वस्तुएँ आपस में मिलकर एक नवीनता का निर्माण कर लेती है।
3. समीपता का नियम (**Law of Proximity**)– कोई भी निकट में रखी हुई वस्तु एक नई वस्तु का निर्माण कर लेती है।
4. समापन का नियम (**Law of Closure**)– किसी समग्र का एक पूरक भाग स्वतंत्र इकाई के रूप में होता है।
5. निरतंरता का नियम (**Law of Continuity**)– यदि कोई व्यक्ति निरंतर संपर्क में रहता है तो उस सम्पर्क वस्तु का धीरे–धीरे प्रत्यक्षीकरण होने लगता है।

➢ निष्कर्ष–
(i) **चिम्पाजी ने परिस्थितियों का अपने समग्र रूप में प्रत्यक्षीकरण किया।**
(ii) उचित सम्बन्ध स्थापित करने की **कोशिश** की गई थी।
(iii) **समस्या के पहलु की तुरन्त खोज करना।**

- इस प्रकार **गेस्टाल्टवादियों ने मानसिक शक्तियों को ठीक प्रकार उपयोग** में लाते हुए **प्रत्यक्षीकरण** के कुछ क्षेत्र में नवीन व्यवस्था करके **समस्या का बौद्धिक समाधान ढूंढने पर बल** दिया था।

➢ महत्त्व–
(i) समस्या का **हल ढूंढते समय** उत्पन्न होती है।
(ii) **प्रत्यक्षीकरण में सहायक।**
(iii) **व्यक्ति को क्रियाशील** बनाती है।
(iv) रचनात्मक कार्य के लिए उपयोगी।
(v) **अंश की अपेक्षा समग्र** पर जोर।
(vi) **बुद्धि, कल्पना एवं तर्क शक्ति सृजनशीलता का पूरा विकास।**
(vii) **पाठ्यक्रम निर्माण** एवं उसके संगठन में उपयोगी।
(viii) **रटन्त विधा पर जोर नहीं।**
(ix) **खोज विधि, विश्लेषण विधि** एवं **समस्या समाधान** पर जोर देता है।
(x) **छोटे बच्चों की अपेक्षा बड़ों के लिए** उपयोगी है।
(xi) **एकीकृत पाठ्यक्रम इसी की देन है।**
(xii) **गणित, विज्ञान, संगीत, व्याकरण** आदि विषयों के लिए उपयोगी सृजनशील।
(xiii) **अमूर्त चिंतन का विकास साथ ही मानसिक शक्तियों का विकास** भी होता है।
(xiv) विषय वस्तु को प्रस्तुत करते समय उसको समग्र में रखना चाहिये।
(xv) **समझने पर जोर** एवं **अभ्यास** व **रटने पर कम।**
(xvi) **नवीन ज्ञान की उपयोगिता** एवं महत्त्व पर बल।

5. लेविन का क्षेत्रीय अधिगम सिद्धान्त

- **सन् 1898** में जन्मे **कुर्त लेविन** मूल रूप में **जर्मन** लेकिन बाद में अमेरिका जाकर बस गये एवं **Stenford University** में Prof. बने।
- कुर्त लेविन को संगठनात्मक विकास का जनक माना जाता है। लेविन एक जर्मन मनोवैज्ञानिक थे। आपने कोफ्का और कोहलर के साथ मिलकर कार्य किया था।

➢ आपका सिद्धान्त सामान्य शब्दावली में यह कहना कि "**मानव व्यवहार व्यक्ति और वातावरण दोनों का प्रतिफल** है जिसे सांकेतिक रूप में" **B = F (P, E)**

B - Behaviour (व्यवहार का प्रतिनिधित्व)
F - Function of (प्रकार्य)
P - Person (एक व्यक्ति)
E - Environment (पर्यावरण की स्थिति)

➢ **नोट**– किसी एक परिस्थिति में एवं किसी एक विशेष समय में व्यवहार करने या सीखने के लिए व्यक्ति अपने **जीवन दायरे** (Life Space) या **क्षेत्र** (Field) को किस प्रकार **संगठन एवं पुनः संगठन** करता है, इस बात को समझने के लिए आपने **भौतिक शास्त्र** एवं **गणित की कुछ विभिन्न शब्दावली** का प्रयोग किया था।

➢ **क्षेत्रीय अधिगम सिद्धांत के उपनाम –**
1. **तलरूप अधिगम का सिद्धान्त**
2. **क्षेत्रवादी अधिगम का सिद्धान्त**
3. **प्राकृतिक दशा अधिगम का सिद्धान्त**
4. **सदिश मनोविज्ञान अधिगम का सिद्धान्त**

➢ **कुर्त लेविन ने अपने सिद्धांत में प्रमुख 8 अवधारणा के आधार पर सिद्धांत दिया–**
- **व्यक्ति**
- **क्षेत्र**
- **बाहरी सीमा**
- **अभिप्रेरणा**
- **जीवन दायरा** (Life Space)
- **शक्ति**
- **सदिश** (Vectors)
- **अवरोध** (Barrier)

संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ (Stages of cognitive dovelopment)

1. संवेदी– पेशीय अवस्था (Sensory motor stage)

- 0–2 वर्ष– बालक कुछ सवेंदी पेशीय क्रियाएं जैसे **पकड़ना, चूसना, चीजों को इधर–उधर करना, शिशु असहाय जीवधारी से शक्तिशील**, अर्द्ध–भाषी तथा सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में होते हैं। इस अवस्था में **बालक आवाज** एवं **प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया** करते हैं।

(i) प्रतिवर्त्त क्रिया की अवस्था– जन्म से 1 माह

- इसमे शिशु अपने भाव को **नये वातावरण** में अभियोजन करने की कोशिश करता है। इस समय **चूसने** की क्रिया प्रबल होती है।

(ii) प्रथम वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था– 1 से 4 माह

- इसमें **शिशु अपने अनुभवों** को दोहराता है तथा उसमें रूपान्तरण लाने का प्रयास करता है। वृत्तीय इसलिए कहा जाता कि **बार–बार** दोहराते हैं।

(iii) गौण वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था– 4 से 8 माह

- इसमें शिशु **रुचिकर** क्रिया करता है पास की **वस्तु को छूने** की कोशिश करता है।
- ➢ जैसे– फर्श पर पड़े **खिलौने** या **सामग्री** को लेने की कोशिश करता, झपटना मारता।

(iv) गौण स्कीमटा के समन्वय की अवस्था– 8 से 12 माह

- इस अविध में शिशु अपने **उद्देश्यों की प्राप्ति** के लिए सहज क्रिया को इच्छानुसार प्रयोग सीख जाता है। व्यस्को द्वारा किये गये कार्यों को अनुकरण (Imitation) करने की कोशिश करता है।
- ➢ जैसे– यदि हम **बच्चों के सामने** हाथ हिलाते है तो वह उसी तरह हाथ हिलाता है। वह इस अवधि में स्कीमटा का उपयोग कर एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति के समस्या का हल करता है।

(v) तृतीया वृत्तीय प्रतिक्रिया की अवस्था– 12 से 18 माह

- इसमें बालक प्रयास व **त्रुटि के आधार पर** अपनी परिस्थितियों को समझाने की कोशिश करने से पहले सोचना प्रारम्भ कर देता है। इसमें बच्चों में **उत्सुकता (cariosity)** उत्पन्न होती है एवं भाषा का भी प्रयोग करना शुरू कर देता है।

(vi) मानसिक संयोग द्वारा नए साधनों की खोज अवस्था– 18 माह से 2 वर्ष

- **शिशु प्रतिमा (Image)** का उपयोग करना सीख जाता है। अब वह स्वयं ही समस्या का हल प्रत्तीकात्मक चिंतन क्रिया द्वारा ढूंढ़ लेता है। इस अवस्था में **बौद्विक विकास** तेजी से बढ़ता है।
- सहज क्रियाओं का समन्वय **(Coordinating Reflexes)**
- **शारीरिक क्रियाओं पर श्रेष्ठ नियंत्रण greates control over body movement**
- सामान्य चालकों का समन्वय (Coordinating Simple notor actions)
- वस्तु स्थायित्व (objective permanance) अर्थात् छिपी वस्तु को आसानी से ढूंढ़ने लगता है।

2. प्राक–परिचालक अवस्था (Pre-oprational stage)–

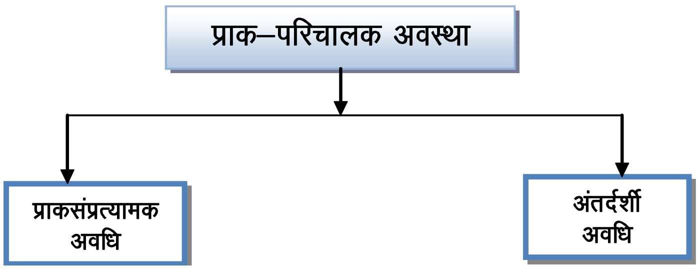

- 2–7 वर्ष– अब **बच्चे के पास मानसिक प्रतिनिधित्व** है और उसे दिखाने में सक्षम है यह **प्रतीकों** के उपयोग के लिए एक **छोटा** कदम है भाषा विकास इसी अवधि में होता है।
- इस चरण में **बच्चे अन्य लोगों के** दृष्टिकोण को लेने में असमर्थ है। जिसे (Egocentrism) अहम केन्द्रिता कहा है।
- इस **उम्र के बच्चे आत्मकेन्द्रीत** होते हैं इसी कारण पहली एवं दूसरी कक्षा में बच्चे **'स्वार्थी'** दिखाई देते हैं और शिक्षकों की बातों को कम मानते हैं।
- इस अवस्था में संरक्षण (Conservation), विकेन्द्रिता (Decentralisation) एवं प्रतिवर्ती चिंतन (Riversethinging) वे मूल क्रियाएँ है। जिन पर **गणितीय प्रत्यय, व्याकरण का सीखना** एवं **पढ़ना** आधारित है।
- इस अवस्था में **बच्चे उपरोक्त कार्य करने** को तैयार नहीं होते। इनको सीखने का अन्य प्रकार से संगठित करना शिक्षक की जिम्मेदारी है।
- इस अवस्था में **सकेंतात्मक कार्यों की उत्पत्ति** एवं **भाषा का प्रयोग** होता है।
- ➢ इसको **दो भागों** में बांटा गया है–

2.1. प्राकसंप्रत्यामक अवधि (Pre Conceptual Period)–

- 2 से 4 वर्ष – इसको **खोज की अवस्था** भी कहा जाता है। (Exploration) एवं इस अवस्था में बच्चा जो संकेत का प्रयोग करता वह अव्यवस्थित होता है।
- इसमें संकेत (Symbol) व **चिन्ह** (Signs) का प्रयोग कब और कहाँ किया जाता है के साथ शब्दों (Words) का प्रयोग भी जान जाते है। **क्यों व कैसे** (Why and How) जैसे प्रश्नों को जानने में रुचि रखते हैं। बड़ों का अनुकरण (Limitation) करने की प्रवृत्ति होती है। भाषा का **सबसे ज्यादा** विकास होता है।

2. जो कई वस्तुओं का प्रयोग करें, जैसे– अवर्गीकृत आँकड़े (raw-data), प्राथमिक स्रोत तथा पारस्परिक क्रिया की **वस्तुएँ; एवं शिक्षार्थियों** को यह प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. पहले शिक्षार्थियों से प्रत्ययों की समझ को जानना तथा फिर उन प्रत्ययों की आपकी **समझ को उनसे बाँटना।**
4. उन्हें अपने शिक्षक और साथियों के साथ संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करना।
5. शिक्षार्थियों को **पूछताछ की स्वतंत्रता** देना तथा एक–दूसरे से भी प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करना जिससे उनकी शुरुआती झिझक दूर हो।
6. शिक्षार्थियों को विरोधाभास अनुभवों में शामिल करें। जिससे वे शुरुआती समझ के अनुसार आगे उससे वाद–विवाद करें।
7. उन्हें संबद्ध निर्माण तथा समरूप तैयार करने के लिए समय देना।
8. शिक्षार्थियों की समझ का **अनुप्रयोग** और **प्रदर्शन** द्वारा **आंकलन करना** जिससे उन्हें कुछ संरचित कार्य किए जा सकते हैं।

✦ **Scalffolding** प्रक्रिया के अन्तर्गत **चार स्तर** में कार्य सम्पादित किए जाते हैं।
- प्रथम– दूसरों से सहायता लेकर कार्य किए जाते हैं।
- द्वितीय– बालक **स्वयं** समस्या को समझता है।
- तृतीय– प्रक्रिया स्तर में **बालक समस्या** को स्वयं हल करता है।
- चतुर्थ– स्तर में बालक दूसरों की मदद करने योग्य निपुणता एवं कौशलता प्राप्त कर लेता है।

- **वाइगोत्सकी** का यह भी मानना है कि बालक का सर्वाधिक विकास खेल के मैदान में ही होता है।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **यूरी ब्रोन फेन ब्रोनर ने** पारस्थितिकी सिद्धान्त का प्रतिपादन **किया है।** वर्तमान में इस सिद्धान्त को **जैव–पारिस्थितिकी मॉडल** के नाम से जानते हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सा कारक जीन पियाजे द्वारा प्रस्तावित संज्ञान में परिवर्तन करने वाले कारकों में से नहीं है? **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) जैविक परिपक्वता (2) सांस्कृतिक उपकरण
(3) संतुलीकरण (4) गतिविधि (2)

2. जीन पियाजे के अनुसार, जब बच्चे अपने मौजूदा संज्ञानात्मक संरचनाओं के अनुसार नए अनुभव को नहीं समझ पाते, तो वे .... अनुभव करते है और .... का सहारा लेते हैं। **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) असंतुलन; आंतरिकरण (2) असंगति; अनुकूलन
(3) असंगति; आंतरिककरण (4) असंतुलन; अनुकूलन (4)

3. जहाँ पियाजे बच्चों को .... देखते हैं, वहीं वायगोत्स्की बच्चों को .... देखते हैं। **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) विचारों के सक्रिय हेरफेर कर्ता के रूप में; सामाजिक संदर्भ में सक्रिय कर्ता के रूप में
(2) विचार के निष्क्रिय हेरफेर कर्ता के रूप में; सामाजिक संदर्भ में सक्रिय कर्ता के रूप में
(3) विचारों के निष्क्रिय हेरफेर कर्ता के रूप में; सामाजिक संदर्भ में निष्क्रिय कर्ता के रूप में
(4) विचारों के सक्रिय हेरफेर कर्ता के रूप में; सामाजिक संदर्भ में निष्क्रिय कर्ता के रूप में (1)

4. लॉरेंस कोहल्बर्ग के सिद्धांत में नैतिक विकास की अवस्था के निर्धारण का/के आधार क्या है/हैं? **(CTET L-2 15-12-2024)**
(A) व्यक्ति की आयु
(B) व्यक्ति द्वारा दिया गया उत्तर–चोरी के पक्ष में/विपक्ष में
(C) व्यक्ति की अनुक्रिया में अंतर्निहित तर्क
सही विकल्प का चयन कीजिए।
(1) (A) और (C) (2) (A) और (B)
(3) (B) और (C) (4) केवल (B) (2)

5. लेव वायगोत्स्की के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के मायने हैं– **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) पर्यावरण के अनुकूलन ढलना सीखना।
(2) संज्ञानात्मक द्वंद्व पर प्रतिक्रिया को पहचान पाना।
(3) योजनाओं को सुसंगत संपूर्णता में संगठित करना।
(4) मनोवैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग में महारत हासिल करना। (4)

6. लेव वायगोत्स्की के अनुसार, शिक्षार्थियों की, समीपस्थ विकास के क्षेत्र के माध्यम से, प्रगति में मदद करने में . ... की आवश्यक भूमिका है। **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) अधिक जानकार अन्य (2) परिपक्वता
(3) कारात्मक सुदृढ़ीकरण (4) भौतिक पर्यावरण (1)

7. यह महसूस करते हुए कि वह विज्ञान कक्षा में ध्यान नहीं दे रहा है और इसलिए वह संप्रत्यय को समझने में असमर्थ है, रमेश कक्षा में सबसे आगे बैठने का फैसला करता है ताकि वह ध्यान केन्द्रित कर सके। रमेश सीखने की किस रणनीति का उपयोग कर रहा है? **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) अधिसंज्ञान (2) आलम्बन
(3) स्मृति–सहायक विधियाँ (4) दोहराव (1)

8. संरचनावादी अधिगम में पूर्व ज्ञान की क्या भूमिका है? **(CTET L-2 15-12-2024)**

4 व्यक्तित्व (Personality)

(अर्थ, सिद्धान्त और मापन, समायोजन और इसकी क्रियाविधि, कुसमायोजन)
(meaning, theories and measurement, adjustment and its mechanism, maladjustment.)

❐ व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality)

1. **शाब्दिक अर्थ–** व्यक्तित्व अंग्रेजी के **Personality** का हिन्दी रूपान्तर है। यह **लैटिन** भाषा के **PERSONA** से लिया गया है जिसका अर्थ है 'नकाब, मुखौटा या वेशभूषा' जिसे नाटक करते समय नाटक के पात्र पहनकर, तरह–तरह के रूप बदला करते थे। इस प्रकार व्यक्तित्व बाह्य गुणों का एक रूप है।
2. **सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर–** बताया कि व्यक्तित्व उन सब तत्वों का **संगठन** है जिनके द्वारा व्यक्ति को समाज में कोई स्थान प्राप्त होता है इसलिए हम व्यक्तित्व को **सामाजिक धारा** मानते हैं।
3. **सामान्य आधार पर–** व्यक्तित्व का अभिप्राय बाह्य रूप एवं उन गुणों से लगाते हैं जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरों को **अपनी और आकर्षित** और **प्रभावित** करके विजय पाता है।
4. **व्यवहार के आधार पर–** ''व्यक्तित्व व्यक्ति के संगठित व्यवहार का सम्पूर्ण चित्र होता है''– **डेशील**
5. **दार्शनिक आधार पर– दर्शनशास्त्र** में माना कि व्यक्तित्व **आत्मज्ञान** का ही दूसरा नाम है। यह पूर्णता का आदर्श है।
6. **मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर–** इसमें **वंशानुक्रम** एवं वातावरण दोनों को महत्त्व प्रदान किया गया है। व्यक्ति में आन्तरिक एवं बाह्य जितनी भी विशेषताएँ, योग्यताएँ और विलक्षणताएँ होती है, उन सबका समन्वित रूप **व्यक्तित्व** है।

- व्यक्तित्व में **केवल** हमारी मूल–प्रवृत्तियों का ही प्रभाव नहीं रहता अपितु शिक्षा के फलस्वरूप विभिन्न अर्जित **व्यवहारों** का भी फल होता है।
- प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के एक समान लक्षण नहीं मिलते इनकी विभिन्नताओं के मुख्य कारण **जैविकीय एवं वातावरणीय** तत्वों को माना जाता है।
- व्यक्तित्व व्यक्ति के **आन्तरिक** एवं **बाह्य** क्रियाओं का संगठन है इसी के आधार पर व्यक्ति का समाज में आचरण प्रकट होता है।
- व्यक्तित्व व्यक्ति की आचरण सम्बन्धी गुणों का समूह है जिसमें उसकी रुचियाँ, **अभिवृत्तियाँ**, क्षमतायें, **योग्यतायें** उसके व्यावहारिक प्रारूपों का निर्माण कर उसके वातावरण के प्रति सम्बन्धों को व्यक्त करती है।
- **अल्फ्रेड एडलर** ने अपनी पुस्तक 'Individual Psychology' में व्यक्तित्व को **'जीवन जीने का एक ढंग'** (Life Style of Individual) कहा है।

✦ व्यक्तित्व की परिभाषाएँ (Definitions of Personality)–

- ''व्यक्तित्व वातावरण के साथ विशेषतया **सामाजिक वातावरण** के साथ आदतों सम्बन्धी समायोजन की समन्वित अवस्था है''–**हीली**
- ''मनुष्य की **विकास अवस्था** के किसी भी स्तर पर मनुष्य की समस्त व्यवस्था **व्यक्तित्व** है''– **वॉरेन**
- ''व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यवस्थाओं का **गत्यात्मक योग** है''– **कुर्त लेविन**
- ''व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम भविष्यवाणी कर सकते है कि कोई व्यक्ति कौनसी परिस्थिति में क्या करेगा''– **कैटल**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त **व्यवहारों का योग** है''– **वुडवर्थ**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के **गुणों** का प्रारूप है न की विशेषताओं की **सूची**''– **गेट्स**
- ''व्यक्तित्व **जन्मजात** एवं अर्जित प्रवृत्तियों का योग है''– **वेलेन्टाइन**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के **गुणों** का समन्वित रूप है''– **गिलफोर्ड**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति की सभी प्रकार की जन्मजात प्रकृति, आवेगों, व्यवहार, तरीकों, रूचियों, योग्यताओं, मूल–प्रवृत्तियों एवं अनुभवों का योग है''– **मोर्टन प्रिंस**
- ''व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन **मनोदैहिक व्यवस्थाओं** का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है''– **आलपोर्ट**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति से सम्बन्धित समस्त मनोवैज्ञानिक **दशाओं** एवं **क्रियाओं** का योग है''– **लिण्डेन**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार, तरीकों रुचियों तथा योग्यताओं का विशिष्ट **संगठन** है''– **मन**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के **चरित्र**, स्वभाव, बुद्धि और **शारीरिक बनावट** का थोड़ा–बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है''– **आइजेंक**
- ''सम्पूर्ण व्यक्तित्व वह है, जिसमें उसकी क्षमताएं एवं समस्त **भूतकालीन अधिगम** सम्मिलित है और इन सभी कारकों तथा संगठन, संश्लेषण उसके व्यवहारगत प्रतिमाओं, **विचारों, आदर्शों, मूल्यों** तथा अपेक्षाओं में अभिव्यक्त होता है''– **गैरीसन**

1. हिप्पोक्रेट्स का वर्गीकरण–

- आप एक **यूनानी दार्शनिक** थे, आपने संवेगों के आधार पर एवं शारीरिक द्रव के आधार पर वर्गीकरण किया, जिसका वर्णन आपकी पुस्तक 'Nature of Man' में मिलता है।
- इनका वर्गीकरण लगभग 400 वर्ष पुराना है, जो भारतीय आयुर्वेद से मिलता है।

(शोर्ट ट्रिक– M.S.C. Phlegmatic)

(i) **Melancholic (काले पित)–** **निराशावादी, शक्तिहीन, दुःखी, सुस्त** एवं **उदासीन** पाया जाता है।

(ii) **Sanguine (अधिक रूधिर)–** **आशावादी, कर्मठ, सक्रिय, शीघ्रगामी प्रवृत्ति** एवं हमेशा प्रसन्न रहने वाला।

(iii) **Choleric (कफ)–** **सनकी, स्वभाव, शीघ्र उतेजित** एवं **क्रोधी स्वभाव** वाला।

(iv) **Phlegmatic (पीले पीत)–** **शांत, धैर्यवान, आनन्दयुक्त** होते हैं।

✦ **हिप्पोक्रेटस** को पश्चिमी दुनिया में चिकित्सा जगत का पिता कहा जाता है। ये **यूनानी** चिकित्सक थे, इन्होंने शरीर क्रियाओं के आधार पर व्यक्तित्व को चार भागों में बांटा था। काला पित्त **(Black Bile)**, कफ **(Phlegn)**, रक्त **(Blood)**, पीला पित्त **(Yellow Bile)** बताया कि चारों द्रव्यों में से प्रत्येक व्यक्ति में किसी एक दृव्यता की अधिकता रहती है।

2. क्रेश्मर का वर्गीकरण–

- अपनी पुस्तक **Physique and character** में **शारीरिक संरचना के आधार** पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया था।

➢ क्रेश्मर जो कि एक **जर्मन मनोचिकित्सक** थे, इन्होंने जर्मनी में कई मनोरोगियों के अध्ययन से व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया।

(शोर्ट ट्रिक– APDA)

(i) **पुष्टकाय/सुडोलकाय प्रकार (Athletic)–** इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में **शारीरिक गठन** अच्छा होता है।

- इनके कंधे चौड़े, पीठ सीधी और हाथ–पाँव की पेशियाँ अच्छी तरह विकसित होती है।
- इस प्रकार का व्यक्ति स्वभाव में साहसी, निर्भीक तथा प्रभुत्व की इच्छा रखने वाला होता है।
- ये **व्यक्ति समाज** में अधिक सफल माने जाते हैं।
- इस वर्ग के व्यक्तियों में मनोविदलन रोग होने की सम्भावना कम होती है।
- ऐसे व्यक्ति बलवान, चौड़ा सीना, गठीला शरीर, **पूर्ण विकसित माँसपेशियाँ,** चिंता करने की आदत्त नहीं, सामंजस्य बिठाने वाले, शरीर काफी हष्ट–पुष्ट होता है ये व्यक्ति दूसरों से इच्छानुसार समायोजन कर लेते है।

(ii) **Pyknic (गोलकाय/तुन्दिल प्रकार)– क्रेश्मर के अनुसार** इस प्रकार के व्यक्तियों के शरीर में **तोंद की प्रधानता** होती है तथा ये कद में ठिगने, **हट्टे–कट्टे,** गोल–मटोल होते हैं।

- इनकी **धड़ और शारीरिक गुहाएँ** बड़ी होती है।
- सीना और कंधे **अच्छी गोलाई** लिए होते हैं।
- इनकी गर्दन तथा **हाथ–पैर** छोटे होते हैं और ये **नाटे कद** के होते हैं।
- इनकी बढ़ी हुई तोंद, गोल, चिकना चेहरा, छोटी बांहे तथा टांगे उसकी **तुन्दिल प्रकार** के व्यक्तित्व की परिचायक है।
- ये व्यक्ति मिलनसार, हंसमुख तथा मैत्री रखने वाले होते हैं।
- इस प्रकार के **व्यक्तित्व** वाले व्यक्तियों की **मनोस्थितियाँ** जल्दी–जल्दी बदलती रहती है।
- अतः क्रेश्मर ने ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों की **चित–प्रकृति** को **चक्रीयवृत्ति** कहा है।
- ऐसा व्यक्ति **सुख** और **दुःख** में भी अधिक प्रभावी होते हैं।
- ऐसे व्यक्तियों में **उत्साह–विशाद** नामक रोग होने की सम्भावना अधिक होती है।
- शरीर मजबूत लेकिन इनका कद काफी **नाटा** होता है ये मिलनसार, **सामाजिक प्रवृत्ति के,** अच्छे स्वभाव वाले, **दूसरों के साथ सरलता से सामंजस्य करने वाले** एवं इनका सिर, सीना एवं पैर भी चौड़े होते हैं। ये मुख्यतः **आराम करने वाले** एवं **सामाजिक प्रवृत्ति** के होते हैं। ऐसे व्यक्ति **स्वादिष्ट भोजन** करने के प्रिय होते हैं।

(iii) **Ashthenick or Leptosomatick Type (लम्बाकाय/कृशकाय)–** इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति का शरीर **दुबला–पतला** और **लम्बा** होता है, अर्थात् उसका शरीर कृश होता है।

- उसकी **मुखाकृति, गर्दन, रीढ़ की हड्डी** आदि में पतलेपन और लम्बाई का प्रभाव स्पष्ट होता है।
- ऐसे व्यक्ति दूसरों की आलोचना करने वाला होता है।
- ये व्यक्ति भावुक, शांत और **एकांत प्रिय** होते हैं।
- इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में **मनोविदलता या मनोभाजन** मानसिक रोग होने की प्रबल सम्भावना होती है।
- ये **पतले–दुबले** लेकिन **सुन्दर** होते हैं, शर्मीले और एकांतप्रिय, निराशावादी, सामाजिक रूप से **असमायोजित** होते हैं, स्वयं की बुराई के प्रति सजग रहते हैं जबकि दूसरों की आलोचना हमेशा करते हैं।

(iv) **Dysplastick (मिश्रकाय प्रकार)– क्रेश्मर के अनुसार** इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का शरीर का गठन बेलोचदार तथा असामान्य होता है।

- इनके व्यक्तित्व में ऊपर वर्णित तीनों प्रकार का मिश्रण पाया जाता है।
- क्रेश्मर के अनुसार अधिकतर **मानसिक रोगियों** के शरीर की बनावट मिश्रकाय प्रकार की होती है।

6. तनावयुक्त बनाम शिथिल 7. स्थिर बनाम संवेगात्मक
8. स्पष्टवादी बनाम चतुर 9. चिन्तित बनाम आत्मविश्वासी
10. व्यावहारिक बनाम कल्पनाशील
11. असंयमित बनाम संयमित
12. आरक्षित बनाम हार्दिक
13. आधुनिक बनाम रूढ़िवादी 14. आश्रित बनाम आत्मसंतुष्ट
15. दृढ़ मस्तिष्क वाला बनाम संवेदनशील
16. बुद्धिमान बनाम कम बुद्धिमान

9. व्यक्तित्व का पंचआयामी कारक सिद्धांत–

- इस सिद्धांत को पॉल कोस्टा एवं रोबर्ट मैक्रे, हॉगान, नोलर, ला एवं केमरे ने भी व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य किये थे।
- ➢ गोर्ल्डबर्ग एवं कोस्टा ने शीलगुणों की संख्या को कम करते हुए केवल 5 शीलगुण बताए हैं। यही व्यक्तित्व निर्धारक कारक कहलाते हैं–

(i) अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति (**Openness to Experience**)– (कल्पनाशील/उत्सुक बनाम सतर्क/रूढ़िवादी)। कला, भावना, साहस, असामान्य विचार, जिज्ञासा और विविध अनुभव के प्रशंसक।

(ii) कर्त्तव्यनिष्ठा या अंतरात्मा की आवाज (**Consciousness**)– (कुशल/संगठित बनाम आरामपसंद/लापरवाह)। अनुशासन, कर्त्तव्यपरायण और कार्यसिद्ध का प्रयास, सहज के बजाय योजनाबद्ध व्यवहार की प्रवृत्ति।

(iii) बहिर्मुखता (**Extraversion**)– (मिलनसार/उत्साही बनाम शर्मीला/गुमसुम)– ऊर्जा, सकारात्मक भावनाएँ, सहमतता और दूसरों के साथ उत्तेजना की तलाश करने की प्रवृत्ति।

(iv) सहमतिजन्यता या समझौतावादी प्रकृति (**Agreeableness**)– (मैत्रीपूर्ण/संवेदनशीलता बनाम प्रतिस्पर्धी/मुखर) दूसरों के प्रति शंकालु और विरोधी होने के बजाय दयालु और सहयोगी रहने की प्रवृत्ति।

(v) मनोविक्षुब्धता, स्नायुविकृति या संवेगात्मक स्थिरता (**Neuroticism**)– (संवेदनशील/बेचैन बनाम निश्चित/आश्वस्त), क्रोध, चिंता, अवसाद या अतिसंवेदनशीलता जैसी अप्रिय भावनाओं को आसानी से अनुभव करने की प्रवृत्ति।

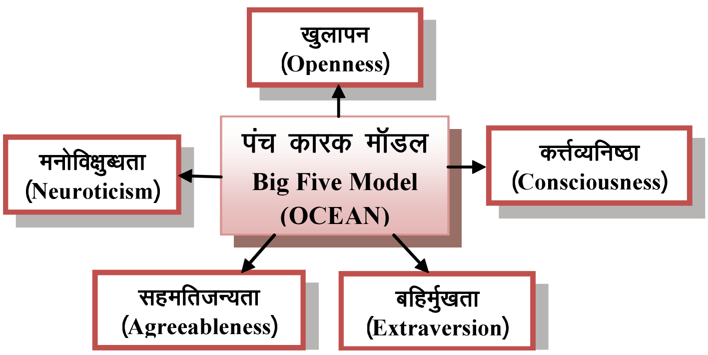

☞ **नोट**– उपरोक्त दिये गये 5 आयामों का कूट संकेत (OCEAN) के नाम से जाना जाता है।
- इसे पंचकारक मॉडल के नाम से भी जाना जाता है।
- नॉरमैन ने इन 5 शीलगुणों को 'द बिग फाइव' सिद्धांत के नाम से पुकारा है।

10. शरीर सिद्धान्त– **क्रेशमर, शेल्डन**
11. मानवतावादी सिद्धान्त– **रोजर्स**
12. जीववादी सिद्धान्त– **गोल्डस्टीन**
13. हार्मिक सिद्धान्त– **मेक्डुगल**
14. क्षेत्रवादी सिद्धान्त– **कुर्त लेविन**
15. नव फ्राइडवादी सिद्धान्त– **एरिक्सन, हार्नि, इरिकफ्रोम**

❖ वन लाइनर व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण प्रश्नावली

✦ फ्रायड तथा एल्डर–

1. फ्रायड ने जैविक कारकों को **व्यवहार का** प्रमुख निर्धारण माना है, जबकि एडलर ने **सामाजिक कारकों** पर बल डाला है।
2. फ्रायड ने वर्तमान व्यवहार का मुख्य कारण व्यक्ति कि गत **अनुभूतियों** को माना है जब कि एक मात्र जन्मक्रम के संप्रत्यय को छोड़कर एडलर ने **भविष्य के लक्ष्यों** को ही व्यवहार का निर्धारक माना है। उन्होंने व्यक्ति के व्यवहार के निर्धारण में **नियतिवाद या गत अनुभूतियों** के महत्व को मान्यता नहीं दी।
3. फ्रायड ने **यौन प्रणौद** को ही मनुष्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रणौद माना है जबकि एडलर ने अन्तिम रूप से व्यक्ति की **सामाजिक अभिरूचित** को उसका सबसे प्रमुख प्रणौद माना।
4. फ्रायड ने अपने सिद्धान्त में **अचेतन मन पर** सर्वाधिक बल दिया है जबकि एडलर ने **चेतन मन पर**।
5. एडलर ने अपने सिद्धान्त में व्यक्ति विशेष की **अपूर्णता** एवं व्यक्तित्व की **अविभाष्यता** पर बल दिया है। जबकि फ्रायड ने सिद्धान्त में इन बातों पर बल नहीं डाला गया है।

✦ फ्रायड बनाम युंग–

1. फ्रायड एवं युग दोनों ने ही **मानसिक ऊर्जा** के संप्रत्यय को स्वीकार किया है किन्तु फिर भी दोनों में अंतर है फ्रायड के अनुसार मानसिक ऊर्जा का स्रोत **यौन मूलप्रवृत्ति** है तथा युंग के अनुसार **शारीरिक प्रक्रिया** है।
2. दोनों ने ही **अचेतन के संप्रत्यय** को स्वीकार किया किन्तु **फ्रायड** के अचेतन केवल व्यक्तिगत होता है, जबकि युंग ने अचेतन के दो भेद किये–

(i) व्यक्तिगत अचेतन एवं
(ii) सामूहिक अचेतन

समायोजन (Adjustment)

- समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें व्यक्ति **बाह्य वातावरण** एवं स्वयं की शारीरिक व मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा रहता है।

➢ समायोजन का अर्थ (Meaning of Adjustment)–

- समायोजन शब्द अंग्रेजी के Adjustment शब्द का ही पर्यायवाची है। इसकी व्युत्पत्ति जीव विज्ञान के 'एडॉप्शन' शब्द से हुई है जिसका तात्पर्य है, अपने आप को परिस्थितियों के अनुसार ढालना। जीवन की समस्याओं का समाधान समायोजन में निहित है अर्थात् इस चिन्ताओं, समस्याओं के युग में जितना सम्भव हो सके उतना ही सीधे और सरल मार्ग से लक्ष्य तक पहुँचने की दक्षता ही समायोजन का आधार है।

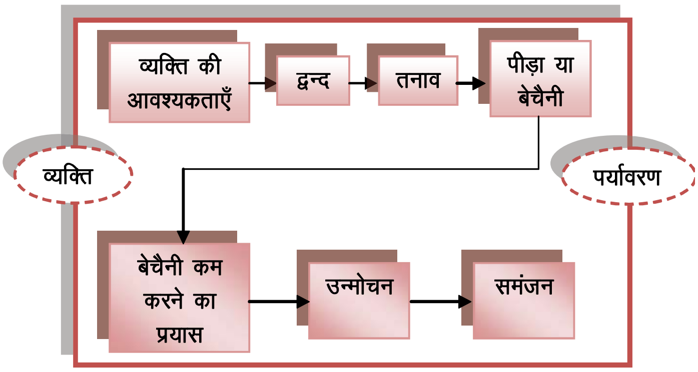

समंजन प्रक्रिया की सात अवस्थायें

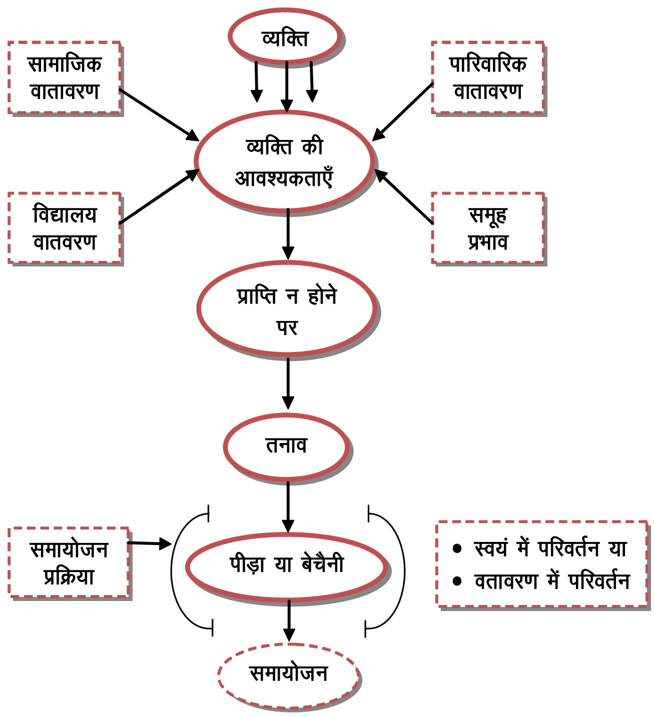

समायोजन–प्रक्रिया

❖ समायोजन प्रक्रिया की विशेषताएँ –

1. समायोजन प्रक्रिया द्विमार्गी प्रक्रिया है व्यक्ति समाज के अलावा पर्यावरण पक्ष को भी प्रभावित करता है।
2. समायोजन एक **उद्देश्यमुखी प्रक्रिया** है।
3. समायोजन प्रक्रिया में उद्देश्य की प्राप्ति न होने पर कुंठा की उत्पत्ति होती है।
4. समायोजन के अभाव में **व्यक्ति में अपचारिता**, आक्रामकता का विकास हो सकता है।
5. समायोजन के अभाव में **आत्मविश्वास** में कमी पाई जाती है।

✦ समायोजन की परिभाषाएँ (Definitions of Adjustment)–

- "समायोजन एक **अधिगम प्रक्रिया** है"– स्कीनर
- "समायोजन **श्रेष्ठता** प्राप्ति का आधार है"– एडलर
- "समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है"– गेट्स
- "समायोजन **यथार्थवादी व संतोषप्रद** दोनों होते हैं"– स्मिथ
- "समायोजन वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति अपनी **अन्तः भावना** एवं अन्तः प्रेरणा कुछ निश्चित लक्ष्यों एवं हितों की ओर प्रेरित करती है"– क्रो व क्रो
- "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकता और आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में मिलनसार हो जाता है"– बोरिंग लेंगफिल्ड वेल्ड
- "प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न प्रकार का होता है जिसे **समायोजन** एवं **असमायोजन** कहते हैं"– गेसाफियर व हिवरी
- "समायोजन निरन्तर चलते वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति और वातावरण के **मध्य समंजस्यपूर्ण संबंध** बनाए रखने हेतु अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"– गेट्स
- "समायोजन वातावरण से ऐसा **सामंजस्यपूर्ण संबंध** है जो व्यक्ति की **अधिकांश अवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा** स्वीकृत तरीकों से करता है और इसका परिणाम व्यवहार के उन **विभिन्न रूपों में** दिखाई पड़ता है जो कि निष्क्रिय अनुमोदन से लेकर सक्रिय समर्थन की अधिसीमा के अन्तर्गत होते हैं।" – विलियम क्लार्क ट्रो
- **"समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा समस्याओं से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम है।"**– कोलमैन
- "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से कोई जीवित प्राणी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली स्थितियों तथा आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है।"– शेफर
- "समायोजन मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति जीवन में आने वाली आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना करता है।"– वीटेन तथा ल्वापड

✦ व्यामोह विकृति के लक्षण –

(i) इस रोग से पीड़ित व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर मूलरूप से पारस्परिक संबंध में **संवेदनशील, असंतोषजनक आक्रोश** देखने को मिलते हैं।

(ii) इससे पीड़ित व्यक्ति दूसरों को स्वार्थी, **निर्दयी,** पीड़ा पहुँचाने वाले मानता है।

(iii) यह रोग वैसे **शैशवकालीन अवस्था** से होता है।

(iv) दूसरों पर विश्वास नहीं करता एवं सभी को संदेह की दृष्टि से देखता है।

(v) रोगी का मानना होता कि मेरे द्वारा जो कहा जा रहा है, **वही सत्य** होता है **बाकि सब गलत** होता है।

(vi) व्यामोह **अस्थायी** तात्कालिक **उत्पन्न** होने वाला रोग है।

(vii) अहंकार, **दुराचार** एवं **स्वार्थ का स्तर** प्रबल पाया जाता है।

✦ व्यामोह के प्रकार–

(i) **उत्पीड़न सम्बन्धी–** पड़ोस, **रिश्तेदार,** व्यवसाय से संबंधी लोग उसकी कुशलता से जलते हैं एवं नुकसान पहुँचाना चाहते है। जैसे ऐसा होता कुछ नहीं फिर भी **आक्रमण** कर देता है।

(ii) **रोग सम्बन्धी–** रोगी को लगता की मुझे **अराध्य रोग** हो चुका है।

(iii) **महानता सम्बन्धी–** व्यक्ति अपने आपको महान समझने लगता है **डॉक्टर, संगीतज्ञ, कलाकार, चित्रकार**।

(iv) **कामुक व्यामोह–** व्यक्ति या महिला यह समझने लगते की **विपरीत लिंगी** मेरे पर मोहित हो रहे हैं।

(v) **विवादी व्यामोह–** ऐसे व्यक्ति निरन्तर **मुकदमों** में लीन रहते हैं।

(vi) **ईर्ष्यात्मक व्यामोह–** व्यक्ति समझने लगता की **मैं महान हूँ** तो दूसरे लोग मेरे से जलते हैं।

(vii) **धार्मिक व्यामोह–** कुछ व्यक्ति अपने आपको को **ईश्वर** समझने लगते हैं।

6. **डिसअफैजिया– ग्रीकभाषा** के दो शब्दों **''डिस'' और ''फासिया''** जिनके अर्थ **''अक्षमता'' एवं ''वाक्''** होते हैं अर्थात् **वाक् अक्षमता** से है। यह भाषा एवं वाक् संबंधी विकृती है जिससे ग्रसित बच्चे विचार अभिव्यक्ति या व्याख्यान के समय कठिनाई महसुस करते हैं। इसमें मुख्य रूप से **मस्तिष्क क्षति** को उतरदायी माना जाता हैं।

7. **डिस्प्रैक्सिया–** यह मुख्य रूप से चित्रांकन संबंधी अक्षमता की ओर संकेत करता है इससे ग्रसित बच्चे लिखने एवं चित्र बनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

8. डिस आर्थोग्राफिया– **वर्त्तनी संबंधी विकार**

9. ऑडिटरी प्रोसेशिंग डिसऑर्डर– **श्रवण संबंधी विकार**

10. विजुअल परसेप्शन डिसऑर्डर– **दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता संबंधी विकार**

11. सेसरी–इंटीग्रेशन व प्रोसेशंग डिसऑर्डर– **इन्द्रीय समन्वयन क्षमता संबंधी विकार**

12. ऑर्गेनाइजेशन लर्निंग डिसऑर्डर– **संगठनात्मक पठन संबंधी विकार**

✦ मानसिक रोगों के प्रमुख लक्षण (Symptoms of Mental Diseases)–

क. संज्ञानात्मक लक्षण (Cognitive Symptoms)

(i) संवेदना संबंधी लक्षण (Symptoms of Sensation)

(ii) प्रत्यक्षीकरण संबंधी लक्षण (Symptoms of Perception)

(iii) अवधान संबंधी लक्षण (Symptoms of Attention)

(iv) साहचर्य संबंधी लक्षण (Symptoms of Association)

(v) स्मृति संबंधी लक्षण (Symptoms of Memory)

(vi) विचार संबंधी लक्षण (Symptoms of Thought)

ख. क्रियात्मक लक्षण (Conative Symptoms)

(i) माँसपेशीय क्रियाओं संबंधी लक्षण (Symptoms of Muscles)

(ii) भाषण संबंधी लक्षण (Symptoms of Speech)

(iii) क्रियाओं संबंधी लक्षण (Symptoms of Voluntary Acts)

(iv) सम्पूर्ण व्यवहार संबंधी लक्षण (Symptoms Total Behaviour)

ग. भावात्मक (Affective Symptoms)

(i) भावना संबंधी लक्षण (Symptoms of Feeling)

(ii) संवेग संबंधी लक्षण (Symptoms of Emotion)

❐ वन लाइनर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी

- मनोविदिलता का लैटिन भाषा का नाम 'Dementia Praecox' है, इस नाम का उपयोग जर्मन मनोचिकित्सक क्रेपलिन ने किया।
- क्रेपलिन के अनुसार यह रोग बाल्यावस्था, किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था में पाये जाते हैं।
- क्रेपलिन का यह भी विचार था कि मनोविदिलता में मानसिक शक्तियों में ह्रास स्थायी नहीं होता है।
- स्विट्जरलैण्ड के मनोचिकित्सक ब्लूलर ने 'Dementia Praecox' का नाम 'Schizophernia' रखा।
- **अधिगम अक्षमता** शब्द का प्रयोग सबसे पहले 1963 ई. में **किर्क** द्वारा किया गया है।
- **रेड्डी, रमार** द्वारा अधिगम अक्षमता को **तीन चरणों** में बांटा गया है– **प्रारम्भिक, रूपान्तरण एवं स्थापन्न काल**।
- अधिगम अक्षमता पर 1972 में **40 शब्दों** का एक शब्दाकोष **कुकशैक द्वारा** किया गया था।
- **मानसिक मंदता के क्षेत्र में** कार्य करने वाली अग्रणी संस्था **American Association of Intellectual and Dovelopment Disability** है (सेंगुइन द्वारा 1876ई. में स्थापित की गई थी।)

5 बुद्धि एवं सृजनात्मकता (Intelligence and Creativity)

(अर्थ, सिद्धान्त और मापन, सीखने में भूमिका, भावनात्मक बुद्धि– अवधारणा एवं अभ्यास)

(meaning, theories and measurement, role in learning, emotional intelligence- concept and practices.)

❖ बुद्धि का अर्थ (Meaning of Intelligence)–

- सर्वप्रथम हरबर्ट स्पेंसर ने सन् 1895 में बुद्धि शब्द का प्रयोग किया था।
- बुद्धि कोई गुण न होकर विभिन्न प्रकार की योग्यताओं का एक समग्र रूप माना जाता है।
- सामान्यतः बुद्धि एक **अद्भुत क्षमता** है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने समस्या समाधान पर आधारित, कुछ ने समायोजन, कुछ ने सीखने की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता के आधार पर परिभाषित किया गया था।
- प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि किसी भी कार्य को पूर्ण करना हो तो उसके लिए बुद्धि की अति आवश्यकता होती है। बुद्धि को सबसे पहले परिभाषित करने का कार्य **यूनान के दार्शनिकों** द्वारा किया गया था। वैसे देखा जाता कि जिस व्यक्ति की सीखने, समझने, धारण करने की शक्ति तीव्र होती है उसे बुद्धिमान माना जाता है।
- बुद्धि को परिभाषित करने हेतु मनोवैज्ञानिकों द्वारा एक सभा 1910 में हुई, अमेरिकन की सभा 1921 में, विश्व के मनोवैज्ञानिक की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस सभा 1923 को हुई थी परन्तु वे यह नहीं स्पष्ट कर सके कि बुद्धि में स्मृति, कल्पना, भाषा, **अवधान**, गामक तथा संवेदनशीलता सम्मिलित है या नहीं। अलग–अलग मनोवैज्ञानिकों द्वारा बुद्धि को अपने अलग–अलग अंदाज में विभिन्न प्रकार की परिभाषा बतायी थी।

☞ **नोट**– रॉस ने बताया कि इस परिषद् में यह निर्धारित नहीं किया जा सका कि बुद्धि में संवेदना, गामक योग्यता, कल्पना, अवधान, भाषा और स्मृतियाँ शामिल है या नहीं।

1. **प्रथम श्रेणी की परिभाषाओं में**– बुद्धि सीखने की क्षमता का नाम है तथा जो सीखा जा चुका है, उसे नई दशाओं में प्रयोग करने का **गुण** है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिकों का एक वर्ग, जिनमें **बकिंघम, डार्विन** तथा **एबिंगहास** के नाम प्रमुख है, यह मानते हैं कि बुद्धि सीखने की क्षमता है।
2. **द्वितीय श्रेणी की परिभाषाओं में**– बुद्धि को वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। जीवन की नई परिस्थितियों में व्यवस्थित होने तथा नई **समस्याओं को सुलझाने** में बुद्धि की क्षमता को **केलविन, स्टर्न** तथा **पियाजे** ने महत्त्व दिया है।
3. **तृतीय श्रेणी की परिभाषाओं में है**– जो **अमूर्त चिंतन** को ही बुद्धि का प्रधान लक्षण मानता है। इन मनोवैज्ञानिकों ने अपनी परिभाषाओं में बुद्धि को अमूर्त चिंतन करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया है।

- फ्रांस के मनोवैज्ञानिक बिने तथा अमेरिका के टरमन जैसे मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के द्वारा अमूर्त चिंतन की क्षमता या प्रतीकों द्वारा किसी समस्या के समाधान को प्राप्त करने पर बल दिया है।

❖ बुद्धि की परिभाषाएँ (Definitions of Intelligence)

☞ "परीक्षण जिसे **परीक्षित** करते हैं, वही बुद्धि है"– बोरिंग

☞ "परीक्षण जो कुछ **मापता** है, वही बुद्धि है"– हिलगार्ड

☞ "बुद्धि **कार्य** करने की योग्यता है"– वुडवर्थ

☞ "बुद्धि **ज्ञान को अर्जन** करने की क्षमता है"– वुडरो

☞ "बुद्धि **अमूर्त** विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है"– टरमन

☞ "बुद्धि **सीखने** या **अनुभव** से लाभ उठाने की क्षमता है" डीयरवार्न

☞ "बुद्धि में **चार तत्व** निहित हैं – **ज्ञान, निर्देश, अविष्कार, आलोचना**"– बिने

☞ "बुद्धि वह शक्ति है, जो हमारी **समस्याओं का समाधान** करने और **उद्देश्यों** को प्राप्त करने की क्षमता देती है"– रायबर्न

☞ "ठीक से निर्माण करना, **समझना**, तर्क करना बुद्धि है"– बिने

☞ "बुद्धि में **दो तत्त्व** हैं – ज्ञान की क्षमता, निहित ज्ञान"– हेनमॉन

☞ "यदि व्यक्ति ने अपने वातावरण से सामंजस्य करना सीख लिया है या सीख सकता है, तो वह बुद्धि है"– कॉलविन

☞ "**बुद्धि** व्यक्ति की वह संयुक्त और समग्र क्षमता है जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण **कार्य** करता है, विवेकपूर्ण **चिन्तन** करता है और अपने वातावरण का प्रभावशाली ढंग से सामना करता है"–वेक्सलर

☞ "बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा हल करने, किसी उद्देश्य की पूर्ति या समस्या का समाधान करने के लिए सम्बन्धित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं"– रेक्सनाइट

☞ "बुद्धि मस्तिष्क की **विश्लेषणात्मक** एवं **संश्लेषणात्मक** योग्यता है"– स्पीयरमेन

☞ "बुद्धि पहचानने एवं **सीखने की शक्ति** है"– गाल्टन

☞ "बुद्धि **जन्मजात प्रवृत्ति** को अतीत के अनुभव को नवीन प्रकाश में सुधारने की योग्यता है"– मैक्डुगल

➢ **नोट**– उपरोक्त सात प्रकारों के अतिरिक्त **रोबर्ट स्लविन** द्वारा सन् 2009 में **सात** की जगह **दो** और कारक मिलाकर कुल **नौ कारक** बना दिये।
(i) प्रकृतिवादी (Naturalistic)
(ii) अस्तित्ववादी (Existential)

➢ **गार्डनर के अनुसार बुद्धि के 3 कारक बताये थे**–
(i) मुख्य कारक
(ii) गौण कारक
(iii) विशिष्ट कारक

8. आश्चर्यजनक बुद्धि का सिद्धान्त–ब्लूम

- आपने माना की बुद्धि नाम की **कोई भी चीज** ही नहीं होती है।
- सब कुछ समय पर निर्भर होता है।

9. मानसिक योग्यता का सिद्धान्त–कैली

- सब कुछ व्यक्ति की **मानसिक स्थिति** पर निर्भर करता है क्योंकि अच्छी मानसिक स्थिति वाला व्यक्ति भी कभी–कभी गलत कार्य कर बैठता है।

10. तरल (Fluid) व ठोस (Crystallized) बुद्धि का सिद्धान्त–कैटल

- यह सिद्धान्त **कैटल** द्वारा सन् 1963 में दिया गया था।
- **तरल**– यह आनुवांशिक कारको से होती है। यह बुद्धि बचपन में अधिक होती है और 20 वर्ष बाद कम होने लगती है। तरल का अभिप्राय कैटल ने **प्रत्यक्षीकरण की योग्यता** बताया। भाषा विकास नवीनीकरण में सहायक है।
- **ठोस**– यह **बुद्धि** अर्जित या **तथ्यात्मक** अर्थात् वातावरण एवं वंशानुक्रम दोनों का शामिल रूप है यह व्यक्ति के **सांस्कृतिक ज्ञान** एवं **कुशलताओं** पर निर्भर है यह उम्र भर बढ़ती रहती है।

11. क व ख का सिद्धान्त– हैब

- **क**– **जन्मजात योग्यता**
- **ख**– **अर्जित योग्यता**

12. पदानुक्रम या क्रमिक महत्व का सिद्धान्त –

- **बर्ट व वर्नन** द्वारा 1965 में दिया गया था।
- पहले जो **सामान्य योग्यता** बताई गई उसी में आपने विशेष योग्यता को शामिल किया था।
- **बौद्धिक समूह शैक्षिक वर्ग सामान्य**– अंक, शाब्दिक, योग्यताएँ, गणितीय, भाषायी, सौन्दर्य
- **यांत्रिक या विशेष**– विशेष आंकिक, विशेष शाब्दिक व्यावहारिक योग्यता, कला, विज्ञान, तकनीकी, व्यावसायिक

13. प्रतिदर्श का सिद्धान्त– थॉमसन

- व्यक्ति अनेक कार्यों के संपादन में विभिन्न योग्यताओं के स्थान पर किसी समय–विशेष में केवल एक ही योग्यता का चुनाव करता है तो वह प्रतिदर्श या निदर्शन कहलाता है।
- माना कि बुद्धि कई **स्वतंत्र तत्वों** से मिलकर बनी होती है।
- प्रत्येक व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की **मानसिक योग्यताएँ** होती है। वह अलग–अलग जगह एवं समय पर इसका उपयोग करता है।

14. त्रिआयामी बुद्धि का सिद्धांत (Three Dimensional Theaory of Intelligence)–

- इस सिद्धांत को त्रिविमिय सिद्धांत या बुद्धि संरचना सिद्धांत भी कहते हैं।
- यह सिद्धान्त **गिलफोर्ड** द्वारा **सन्** 1967 में दिया गया था।

क्र. सं.	विषय–वस्तु या सामग्री (Contents)	संक्रिया (Operations)	उत्पाद (Product)
	(C)	(O)	(P)
1.	आकृतिक (Figural)	संज्ञान (Cognition)	इकाई (Units)
2.	संकेतिक (Symbalic)	स्मृति (Memory)	वर्ग (Class)
3.	शाब्दिक (Semantic)	अभिसारी (Convergent)	सम्बन्ध (Relations)
4.	व्यवहारिक (Behavioural)	अपसारी (Divergent)	रूपान्तरण (Transformation)
5.		मूल्यांकन (Evaluations)	व्यवस्थाएँ (Systems)
6.			प्रणाली (Implication)

- गिलफोर्ड ने प्रारम्भ में बताया कि **C - O - P 4 × 5 - 6 = 120** 1967 में इसे **'बौद्धिक प्रारूप संरचना सिद्धान्त'** नाम दिया था।
- लेकिन बाद में बताया कि व्यवहारिक विषय वस्तु अभी पूर्ण नहीं है। इसलिए **3 × 5 × 6 = 90 खण्ड** बताये।
- बाद में इन्होंने व्यवहारात्मक बुद्धि को **दो भागों** में बांटा (i) दृश्य (ii) श्रव्य
इस प्रकार 5 × 5 × 6 = 150 खण्ड बताये लेकिन यह अभी तक पूर्ण सत्य नहीं है।

✦ गिलफोर्ड के द्वारा दिये गये आयाम

1. विषय–वस्तु/सामग्री (Contents)

➢ **(1.1) आकृति सम्बन्धी**– यह स्थुल सामग्री सामान्यतया व्यक्तियों के द्वारा **इन्द्रियों** के सम्पर्क द्वारा उपलब्ध की जाती है। इसे देखकर अनुभव किया जा सकता है।
जैसे– दिखाई देने वाली वस्तु का रंग, आकार आदि।
जिन चीजों को **देखा** एवं **सुना** जा सके।

(PAV समक्ष मूमूज)	
बालकों की श्रेणी	बुद्धिलब्धि
प्रतिभाशाली (Gifted or Genious)	140 +
अति उच्च (Very Superior)	125 – 140
उच्च (Superior)	110 – 125
सामान्य (Average)	90 – 110
मन्द (Dullness)	80 – 90
क्षीण (Feeble Mindeness)	70 – 80
मूर्ख (Morons)	50 – 70
मूढ़ (Imbecile)	25 – 50
जड़/महामूर्ख (Idiot)	(25 से कम)

- बिने साइमन स्केल से मानसिक आयु ज्ञात की जाती है।

→ **बेसल वर्षः–** बालक जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को हल कर लेता है, वह उसका **बेसल वर्ष** माना जायेगा

→ **टर्मिनल वर्षः–** बालक जिस आयु स्तर के प्रश्नों को हल नहीं कर पाता है, वह उसका **टर्मिनल वर्ष** कहलाता है।

M.A.– Mental Age मानसिक आयु

C.A. – Cronological Age वास्तविक आयु

- सबसे पहले बुद्धि शब्द का **उदय फ्रांस** में हुआ। इसके पीछे कारण था कि कुछ बालक विद्यालय में **जल्दी सीखते** कुछ धीरे। इसको जानने का प्रयास शिक्षकों द्वारा किया गया था।
- बीने एवं साइमन द्वारा दोनों तरह के बालकों को अलग–अलग शिक्षण देना प्रारम्भ किया था एवं **प्रश्नावली** का निर्माण किया जिसे बिने साइमन स्केल नाम से जाना जाता है।
- व्यक्तिगत विभिन्नता के परिणामस्वरूप अल्फ्रेड बिने एवं साइमन द्वारा व्यक्ति की **मानसिक योग्यता** को मापने के लिए बुद्धि परीक्षण 1905 में किया गया था तब 30 प्रश्न थे। 1908 में 34 प्रश्न एवं 1951 में 50 प्रश्न रखे गये थे।
- 1916 में बिने ने स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में अपने सहयोगी टरमन के साथ मिलकर संशोधन किया इसमें 90 प्रश्न रखे गये थे।
- जर्मन मनोवैज्ञानिक **स्टर्न** द्वारा बुद्धि मापदण्ड के स्थान पर **बुद्धिलब्धि** नाम दिया।

$$I.Q. = \frac{M.A.}{C.A.} \times 100$$ या

बुद्धि लब्धि मानसिक आयु/वास्तविक आयु $\times 100$

- **बिने साइमन टेस्ट** (परीक्षण) के पिता बिने है इनका संशोधित रूप स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण माना जाता है।
- थर्स्टन द्वारा 11–17 **वर्ष** के बालकों हेतु एक प्राथमिक मानसिक योग्यता परीक्षण विकसित किया गया है।
- भारत में बुद्धि परीक्षण सबसे पहले राइस द्वारा 1922 में किया गया था। इनके बाद मोहसिन द्वारा 1930 में प्रारम्भ किया गया था।

✦ बुद्धि का पास मॉडल (Pass Model of Intelligence)

- यह मॉडल सन् 1994 में जे.पी. दास किरवी और नागलिरी के द्वारा विकसित किया गया था।

➢ पास मॉडल का अभिप्राय निम्न कूट संकेतन के आधार पर 4 संज्ञानात्मक कार्य संपन्न होते हैं–

(i) योजना (Planning or P)

(ii) अवधान/उत्तेजन (Attention/Arousal or A)

(iii) समकालिक (Simultaneous or S)

(iv) आनुक्रमिक (Successive or S)

✦ बुद्धि परीक्षण के प्रकार (Types of Intelligence Test)

क्र.सं.	व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण	सामूहिक बुद्धि परीक्षण
1.	एक समय में एक व्यक्ति पर संचालित	एक समय में अनेक व्यक्ति पर
2.	यह परीक्षण महंगा होता है।	यह परीक्षण सस्ता संचालन होता है।
3.	इसमें समय अधिक लगता है	इसको कम समय में पूरा किया जा सकता है।
4.	परीक्षा लेने वाला प्रशिक्षित होता है	इसका संचालन बिना किसी प्रशिक्षण वाले व्यक्ति द्वारा भी हो सकता है
5.	परीक्षक एवं परीक्षार्थी दोनों आमने–सामने अतः व्यक्ति के व्यवहार की जाँच संभव होगी।	इसमें परीक्षार्थी के व्यवहार का पता नहीं चलता और आमने–सामने संभव नहीं हो पाता है।
6.	यह अधिक विश्वसनीय होता है।	इसमें वस्तु निष्ठता का अभाव पाया जाता है।
7.	निदानात्मक आधार पर छोटे बच्चों, पिछड़े एवं मन्द बुद्धि बालकों पर काफी महत्त्वपूर्ण माने जाते है।	इसमें भी किया जा सकता है पर व्यक्तिगत जितना नहीं
8.	छोटे बच्चों पर आसानी से यह परीक्षण किया जाता है।	यह 9–10 वर्ष की आयु से नीचे वाले बालकों पर नहीं किया जाता है।

1. व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण–

क्र.सं.	शाब्दिक	अशाब्दिक
1.	बिने साइमन बुद्धि परीक्षण (1905)	1. भाटिया बैटरी परीक्षण (1955)
		कोहज ब्लॉक डिजाइन परीक्षण
		एलेक्जेण्डर का पास अलॉग परीक्षण
		पैटर्न ड्राइंग परीक्षण
		तात्कालिक स्मरण परीक्षण
		चित्र पूर्ति परीक्षण
2.	बिने साइमन बुद्धि परीक्षण (1911)	2. मैरिल पामर का ब्लॉक बिल्डिंग परीक्षण
3.	स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण (1916)	3. मिनेसाटा पूर्व विद्यालय परीक्षण
4.	बर्ट का तर्क परीक्षण	
5.	वेश्लर वैवेल्यू परीक्षण	
6.	जोशी की मानसिकता परीक्षण	

- ☞ ''सृजनात्मकता **शैशवकाल से किशोरावस्था** तक विकास में अस्थिरता रहता है''– टोरेन्स
- वर्तमान में सृजनात्मकता के 39 परीक्षण प्रचलित है।
- सबसे प्रसिद्ध सृजनात्मक परीक्षण– **टोरेन्स, गेजल्स, जैक्सन व मेडनिक के है।**
- मेडनिक का **RAT** (Remote Association test) है।
- फ्लेनागर का (Measurement of Ingenaity) व (Barron welsh Art Scale) प्रमुख है।
- सृजनशीलता के **एक क्षेत्र न होकर** अनेक क्षेत्र होते हैं।
- सृजनात्मकता **मौलिक कार्य** करने की वह क्षमता जिसमें की पूर्व अनुभवों को इस प्रकार उपयोग किया जाये जिसमें और नवीनता देखी जा सके।
- **पासी द्वारा** निर्मित सृजनात्मक परीक्षण के कितने भाग है– 6
- अपसारी एवं अभिसारी चिंतन बताये– गिलफोर्ड द्वारा
- ☞ ''बुद्धि परीक्षणों के उच्च अंक इस बात के द्योतक नहीं है कि व्यक्ति सृजनशील भी होगा''– बुचर
- **वैलास** व **कोगन** ने बताया कि बुद्धि और सृजनशीलता दोनों को अलग–अलग तरह से मापा जाता है।
- ☞ ''विद्यार्थियों को ऐसी समस्याएँ देने का कार्य हो ताकि वे समस्या समाधान के सक्रिय खोज या परिकल्पना का निर्माण कर सके''– मायर्स
- **झंझावत विधि**– इसके प्रतिपादक **ऑसबर्न** है। इसमें एक समस्या पर सभी लोगों द्वारा विचार किया जाता है और समस्या समाधान हेतु विचार प्रस्तुत किये जाते हैं।
- इसमें तनावमूक्त, सोहार्द, **मैत्रीयुक्त** एवं मनोरंजन पूर्ण वातावरण रखना होता है। इसमें वैसे **चालिस बालकों** तक का समूह बनाया जा सकता मगर प्रभावी प्रक्रिया हेतु **आठ** या **दस** बालकों का समूह बनाया जाता है। इसमें विद्यार्थियों को **स्वतंत्र विचार** प्रस्तुत करने हेतु प्रेरणा प्रदान करनी चाहिये।
- सृजनशीलता के पोषण एवं विकास में निम्न बाधाएँ आती है– आदत जनित, **प्रत्यक्षीकरण**, अभिप्रेरणात्मक, **संवेगात्मक**, सांस्कृतिक बाधाएँ।
- सृजनाशीलता के विकास हेतु जेफरी बॉमगार्टनर द्वारा कुछ तत्व बताये गये हैं– **झझावत विधि का उपयोग**, टी.वी. नहीं देखनी चाहिये, अपने मस्तिष्क का व्यायाम करें, समस्या को परिभाषित करें, **संगीत सुनना**।
- ☞ ''सृजनात्मक **कलाकारों** के जीवन में अधिक व्यापक रूप से पाई जाती है''– सुरेश भटनागर
- सृजनात्मक प्रक्रिया के कुछ स्तर है जो तैयारी, **प्रेरणा**, प्रकट होना बताये गये– मन द्वारा
- **बहु–विध** उत्पादन योग्यता परीक्षण– शर्मा
- सृजनशीलता के प्रमुख प्रवाह, **लचीलापन**, मौलिकता, विस्तारीकरण आदि।
- फिगरल फॉर्म का सम्बन्ध किससे है– **सृजनात्मकता से**
- सृजनात्मक पठन तकनीकी– इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को साहसी बनाना है। साथ ही अपने भावों को खुलकर अभिव्यक्त करना, **आलोचना करना**, समझना है।
- विचार पुस्तक तकनीक– इसमें ऐसी पुस्तकों का निर्माण स्वयं द्वारा (टोरेन्स द्वारा) करना जिसमें **50–100 पृष्ठ** हो प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र और कुछ निर्देश लिखे हों जिसमें चित्र के विषय में विद्यार्थी जो कुछ सोचता लिख सके।
- साइनेक्टिक्व (गॉर्डन द्वारा)– इसका उपयोग **सृजनात्मक विकास** हेतु किया जाता है। जानी–पहचानी **चीज** को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वह कभी देखी नहीं हो। कोई लिखा अक्षर कॉच में विपरीत आकृति को पहचानना।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. हॉवर्ड गार्डनर ने प्रस्तावित किया कि बुद्धि **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) केवल आनुवंशिकता से प्रभावित होती है, वातावरणीय कारकों से नहीं।
(2) प्रमुख रूप से याद करने और रटने के बारे में होती है।
(3) मुख्य रूप से भावनात्मक अधिगम के बारे में होती है।
(4) को अलग–अलग प्रकार से विभाजित किया जा सकता है।
(4)

2. हॉवर्ड गार्डनर के अनुसार एक वैज्ञानिक .... बुद्धि का उच्च प्रदर्शन करेगा जबकि एक मूर्तिकार में .... बुद्धि की उच्च बुद्धिमत्ता होगी। **(CTET L-1 14-12-2024)**
(1) स्थानिक; गतिसंवेदी (2) प्रकृतिवादी; स्थानिक
(3) ट्रांसडक्टिव; स्थानिक (4) तार्किक–गणितीय; गतिसंवेदी
(4)

3. हॉवर्ड गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत का प्रस्ताव है कि : **(CTET L-2 14-12-2024)**
(1) बुद्धि समय के साथ बदलती है।
(2) बुद्धि मुख्य रूप से आनुवंशिक विरासत में मिलती है।
(3) बुद्धि को सटीक रूप से मापा जा सकता है और सटीक रूप से विधेय किया जा सकता है।
(4) बुद्धिमत्ता अकादमिक सफलता का सफलतापूर्वक अनुमान लगा सकती है। (1)

4. निम्नलिखित में से कौन सा गिलफोर्ड द्वारा प्रतिपादित बुद्धि के त्रिआयामी सिद्धांत के आयामों एवं उसके तत्वों का सही मिलान नहीं है? (2023, IInd ग्रेड)

6 अभिप्रेरणा (Motivation)

(अर्थ एवं अधिगम की प्रक्रिया में भूमिका, उपलब्धि अभिप्रेरणा)

(Meaning and role in the process of learning, achievement motivation.)

❒ अभिप्रेरणा का अर्थ (Meaning of Motivation)

- किसी कार्य को करने के लिए जो **कारक** शरीर को गतिमान करते हैं उनका सम्बन्ध **अभिप्रेरणा** से लगाया जाता है।
- सामान्य अर्थों में अभिप्रेरणा एक आंतरिक इच्छा या भावना है जो किसी कर्मचारी, व्यक्ति, बालक, छात्र को पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु **कार्य करने के लिए** उत्प्रेरित करती है वैसे देखा जाये तो यह प्रबंध का वह भाग जो व्यक्तियों की भावनाओं, इच्छाओं आवश्यकताओं आदि का अध्ययन कर उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयास करता है, जिससे व्यक्ति कार्य करने को तत्पर होकर **संगठन के** लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु अपना अधिकतम प्रदान करता है।

- **Motivation** एक अंग्रेजी शब्द है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के **Motum** से हुई जिसका अर्थ **Move Motor** या **Motion** से होता है। जिसका अभिप्राय **गति करना** या **आगे की ओर बढ़ना** होता है।
- इस प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान में अभिप्रेरणा का अर्थ मूल्य, लक्ष्य, उद्देश्य, प्रोत्साहन, **आवश्यकता,** अन्तर्नोद से लगाया जाता है।
- अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा का अर्थ अलग–अलग बताया है।
  अभिप्रेरणा को जिज्ञासा–ब्लेन के द्वारा बताया गया।
  अभिप्रेरणा को **नियंत्रण** डी–चार्मर्स द्वारा बताया गया।
  अभिप्रेरणा को **आत्मसम्मान** कपूर स्मिथ द्वारा बताया गया।

➢ अभिप्रेरणा के उपनाम– अभिप्रेरणा को **सुनहरी सड़क, सीखने का हृदय, सीखने का स्वर्ण पथ भी कहा जाता है।**

❒ अभिप्रेरणा की परिभाषाएँ (Definitions of Motivation)

- अभिप्रेरणा एक परिकल्पना पर आधारित प्रक्रिया है, जो प्राणी के व्यवहार से संबंध रखती है।

☞ हिलगार्ड ने अभिप्रेरणा के 4 प्रमुख घटक बताए हैं–
(i) आवश्कता (Need)– N (ii) चालक (Driver)– D
(iii) प्रोत्साहन/उद्दीपन (Incentives)– I
(iv) प्रेरक (Motives)– M

☞ ''अभिप्रेरणा, सीखने का सर्वोत्तम राजमार्ग है।''– स्कीनर

☞ ''व्यक्ति की उपलब्धि योग्यता एवं अभिप्रेरणा पर ही निर्भर करती है।''–वुडवर्थ

☞ ''अभिप्रेरणा के अभाव में प्राणी की कोई भी अनुक्रिया या व्यवहार सम्भव नहीं है''–मार्टिमर एपल

☞ ''अच्छा **अधिगम,** प्रभावपूर्ण अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है''– फ्रेन्डसन

☞ **''कार्य को प्रारम्भ करना,** जारी रखना एवं नियमित करने की प्रक्रिया ही अभिप्रेरणा है''– गुड

☞ ''अभिप्रेरणा में हम **क्यों** का अध्ययन करते है हम **खाना क्यों** खाते, हम **प्यार क्यों** करते, हम **शिक्षा क्यों** प्राप्त करते हैं''– क्रेच व क्रेचफिल्ड

☞ ''सीखने की गति सर्वोत्तम होगी यदि प्राणी अभिप्रेरित है''– एण्डरसन

☞ ''अभिप्रेरणा सीखने के लिए एक आवश्यक शर्त है''– मेल्टन

☞ ''अभिप्रेरणा **व्यवहार का उत्पाद** है''– हेनरी

☞ ''अभिप्रेरणा वे शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाएँ है जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है''– मेक्डूगल

☞ ''अभिप्रेरणा मनुष्य के मन की **आन्तरिक स्थिति** है''– मिस्केल

☞ ''यह एक आन्तरिक कारक है जो क्रिया को प्रारम्भ करने एवं बनाये रखने की प्रवृत्ति होती है''– गिलफोर्ड

☞ ''यह प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मानव व्यवहार के विभिन्न तत्वों की पहचान है जैसे इच्छाएँ, **संकल्प, उद्देश्य,** रुचि प्रमुख है''– थॉमसन

☞ ''आवश्यकता रुपी **आन्तरिक कारक** ही अभिप्रेरणा है''– लॉवेल

☞ ''अभिप्रेरणा क्रिया की एक ऐसी प्रवृत्ति है जो **प्रणोदन** द्वारा उत्पन्न होती है तथा **समायोजन** द्वारा समाप्त होती है''– शेफर

☞ ''प्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें **अधिगम की आन्तरिक** शक्तियाँ उनके वातावरण में विविध लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है''– ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन

❖ अभिप्रेरणा की विशेषताएँ (Nature of Motivation)–

☞ ''अभिप्रेरित व्यवहार चयनात्मक होता है, क्योंकि यह लक्ष्य निर्देशित भी होता है।''– यूंग

☞ ''अभिप्रेरणा मनो–शारीरिक या आन्तरिक प्रक्रिया है, जो आवश्यकताओं से प्रारम्भ होकर आवश्यकता की संतुष्टि तक क्रिया को जारी रखती है।''–नॉवेल

1. अभिप्रेरणा साध्य न होकर साधन मात्र है।
2. इसमें क्रियाशीलता होती है।
3. बाल–व्यवहार में परिवर्तन करती है।
4. चरित्र–निर्माण में उपयोगी होती है।
5. **अनुशासन की भावना** का विकास होता है।
6. सामाजिक गुणों का विकास होता है।
7. कोई बालक अभिप्रेरणा से तीव्र गति से ज्ञान अर्जन सीखता है।
8. कार्य के प्रति आशावादी बनाती है।
9. अभिप्रेरणा का एक निश्चित लक्ष्य होता है।
10. अभिप्रेरणा मानसिक विकास में सहायक है **(क्रो व क्रो के अनुसार)**
11. अभिप्रेरणा एक **भावनात्मक प्रक्रिया** है।
12. तनाव, कुंठा एवं मानसिक संघर्ष से मुक्ति
13. रुचि का विकास (थॉमसन)
14. यह एक सतत् प्रक्रिया है।
15. यह मनोवैज्ञानिक **अवधारणा** है।
16. यह मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि है।
17. अभिप्रेरणा की विभिन्न विधियाँ है।
18. अभिप्रेरणा संतुष्टि का कारण नहीं बल्कि **परिणाम** है।
19. अभिप्रेरणा में सम्पूर्ण व्यक्ति अभिप्रेरित होता है न कि उसका भाग।
20. **प्रबंधकीय कार्यों का आधार**

- इस प्रकार मनुष्य को सक्रिय एवं गतिशील बनाया रखा जा सकता है। अभिप्रेरणा के महत्त्व को लिकर्ट द्वारा **"प्रबन्ध का हृदय कहा"** था इसके द्वारा **मानवीय कार्यक्षमता** में वृद्धि की जा सकती है।

21. **संसाधनों का सदुपयोग होता है।**
22. निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।
23. **कार्य संतुष्टि में अभिवृद्धि होती है।**
24. **मनोबल में वृद्धि देखने को मिलती है।**
25. अभिप्रेरणा विभिन्न व्यवहार के प्रबंध की एक कुँजी है।
26. अभिप्रेरणा एक मनो–शारीरिक एवं व्यावहारिक क्रिया है।

☞ "अभिप्रेरणा व्यावहारिक प्रबंध की एक कुँजी है तथा निष्पादित रूप में प्रबंध का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है"– ब्रीच

❖ अभिप्रेरणा के स्त्रोत (Source of Motivation)

1. **आवश्यकताएँ (Need)–** मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता को अभिप्रेरणा के लिए **पहला कदम** बताया है। मनुष्य की आवश्यकता पूरी होते ही उसके **शारीरिक तनाव** की समाप्ति हो जाती है। शरीर में **किसी चीज की कमी** का होना एक आवश्यकता है **जैसे–** जल, वायु, भोजन आदि।

   शारीरिक– भोजन, **पानी**, काम

   सामाजिक– सुरक्षा, प्रतिष्ठा, **स्नेह, आत्म सम्मान**, साथी बनना।

- इन सभी की कमी का होना व्यक्ति को **उत्तेजित करना** है।

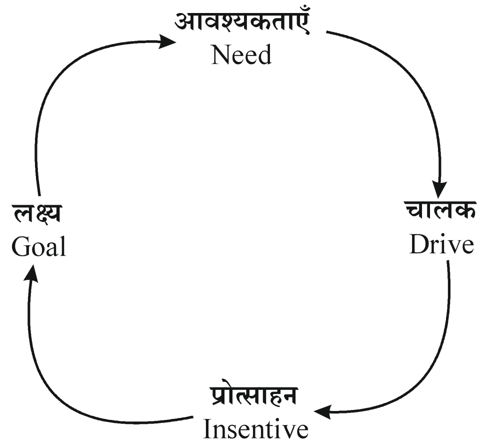

अभिप्रेरणा के स्त्रोत

2. **चालक/प्रणोद/अन्तर्नोद (Drive)–** प्राणी की आवश्यकताएँ **अंतर्नोद** को जन्म देती है। जब किसी व्यक्ति में किसी चीज के प्रति आवश्यकता उत्पन्न होती है तो उससे उस व्यक्ति में उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए **क्रियाशीलता बढ़ती** है। इसी को चालक कहते हैं। प्राणी की आवश्यकताएँ उनसे सम्बन्धित चालकों को जन्म देती है **जैसे–**

- **भोजन** प्राणी की आवश्यकता है यह आवश्यकता भूख चालक की उत्पत्ति को जन्म देती है।
- पानी की आवश्यकता "प्यास चालक" को जन्म देता है।

☞ **"चालक**, शरीर की एक आन्तरिक दशा है, जो एक विशेष प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरणा प्रदान करती है"–

बोरिंग लेंगफिल्ड और वेल्ड

✦ अंतर्नोद–

(1) शारीरिक

(i) भूख, (ii) प्यास, (iii) नींद, (iv) कामेच्छा

(2) मानसिक

(i) सामान्य, (ii) प्रतिष्ठा, (iii) स्नेह

3. **प्रोत्साहन (Insentive)–** इसका सम्बन्ध **बाह्य वातावरण** या **बाह्य वस्तुओं** से होता है जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है तथा जिसकी प्राप्ति से उसकी आवश्यकता की पूर्ति तथा **चालक में कमी** होती है। किसी वस्तु की आवश्यकता उत्पन्न होने पर उसको पूर्ण करने के लिए **चालक उत्पन्न** होता है एवं जिस वस्तु से यह आवश्यकता पूर्ण होती है, उसे उद्दीपन कहते हैं जैसे–

- भूख एक चालक है इसको सन्तुष्ट करता है– **भोजन**
- प्यास एक चालक है इसको सन्तुष्ट करता है– **पानी**

4. **अभिप्रेरक/लक्ष्य/आत्मसंतुष्टि – प्रेरक या प्रेरण** व्यक्ति की एक आन्तरिक स्थिति है, जो उसे एक **विषय दिशा** में क्रिया करने के लिए तब उस सक्रिय रखती है जब तक कि उसका लक्ष्य

✦ बेलारूस व फाफामैन– आपके अनुसार प्रोत्साहन दो प्रकार के होते हैं–

- **धनात्मक प्रोत्साहन**– भोजन प्रदान करना, **पानी पिलाना,** प्रशंसा करना।
- **ऋणात्मक प्रोत्साहन**– बिजली के झटके देना, दण्ड देना।

➢ **आलोचना**– यह सिद्धान्त **बाहय कारकों** पर प्रभाव डालता है जबकि आन्तरिक कारकों पर प्रभाव नहीं डालता है।
- परन्तु सच्चाई यह है कि अगर वातावरण में प्रोत्साहन स्पष्ट रूप से मौजूद है, लेकिन व्यक्ति में **सम्बन्धित प्रणोद** नहीं है तो सिर्फ **प्रोत्साहन** से अभिप्रेरित व्यवहार उत्पन्न नहीं हो पाएगा।

➢ **उदाहरण**– मान लिजिए कि एक **बड़े गिलास** में ठण्डा पानी आपके पास रखा जाता है परन्तु आपको **प्यास** नहीं है, क्योंकि कुछ देर पहले पानी पिया है।

- **प्रोत्साहन** ही जरूरी नहीं बल्कि प्रणोद भी जरूरी है।

5. अभिप्रेरणा का विरोधी–प्रक्रिया का सिद्धान्त **(Accused Theories of Motivation)**– इस सिद्धांत के प्रतिपादक **सोलोमेन एवं कुरविट** है।
- आपने माना कि जो **कार्य हमें सुख देने** वाले होते हैं उसको हम निरन्तर करते एवं दुःख देने वाले को छोड़ देते हैं, इसको **सवेंग का सिद्धान्त** भी कहते हैं।

➢ **उदाहरण**– आटा चक्की का उदाहरण देकर बताया कि प्रारम्भ में उसकी आवाज अजीब सी महसूस होती है, लेकिन धीरे–धीरे वह व्यक्ति के व्यवहार में ढल जाती है। लेकिन धीरे–धीरे वह आराम से सहन करना सीख लेता है।
- पहले अफीम खाना कुछ अलग लगता है मगर आदत के बाद वह निरन्तर खाने लगता है।

6. अभिप्रेरणा का क्षेत्रीय सिद्धान्त **(Field Theories of Motivation)**– इस सिद्धांत के प्रतिपादक **कुर्त लेविन** है।
- व्यक्ति का व्यवहार हमेशा उसके **वातावरण** से प्रभावित होता है क्योंकि व्यक्ति आन्तरिक वातावरण की अपेक्षा **बाहय** से प्रभावित करता है, क्योंकि यह बाहय वातावरण अनेक क्षेत्रों से प्रभावित होता है।
- आपने बताया कि किसी परिस्थिति विशेष में व्यक्ति का व्यवहार उन तत्वों द्वारा परिचालित होता है जो आस–पास के वातावरण के बीच में कार्यरत रहते हैं यदि वातावरण में **उत्साह** मिलता है, तो वह **आशावान** बना रहेगा, परन्तु **भयपूर्ण** वातावरण में निराशा ही हाथ लगेगी।

7. अभिप्रेरणा का द्विघटक सिद्धान्त **(Two Component Theories of Motivation)**– इस सिद्धांत के प्रतिपादक हर्जबर्ग हैं।
- यह सिद्धांत सन् 1966 में दिया गया।
- **द्विघटक विचारधारा** के प्रतिपादक मनोवैज्ञानिक फैडरिक हर्जबर्ग है। आपने अपने साथियों के साथ **Psychological Service Pittsburgh** में करीब **200 इंजीनियर्स** पर शोध किया एवं उनसे कार्य के बारे में विचार जानकर इस विचारधारा का प्रतिपादन किया।
- हर्जबर्ग के अनुसार जब व्यक्ति **कार्य स्थल** पर अपने कार्य से असंतुष्टि प्राप्त करता है तो उसका कारण वहाँ का **वातावरण** माना गया है इस वातावरण को जो घटक प्रभावित करते है, उन्हें स्वास्थ्य या आरोग्य घटक कहते हैं और जब व्यक्तियों के कार्य करने के लिए संतुष्टि प्राप्त करते हैं तब वह घटक अभिप्रेरक या कार्य घटक कहलाता है।

(i) आरोग्य घटक **(Hygiene)**– जो संगठन के वातावरण सम्बन्धित है इसमें कम्पनी की **नीति प्रशासन, पर्यवेक्षण, वेतन,** स्थिति, सुरक्षा व कार्य दशा है।
- ये **निम्न स्तरीय आवश्यकता का प्रतीक** है वातावरण से सम्बन्धित है। इसको शारीरिक आवश्यकता कहा जाता है।

(ii) अभिप्रेरक (कार्य घटक) **(Motivation)**– ये **सन्तुष्टि** के वास्तविक कारक है उच्च स्तरीय आवश्यकता को बताते हैं इसमें उपलिब्ध, **कार्य, रुचि, उत्तरदायित्व** व प्रगति को शामिल करते हैं। इसको मनोवैज्ञानिक आवश्यकता कहा जाता है।

8. अभिप्रेरणा का ई.आर.जी का सिद्धान्त **(ERG Theories of Motivation)**– इस सिद्धांत के प्रतिपादक एल्डरफर हैं।

→ **Existence**– अस्तित्वजन्य

→ **Relationess**– सम्बन्धजन्य

→ **Growth**– वृद्धि

- इस सिद्धान्त के अनुसार बताया गया कि किसी **निर्धारित क्षण** में एक से अधिक आवश्यकता होने पर व्यक्ति को अभिप्रेरित किया जा सकता है। किसी की **प्राथमिकता** एवं **अभिप्रेरणा** गतिशील होती है वे समय के साथ अस्तित्व, सम्बन्धता एवं वृद्धि के स्तरों के बीच एक जगह से दूसरी जगह पर जाती रहती है।

9. अभिप्रेरणा का X व Y का सिद्धान्त **(X & Y Theories of Motivation)**– इस सिद्धांत के प्रतिपादक **मैकग्रेगर** हैं।
- अभिप्रेरणा की एक्स एवं वाई विचारधारा का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक **डगलस मेकग्रेगर** ने अपनी पुस्तक **Human Side of Enterprises** में किया इसमें विचारधारा में मानव अभिवृत्तियों एवं व्यवहार के संबंध में परस्पर दो विरोधी विचारधाराएँ प्रस्तुत की गई हैं।
- आपने कार्यशील व्यक्तियों की कार्य के प्रति उनकी धारणा के आधार पर यह सिद्धान्त दिया।

- ERG का सम्बन्ध है– एल्डरफर
- ''प्रभावी अधिगम प्रभावशाली प्रेरणा पर निर्भर करता है''– फ्रेंडसन
- डिसेको ने अभिप्रेरणा देने वाले **चार घटक** बताये– उत्तेजना, आंकाक्षा, प्रोत्साहन, दण्ड।
- सत्ता अभिप्रेरक एक प्रमुख अर्जित है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणा के बीच संबंध का सही वर्णन करता है। **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) आंतरिक अभिप्रेरणा बाह्य अभिप्रेरणा को प्रभावित कर सकती है, लेकिन बाह्य अभिप्रेरणा किसी भी संभावित तरीके से आंतरिक अभिप्रेरणा को प्रभावित नहीं कर सकती है।
(2) आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणाएँ दोनों एक व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकती है, लेकिन वे एक–दूसरे से स्वतंत्र रूप से कार्य करती है।
(3) आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणाएँ एक–दूसरे के साथ जटिल तरीके से अंत:क्रिया कर सकती है, जिसमें एक प्रकार की अभिप्रेरणा दूसरे को प्रभावित करती है।
(4) आंतरिक अभिप्रेरणा और बाह्य अभिप्रेरणा परस्पर अनन्य है, व्यक्तियों को एक ही समय में दोनों से अभिप्रेरित नहीं किया जा सकता है। (2)

2. शिक्षक छात्रों में आंतरिक प्रेरणा कैसे बढ़ा सकते हैं? **(CTET L-2 15-12-2024)**
(1) 'नकारात्मक पुनर्बलन' देकर
(2) 'इनाम और पुरस्कार' देकर
(3) 'सीखने का आनंद' पैदा करके
(4) 'किसी सजा को हटाने' का प्रलोभन देकर (3)

3. निम्न में से कौन सा बाहरी अभिप्रेरणा का सही वर्णन करता है? **(CTET L-1 14-12-2024)**
(1) अभिप्रेरणा जो आंतरिक कारकों से आती है।
(2) अभिप्रेरणा जो वातावरणीय परिणामों से आती है।
(3) अभिप्रेरणा जो व्यक्तिगत संतुष्टि की भावना से आती है।
(4) अभिप्रेरणा जो कार्य के व्यक्तिगत आनंद से आती है। (2)

4. दस साल की काकुली गणित के एक कठिन सवाल से जूझ रही है। उसके समस्या समाधान कौशल को बढ़ाने के लिए उसकी शिक्षिका क्या कर सकती है? **(CTET L-2 14-12-2024)**
(1) उसे समस्या का समाधान दें
(2) उसे समस्या को छोड़ने और अगले एक पर जाने के लिए कहें
(3) कोशिश करते रहने के लिए उसे प्रोत्साहित करें और जरूरत पड़ने पर आलम्बन प्रदान करें
(4) कड़ी से कड़ी सजा दें ताकि भविष्य में ऐसा दोबारा न हो। (3)

5. निम्नलिखित में से कौन सी एक प्राथमिक अभिप्रेरकों की विशेषता नहीं है? **(PTI IInd Grade G.K. 2023)**
(1) सार्वभौमिक (2) जन्मजात
(3) अर्जित (4) अन्तर्जात (2)

6. निम्नलिखित में से कौन सा तत्त्व 'अभिप्रेरणा चक्र' से संबंधित नहीं है? **(PTI IInd Grade G.K. 2023)**
(1) आवश्यकता (2) संवेग
(3) प्रोत्साहन (4) अन्तर्नोद (2)

7. अभिप्रेरणा क्या है, निम्नलिखित में से कौन सा सर्वोत्तम उदाहरण है? **(IInd ग्रेड, 2023)**
(1) रीता ऊर्जित है, उच्च लक्ष्य निर्धारित करती है, यथेष्ट प्रयासों को बनाये रखती है और कक्षा में ए ग्रेड बना लेती है।
(2) मानसी आने वाले विद्यालय के वर्ष के विषय में भावुक है और अच्छा करना चाहती है।
(3) कविता जो करना चाहती है उसमें अपना ध्यान निर्देशित करने में अच्छी है।
(4) निशा मेहनती है, अपने शैक्षिक कार्य के विषय में धनात्मक भावनाएँ अनुभव करती है। (1)

8. चुनौतीपूर्ण और कठिन निष्पादन में प्रवीणता की संतुष्टि प्राप्ति की प्रत्याशा कहलाती है– **(IInd ग्रेड, 2023)**
(1) बुद्धि (2) अधिगम
(3) उपलब्धि अभिप्रेरणा (4) समायोजन (3)

9. ए. मॉस्लो द्वारा मानवीय अभिप्रेरणा को समझने हेतु आधारभूत आवश्यकताओं के पाँच वर्ग बताए गए हैं। निम्न में से कौन सा वर्ग मॉस्लो द्वारा नहीं दिया गया है? **(IInd ग्रेड, 2023)**
(1) उपलब्धि आवश्यकता
(2) सुरक्षा आवश्यकताएँ
(3) आत्मयथार्थीकरण (आत्मबोध) की आवश्यकता
(4) सम्बद्धता व प्यार की आवश्यकताएँ (1)

10. यदि कोई बालक अपने निष्पादन में श्रेष्ठता को प्राप्त करना चाहता है, तब उसमें कौन सा अभिप्रेरणात्मक बल कार्य करता है? **(IInd ग्रेड, 2023)**
(1) उपलब्धि अभिप्रेरणा (2) शक्ति अभिप्रेरणा
(3) परोपकारिता अभिप्रेरणा (4) सम्बन्ध बनाने की अभिप्रेरणा (1)

11. अभिप्रेरणा की प्रक्रिया का आरंभ होता है– **(IInd ग्रेड, 2023)**
(1) अभिप्रेरकों से (2) उद्दीपनों से
(3) आवश्यकताओं से (4) चालकों से (3)

7 व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Differences)

(अर्थ एवं स्रोत, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, प्रतिभाशाली बच्चे, धीमी गति में सीखने वाले, अपराधी)

(meaning and sources, education of children with special need-Gifted, slow learners and delinquent.)

व्यक्तिगत विभिन्नता का अर्थ (Meaning of Individual Differences)

- **बालक की वे विशेषताएँ** जो सोचने, समझने, सीखने, समायोजन करने, कार्यप्रणाली, गतिशीलता आदि में भिन्नता देखी जाती है। वह **विशिष्ट बालक** कहलाता है।
- विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है। हम बालकों में **समायोजन** को मापते हैं और किसी बालक के समायोजन की माप केन्द्रीय मान से अधिक, तो किसी की कम होती है। इस प्रकार जब भिन्नता देखने को मिलती है। वह विशिष्ट बालक कहलाता है।

☞ **नोट**– टायलर ने वैयक्तिक विभिन्नता को सार्वभौमिक घटना माना है।
- सर्वप्रथम गाल्टन ने वैयक्तिक विभिन्नता की तरफ ध्यान दिया था।
- स्कीनर ने माना कि यदि शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार चाहता है तो उसे व्यक्तिगत विभिन्नता का ज्ञान होना आवश्यक है।

➢ **रिली व लेविस** ने विशिष्ट बालकों को छः भागों में बांटा है–
(i) **प्रतिभाशाली** बालक
(ii) **मानसिक मंद** बालक
(iii) **अधिगम अक्षमता** वाले बालक
(iv) **मानसिक रोग** ग्रस्त बालक
(v) **शारीरिक** रूप से विकलांग बालक
(vi) **बहु–विकलांगता** से ग्रस्त बालक।

- विशिष्ट बालक को कुछ मनोवैज्ञानिक **'प्रतिभाशाली बालक'** के वर्ग में रखते हैं, कुछ इसे **'मन्द बुद्धि'** या **'पिछड़े बालक'** की श्रेणी में रखते हैं।
- वह बालक जो अपनी **आयु** या सामान्य बालकों से बहुत अधिक भिन्न होते हैं। ये अपनी कक्षा या समूह विशेष के अन्य बालकों की तुलना में अपनी कुछ निजी विशेषता या विशिष्टता रखते हैं।

☞ "मनुष्यों में मनोवैज्ञानिक लक्षणों, शारीरिक मानसिक योग्यताओं एवं चारित्रिक व व्यक्तित्व विभेद को वैयक्तिक विभिन्नता कहते हैं"– वुडवर्थ

☞ "शारीरिक आकार एवं संरचना, बुद्धि, रुचि, मानसिक क्षमताएँ तथा व्यक्तित्व के लक्षणों में मापने योग्य विभिन्नताओं को वैयक्तिक विभिन्नता कहते हैं"– टायलर

☞ "एक समूह के सदस्यों की मानसिक और शारीरिक विशेषताओं में औसत से अधिक विचलन को वैयक्तिक विभिन्नता कहा जाता है।"– जेम्स ड्रेवर

☞ "वैयक्तिक विभिन्नता का अभिप्राय व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से है जिनका मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है"– स्कीनर

✦ **व्यक्तित्व विभिन्नताओं के प्रकार–**
1. शारीरिक विभिन्नताएँ
2. बौद्धिक विभिन्नताएँ
3. लैंगिक आधार पर विभिन्नताएँ
4. मानसिक विभिन्नताएँ
5. क्रियात्मक विभिन्नताएँ
6. दृष्टिकोणों में विभिन्नताएँ
7. संवेगात्मक विभिन्नताएँ
8. गत्यात्मक विभिन्नताएँ
9. विचारों में विभिन्नताएँ
10. व्यक्तित्व विभिन्नताएँ
11. चरित्र में विभिन्नताएँ
12. चरित्र की विभिन्नताएँ
13. रुचि एवं अधिक्षमता की विभिन्नताएँ
14. अधिगम एवं उपलब्धि की विभिन्नताएँ

✦ वैयक्तिक विभिन्नता के कारण
1. वातावरण (Environment)
2. आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा (Economic Condition and Education)
3. आनुवंशिकता (Heredity)
4. लिंग (Sex)
5. आयु एवं बुद्धि (Age and intelligence)
6. परिपक्वन (Maturation)
7. प्रजाति एवं राष्ट्रीयता (Race and nationality)

✦ शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता का महत्त्व
1. शिक्षण विधियों के चयन में सहायक
2. शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में सहायक
3. पाठ्यचर्या निर्माण में सहायक
4. शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण में सहायक
5. छात्रों के वर्गीकरण में सहायक
6. कक्षा के आकार निर्धारण में सहायक

✦ व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित शिक्षण विधियाँ
1. **प्रोजेक्ट विधि**– इसके जन्मदाता किल पैट्रिक हैं।
2. **डेक्रोली विधि**– इसके जन्मदाता बेल्जियम के प्रोफेसर हॉविड डेक्रोली हैं।
3. **विनेटिका विधि**– इसके जन्मदाता कार्लटन वाशवर्न हैं।

- "ऐसे बालक जिनकी बुद्धिलब्धि 140 से अधिक हो उनको प्रतिभाशाली कहा जाता है।"– टरमन
- "ऐसे बालक जिनकी बुद्धिलब्धि 130 से अधिक हो उनको प्रतिभाशाली कहा जाता है।"– क्रो व क्रो
- "प्रतिभाशाली बालक उन 1 **प्रतिशत** बालकों को कहा जाता है। जो सबसे अधिक **बुद्धिमान** होते हैं"– स्किनर व हेरीमेप
- "प्रतिभाशाली बालक **शारीरिक गठन,** सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के गुण, **खेल–कूद** आदि में सामान्य बालकों से श्रेष्ठ होते हैं"– टरमन व ऑडन
- "वह बालक जो सामान्य बुद्धि की दृष्टि से श्रेष्ठ प्रतीत होता है एवं उच्च विशिष्ट योग्यताएँ रखता हो वह **प्रतिभाशाली बालक** कहलाता है"– प्रेम पसरिचा
- "वह **बालक जो निरन्तर** किसी **उच्च कार्य क्षेत्र** में अपनी कार्यकुशलता का परिचय देता है वह **प्रतिभाशाली बालक** कहलाता है।"–हेविंग हर्स्ट
- "जो बालक अपनी **आयु स्तर** के बालकों से किसी योग्यता में अधिक हो और जो हमारे समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है"– कॉलसेनिक
- "सामान्य रूप से उच्च बौद्धिक योग्यता रखने वाला बालक प्रतिभाशाली कहलाता है"– ड्रेवर

❖ प्रतिभाशाली बालकों का चयन–

1. **शिक्षक के मत अनुसार**
2. व्यक्तिगत परीक्षण के आधार पर
3. **सामूहिक परीक्षण के आधार पर**
4. निष्पादन परीक्षण के आधार पर
5. **माता–पिता का साक्षात्कार**
6. विशेषताओं की जाँच के आधार पर
7. पिछली कक्षाओं के प्राप्तांक के आधार पर
8. बुद्धि परीक्षण **द्वारा**
9. अभियोग्यता परीक्षण द्वारा
10. उपलब्धि परीक्षण द्वारा

❖ प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ–

1. **उच्च कोटि का बौद्धिक स्तर**
2. गम्भीर एवं विचारशील प्रकृति
3. **मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा उच्च होती है।**

(A) शारीरिक विशेषताएँ–

- **उत्तम स्वास्थ्य, कठिन मानसिक कार्य करते हैं।**
- **शारीरिक विकास की गति तीव्र**
- सामान्य बालकों की अपेक्षा तुलना में **भार एवं ऊँचाई** अधिक है।
- "प्रतिभाशाली बालक जन्म के समय सामान्य बालक से **डेढ़ इंच** लम्बे होते हैं"– टरमन

(B) मानसिक एवं बौद्धिक विशेषताएँ –

- सीखने, समझने, तर्क करने की क्षमता
- अमूर्त **ज्ञान एवं तथ्यों** को समझने की क्षमता
- विचारों का विशाल एवं भण्डार क्षमता
- **मौखिक चिन्तन** एवं नवीनता
- ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता
- एक या एक से अधिक क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता
- उच्च **कल्पना शक्ति** एवं अन्तर्दृष्टि
- विशाल शब्द भण्डार, **वाक्पटूता** एवं आत्मअभिव्यक्ति
- उच्च स्तर की सहज बुद्धि

(C) शैक्षिक विशेषताएँ–

- **पाठ की पूर्व तैयारी, सरलता से सीखते हैं।**
- परिश्रमी के धनी होते हैं।
- सहायक **पुस्तकों** के धनी, जागरूक एवं शीघ्र प्रत्युत्तर देते हैं।
- **नियमित विद्यालय में उपस्थित होते हैं।**
- कम समय में अधिक परिश्रम एवं फल की प्राप्ति करते हैं।
- **समाचार पत्र, पाठ्य पुस्तकें** नियमित पढ़ते हैं।
- पाठ की पूर्व तैयारी करते हैं।

(D) संवेगात्मक विशेषताएँ–

- **समायोजन में सहायक**
- हमेशा **प्रसन्नचित** होते हैं, सूक्ष्म अवलोकन करते हैं।
- चरित्र एवं व्यक्तित्व उच्च स्तर का होता है।
- **आत्मविश्वासी** एवं जोखिम उठाने वाले
- नवीन जगह, परिस्थिति से शीघ्र समायोजित हो जाते हैं।
- **कठिनाइयों का आसानी से हल करते हैं।**

(E) सामाजिक विशेषताएँ–

- **ईमानदार, उत्तरदायित्व**
- नेतृत्व की विशेष योग्यता
- **विनम्र एवं आज्ञाकारी** स्वभाव
- लोकप्रिय व्यक्तित्व
- उच्च सामाजिक समायोजन
- **सामाजिक दायित्व** लेने में तत्परता
- आत्मविश्वासी एवं विश्वसनीयता
- "प्रतिभाशाली बालक हास्य एवं उदार प्रवृत्ति के होते हैं"– हैरियट

✦ गालाघर ने प्रतिभाशाली बालकों की निम्न विशेषता बताई–

- अधिकतर प्रतिभाशाली बालक का घरेलु जीवन **सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर** सामान्य या औसत बालकों से श्रेष्ठ होता है।

❖ मन्दबुद्धि बालकों का वर्गीकरण

स्तर	वेश्लर	स्टेनफोर्ड
1. न्यून मंदित (Mild)	55–69	52–67
2. सामान्य मंदित (Moderate)	40–54	36–51
3. अत्यधिक मंद (Severve)	25–39	20–35
4. दुर्बोधमन्द (Pro found)	25 से नीचे	20 से नीचे

☞ नोट– पेनरोज ने मानसिक दुर्बलता वाले बालकों को मंगोलिज्म (**Mangolism**) की संज्ञा दी है।

✦ मानसिक मन्दिता के कारण–

(A) **जन्म से पूर्व–**

1. **विषाक्त पदार्थ–** गर्भवती स्त्री में संक्रमित होते हैं तब बालक **मंदित** हो सकता है।
2. नशीले पदार्थों का उपयोग
3. **विकिरण X–रे**
4. शारीरिक, मानसिक बीमारी, रक्तचाप एवं तनाव।
5. **आनुवांशिक कारक**

(B) **जन्म के समय–**

1. **अपरिपक्व जन्म–** 9 माह पूर्व जन्मा बच्चा
2. **प्रसवावस्था की परेशानियाँ–** पर्याप्त चिकित्सा का न मिलना।

(C) **जन्म के पश्चात्–**

1. **तीव्र रोग–** खसरा, चेचक, पीलिया
2. **सीसा विष प्रयोग–** दीवारों के पेन्टस, **पेन्सिल का आगे का हिस्सा**
3. **दुर्घटना–** किसी **दुर्घटना द्वारा** व्यक्ति के शरीर में आन्तरिक ठेस का होना
4. **परिवेश–** सामाजिक, **आर्थिक एवं सांस्कृतिक** वंचन को शामिल किया जाता है।

➢ शिक्षा की व्यवस्था–

- सामाजिक एवं **व्यवसायिक** कौशल का विकास
- न्यूनतम **शैक्षणिक योग्यता** का विकास होना या करना।
- संवेगात्मक सुरक्षा का विकास करना।
- अच्छी आदतों का निर्माण करना।
- परिवार में उत्तरदायित्व निभा सके ऐसे कार्य करना।
- **खेलकूद** एवं **मनोरंजन** का विकास करना।
- समूह में रह सकने की **योग्यता** का विकास करना।
- आवासीय विद्यालय
- विशेष विद्यालय एवं विशेष शिक्षा
- शिक्षण की विधियाँ
- **विशिष्ट पाठ्यक्रम**
- **भाषा** एवं **वाणी** का विकास करना।
- निन्दा व **मानसिक प्रताड़ना** वाले **शब्दों का बचाव** हो।
- अवसर की **समानता** प्रदान करना।
- पूर्व शैक्षिक कार्यक्रम को शामिल करना।
- **पूर्वाग्रह से बचाना।**

7.5 समस्यात्मक बालक (Problem Child)–

- समस्यात्मक बालक वह जिसके **व्यवहार में** कोई ऐसी असामान्य बात होती है जिसके कारण वह **समस्यात्मक** बन जाता है। **जैसे–** चोरी करना, झूठ बोलना आदि, **बच्चों को परेशान करना,** कार्य पूरा न करना, **स्कूल से भाग जाना,** देर से आना।

☞ ''वह बालक जिनका **व्यवहार** या **व्यक्तित्व** किसी बात से गम्भीर रूप से असामान्य होता है''– **वेलनटाइन**

☞ ''239 **विद्यालयी बालकों** पर शोध किया जिनकी उम्र **2–7 वर्ष** की थी आपने पाया कि इनमें **क्रोधी स्वभाव,** गलत आदतें, अप्रसन्नता, लापरवाही, **ध्यान का अभाव** आदि विशेषताएँ पायी जाती है ऐसे बालक **समस्यात्मक** होते हैं।''– **कमिंग**

☞ ''20 **गम्भीर बालकों** पर शोध किया था''– **हैंडर्सन**

☞ ''आपने पाया कि बहुत से बच्चे **कामुकता** एवं **असामाजिक अश्लील** बातों पर अपना ध्यान अधिक देते हैं''– **किंस**

☞ ''समस्यात्मक बालक **दो प्रकार** के होते हैं''– **सिरिल बर्ट द्वारा**

(i) झगड़ालू एवं उत्तेजित व्यवहार
(ii) दमित्त बालक

- इन बालकों का व्यवहार गम्भीर रूप से **असामान्य** होता है। यह भी देखा गया कि समस्यात्मक बालक कक्षा में पिछड़ा हो, तो इनकी **मानसिक क्षमता** औसत या औसत से अधिक भी हो सकती है। प्रत्येक **अपराधी बालक** समस्यात्मक होता है लेकिन प्रत्येक **समस्यात्मक बालक** अपराधी हो आवश्यक नहीं है और समस्यात्मक बालक **स्थायी समस्या** लेकर नहीं होता कुछ समय पश्चात् **परामर्श एवं मार्गदर्शन** द्वारा सही हो जाता है।

❖ समस्यात्मक बालकों के प्रकार–

- **स्पार्क के अनुसार–**

1. चिंतन अभाव वाले बालक
2. **कानाफूसी करने वाले**
3. कार्य में असावधानी वाले
4. कक्षा में पढ़ाई के बीच बाधा पैदा करने वाले
5. **बैचेनी पैदा करने वाले**
6. अधिक कौतुहल पैदा करने वाले

8 शिक्षा में अवधारणा और निहितार्थ

(स्व–अवधारणा, अभिवृत्ति, रुचि और आदतें, अभियोग्यता और सामाजिक कौशल)

(Concept and Implications in Education of)

(Self concept, attitudes, interest & habits, aptitude and social skills.)

8.1 स्वधारणा, स्वसम्प्रत्यय, आत्म–सम्प्रत्यय (Self Concept)

✦ आत्म–संप्रत्यय का अर्थ (Meaning of Self Concept)

- स्वयं को जानना ही आत्म सम्प्रत्यय है। मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने आत्म सम्प्रत्यय को अहम् (इगो) कहा है।
- आत्म एक बहुआयामी सम्प्रत्यय है। हम शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से कौन है। हम अपने **जन्म के समय** से ही अन्यों के माध्यम से अपना **आत्म सम्प्रत्यय** का विकास करते हैं।
- अपने अनुभव एवं उपलब्ध पूर्व ज्ञान के आधार पर व्यक्ति दूसरों के प्रति जैसी धारणा बनाता है, वैसी ही धारणा या छवि स्वयं के बारे में भी बनाता है, इसे ही 'आत्म सम्प्रत्यय' कहा जाता है।
- आत्म सम्प्रत्यय को शारीरिक आधार पर भी देखा जाता है **जैसे**– वह पतला, मोटा आदि हो सकते हैं।
- आत्म सम्प्रत्यय शारीरिक विशेषताओं (मेरी नाक चौड़ी है, मैं लम्बा हूँ), सामाजिक भूमिकाएँ (मैं भारतीय नागरिक हूँ) व्यक्तिगत लक्षण (मैं शरारती हूँ।), रुचि व कौशल (मैं संगीत प्रेमी) आदि आत्म सम्प्रत्यय है जो कि बहुआयामी है।
- **आत्म–सम्प्रत्यय** शब्द का प्रयोग सबसे पहले दर्शनशास्त्र विषय में किया गया था।
- प्रथम बार आत्म–सम्प्रत्यय की धारणा देकार्ते द्वारा दी गयी।
- बाद में विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक **Principal of Psychology** में आत्म सम्प्रत्यय की धारणा दी थी।

☞ ''व्यक्ति के **गुणों और व्यवहार** आदि के विषय में उसका स्वयं का मन जो मत रखता है, वह उसका **आत्म सम्प्रत्यय** है।'' –विलियम जेम्स

- प्रत्येक व्यक्ति का आत्म सम्प्रत्यय **अपने विचारों पर** आधारित होता है।
- यह आत्म–सम्प्रत्यय व्यक्तित्व का **केन्द्र बिन्दु** है तथा इस केन्द्र से व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षण या शीलगुण जुड़े हैं।
- आत्म–सम्प्रत्यय रोजर्स के **व्यक्तित्व सिद्धान्त** का एक महत्त्वपूर्ण सम्प्रत्यय है।
- रोजर्स का मानना कि **धीरे–धीरे** अनुभव के आधार **प्रासंगिक क्षेत्र** का एक भाग अधिक विशिष्ट हो जाता है और इस भाग को ही रोजर्स ने आत्मन की संज्ञा दी है।
- आत्म का विकास शैशवावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है।
- रोजर्स व मास्लो दोनों को आत्म–सम्प्रत्यय **की धारणा** को व्यवस्थित करने के लिए जाना जाता है।

✦ आत्म–संप्रत्यय की परिभाषाएँ (Definitions of Self Concept)–

☞ ''आत्म सम्प्रत्यय व्यक्ति का अपने अनुभवों के आधार पर परिणामों का समूह है।''– मिसलैण्ड

☞ ''आत्म–सम्प्रत्यय **व्यक्तित्व का** प्रधान सिद्धान्त है''– कैटल

☞ ''व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और उसके सम्बन्ध में उनकी अभिवृत्ति **और** मूल्यों को ही आत्म–सम्प्रत्यय कहते हैं'' आइजेंक

☞ ''एक व्यक्ति जिस प्रकार से **प्रत्यक्षीकरण** करता है, अथवा जिस ढंग से अपने आप को देखता है उसे **आत्म–सम्प्रत्यय** कहते हैं''– माथुर

☞ ''प्रत्येक व्यक्ति **आदर्श स्व** तक पहुँचने के लिए प्रयासरत रहता है''– कार्ल रोजर्स

☞ ''आत्म–सम्प्रत्यय **व्यक्ति** की विशेषताओं और आत्म कौन एवं क्या है सहित व्यक्ति की अपने बारे में मान्यता है''–रॉय बॉमिस्टर

☞ ''आत्म–सम्प्रत्यय को लोगों के उनके बारे में समग्र **विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोणों** के रूप में परिभाषित किया जाता है''– हिल्गार्ड

☞ ''आत्म–सम्प्रत्यय मान्यताओं, **अभिवृत्तियों** और अभिमतों की जटिल, **संगठित** और गतिशील प्रणाली का योग है जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के बारे में सत्य मानता है''– पर्की

❖ आत्म सम्प्रत्य की विशेताएँ – (Characteristics of Self Concept)

1. आत्म सम्प्रत्यय व्यक्ति का स्वयं का दर्पण है।
2. आत्म सम्प्रत्यय जन्मजात नहीं होकर वातावरण के प्रति होने वाली अंतःक्रियाओं के बाद ही अर्जित किया जाता है।
3. विद्यार्थी का आचरण उसके आत्म प्रत्यक्षीकरण से प्रकट होता है।
4. आत्म सम्प्रत्यय, अधिगम एवं उपलब्धियों को प्रभावित करता है।
5. आत्म सम्प्रत्यय सामाजिक और सीखा हुआ है।
6. आत्म सम्प्रत्यय में स्थायित्व का गुण पाया जाता है।
7. आत्म सम्प्रत्यय में **वैयक्तिक भिन्नता** पाई जाती है।

- मनोवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के प्रति एक खास ढंग से अनुक्रिया करने की एक मानसिक तत्परता होती है।
- मनोवृत्ति में व्यक्ति में **अनुकूलता–प्रतिकूलता** के पहलू पर किसी वस्तु या घटना के प्रति अनुक्रिया करने की तत्परता पाई जाती है।
- किसी बालक की मनोवृत्ति **कला के प्रति,** चित्रकारी, लेखन, गायन में होती है।

☞ **नोट**– अभिवृत्ति में मुख्य रूप से 3 घटक शामिल होते हैं–
1. विचारात्मक (Cognitive)
2. क्रियात्मक (Conative)
3. प्रभावात्मक (Affective)

- अभिवृत्तियों के द्वारा व्यवहार को एक निश्चित मोड़ दिया जाता है।

✦ अभिवृत्ति या मनोवृत्ति की परिभाषाएँ (Definitions of Attitude)–

☞ ''व्यवहार को कोई एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक, तत्परता का नाम अभिवृत्ति है।''– ट्रेवर्स

☞ ''अभिवृत्ति (शरीर अथवा मस्तिष्क की) पूर्व नियोजन या तत्परता की वह अवस्था है, जो सार्थक उद्दीपकों के प्रति पूर्व निश्चित तरीके से प्रतिक्रिया करने में सहायक होती है।''– व्हिटेकर

☞ ''किसी विशिष्ट कार्य के प्रति व्यक्ति की **प्रवृत्तियों व भावनाओं** पूर्वाग्रहों या पक्षपात, विचारों, भय, दबावों तथा मान्यताओं का कुल योग है''– चेव

☞ ''अभिवृत्ति या मनोवृत्ति को व्यक्ति के संसार के किसी अंग के प्रति प्रेरणात्मक, संवेगात्मक, प्रत्यक्षात्मक और ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के स्थायी संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''– क्रेच एवं क्रचफील्ड

☞ ''अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के अहम् के मुख्य अवयव हैं।''– शेरीफ

☞ ''अभिवृत्ति, प्रतिक्रिया व अनुभव करने एवं किसी मत पर अपने विचार या राय रखने का एक स्थायी संगठन है।''– जैम्स ड्रेवर

☞ ''अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या **वस्तु के प्रति** किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सहायता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है''– गुड

☞ ''भावात्मक अथवा निषेधात्मक महत्त्व सहित वातावरण के कुछ तत्वों के पक्ष में या विरोध में प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति ही अभिवृत्ति है।''– बोगार्ड्स

☞ ''अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति, अनुभवों के द्वारा संगठित धनात्मक या ऋणात्मक प्रतिक्रिया करने की **संवेगात्मक प्रवृत्ति** है''– गेण रूमेल

☞ ''किसी विशेष स्थिति में व्यक्ति का किसी पदार्थ के प्रति संगत तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करने की प्रवृत्ति को अभिवृत्ति कहा है।''– फ्रीमैन

☞ ''अभिवृत्ति किसी **मनोवैज्ञानिक वस्तु** से संबंधित धनात्मक या ऋणात्मक प्रभाव की मात्रा है''– थर्स्टन

☞ **नोट**– वर्स्टन ने किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु या पदार्थ से संबंधित ऋणात्मक या धनात्मक प्रभावों की मात्रा को अभिवृत्ति या मनोवृत्ति कहा है।

➢ अभिवृत्ति के 3 आयाम होते हैं–
1. दिशा (Direction)
2. तीव्रता (Strength)
3. स्थिरता (Consistency)

➢ ऑलपोर्ट ने अभिवृत्ति निर्माण के लिए 4 चरण बताए हैं–
1. अनुभवों का संगठित होना।
2. अनुभवों का विभेदीकरण होना।
3. तात्कालिक अनुभव।
4. पूर्वनिर्मित अभिवृत्तियों को ग्रहण करना।

❖ अभिवृत्ति या मनोवृत्ति विशेषताएँ – (Characteristics of Attitude)

1. अभिवृत्ति जन्मजात न होकर अर्जित होती है।
2. अभिवृत्ति कल्पनाओं एवं पूर्वाग्रहों से प्रभावित होती है।
3. अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है।
4. अभिवृत्ति विचारों का एक पुंज होने के साथ ही संवेगों से जुड़ी होती हैं
5. अभिवृत्ति के 4 प्रमुख घटक होते हैं–
   (i) सरलता या जटिलता (ii) चरम सीमा
   (iii) केन्द्रीयता (iv) कर्षण शक्ति
6. अभिवृत्ति का **संबंध** किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, योजना आदि से होता है।
7. अभिवृत्ति धनात्मक या ऋणात्मक दोनों हो सकती है।
8. अभिवृत्ति **अनुभवों द्वारा** विकसित होती है या इसकी प्रकृति वातावरणजन्य होती है।
9. अभिवृत्ति अपेक्षाकृत स्थाई प्रकृति की होती है। इसमें समय–समय पर परिवर्तन संभव है।
10. अभिवृत्ति व्यक्तिगत होती है अर्थात् किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति विभिन्न व्यक्तियों की अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर हो सकता है।
11. अभिवृत्ति के विकास में प्रत्यक्षीकरण (Perception) व संवेगात्मक (Emotional) कारको की **महत्त्वपूर्ण भूमिका** होती है।
12. विभिन्न **व्यक्तियों** या **वस्तुओं के प्रति** किसी एक ही व्यक्ति की अभिवृत्ति में भी पर्याप्त अंतर हो सकता है।
13. अभिवृत्ति **सामान्य** भी हो सकती व **विशिष्ट** भी हो सकती।
14. अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है।
15. अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न **पक्षों** से संबंध रखती है।
16. अभिवृत्ति **मन की** एक अवस्था व विचारों का एक पुंज है।

12. रूचि **व्यक्तित्व** का एक अंग है।
13. योग्यताओं से रुचि का **संबंध** होता है।
14. वृद्धि के साथ रूचियों में विविधता समाप्त हो जाती है।
15. रूचियाँ **वंशानुक्रम** और **वातावरण** से प्रभावित होती है।
16. रूचि **व्यवहार** का एक पहलू है।
17. रूचि **वैयक्तिक क्षमता** से संबंधित होती है।
18. रूचियाँ परिवर्तनशील होती है।
19. रूचियाँ **व्यक्ति** एवं उसके **पर्यावरण की अंतःक्रिया** के फलस्वरूप विकसित होती है।
20. रूचियाँ **सामाजिक** एवं **आर्थिक** स्तर से प्रभावित होती हैं।
21. रूचियों के निर्धारण में प्रेरकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।
22. रूचियों का निर्धारण व्यक्तित्व के विकास से होता है।
23. रूचियों पर यौन कारकों का प्रभाव पड़ता है।

- कार्टल एवं डार्ले ने बताया कि रूचि का जन्म संतोषप्रद क्रिया–कलापों से होता है, जो आगे चलकर नवीन क्रिया–कलापों को प्रोत्साहित करते हैं।

❖ रूचि के स्त्रोत (Source of Interest)–

- रूचि के **दो स्त्रोत** होते हैं–

1. प्राकृतिक स्त्रोत– इसके अंतर्गत **मूल प्रवृत्तियाँ,** जन्मजात प्रेरणाएँ, आवश्यकताएँ, इच्छाएँ आती है। जिसके कारण व्यक्ति जन्म से ही, स्वाभाविक रूप से कुछ **वस्तुओं में रूचि** लेने लगता है। रूचियों का प्रभाव व्यक्ति के **विकास पर** पड़ता है। व्यक्ति के विकास के साथ–साथ उसकी **रूचियों** में भी परिवर्तन होता जाता है।
2. अर्जित स्त्रोत– रूचि अर्जित स्त्रोत के कारण भी होती है। आंतरिक भावनाओं से जो अभिरुचियाँ उत्पन्न होती हैं वे **अर्जित रूचियाँ** कहलती है।

- अर्जित स्त्रोत के अंतर्गत **आदतें, स्थायी भाव,** झुकाव और स्वभाव आते हैं। मानसिक विकास के साथ–साथ **व्यक्ति की आदतों, स्थायी भावों** तथा उसकी आवश्यकता के अनुसार उसकी रूचियों का निर्माण होता है।
- **उदाहरणार्थ–** ''जिस व्यक्ति के हृदय में **खेल प्रेम** का स्थायी भाव होता है, वह उन बातों में अधिक **रूचि** लेता है।
- उस खेल में जीत रहा है या नहीं, व्यक्तिगत रूप से वह उस खेल में अच्छा कर रहा है या नहीं आदि में वह रूचि लेता है। **खेलकूद में झुकाव होने के कारण** हम खेल में रूचि लेते हैं।''

❖ रूचियों का निर्माण–

- रूचि का निर्माण जन्म से ही आरंभ हो जाता है।
- रूचि के निर्माण में प्राकृतिक और अर्जित दोनों स्त्रोत सहायता करते हैं।
- **व्यक्ति की मानसिक संरचना, दशा और स्थिति पर :** रूचियों का निर्माण व्यक्ति की **मानसिक संरचना** तथा स्थिति के आधार पर होता है।
- यदि व्यक्ति **स्वस्थ और प्रसन्न** रहता है तो उसकी रूचि सकारात्मक होगी।
- वहीं अगर कोई व्यक्ति **अस्वस्थ और निराश** रहता है तो उसकी रूचि या तो होगी ही नहीं या होगी भी तो नकारात्मक होगी।
- **वातावरण और परिस्थितियों पर :** व्यक्ति की रूचियों का निर्माण उसके वातावरण तथा परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।
- व्यक्ति जिस **परिवार, समाज** या वातावरण से आता है उसकी रूचि भी उसकी प्रकार की होती है। व्यक्ति जिन अनुभवों को अर्जित करता है, उसके आधार पर उसकी रूचियों का निर्माण होता है।
- जैसे कोई **व्यावसायिक परिवार** से है तो उसकी रूचि भी व्यवसाय में होगी या कोई **राजनीतिक वातावरण** से है तो उसकी रूचि भी उसी क्षेत्र में होगी। कुछ मामलों में व्यक्ति की रूचि अपनी परिस्थिति के विपरीत भी होती है।

❖ रूचि के प्रकार (Types of Interest)–

- मनोवैज्ञानिकों ने **रूचियों के प्रकारों** को ज्ञात करने के लिए अनेक अध्ययन किए हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण अध्ययन **गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों** का माना जाता है। उनके अध्ययनों से 33 रूचियों के प्रकार ज्ञात हुए है। वास्तव में विभिन्न प्रकार की रूचियाँ मानव–जीवन में विकसित होती रहती है, क्योंकि ये अर्जित की जा सकती है। रूचियाँ स्थायी तथा परिवर्तनशील प्रकार की भी हो सकती है।

1. सुपर एवं क्राइट्स का रूचि वर्गीकरण सबसे लोकप्रिय है।

(i) **व्यक्त रूचि–** जब व्यक्ति किसी एक क्रिया की तुलना में किसी दूसरी क्रिया को अधिक महत्त्व देता है या अधिक पंसद करने की स्पष्ट अभिव्यक्ति करता है तो उसे व्यक्त रूचि कहते हैं। उदाहरणस्वरूप शिक्षक के पूछने पर यदि कोई विद्यार्थी यह कहता है कि उसे **समाजशास्त्र** और **मनोविज्ञान** अन्य विषयों से ज्यादा रूचिकर लगते हैं तो यह व्यक्त रूचि का उदाहरण है।

(ii) **प्रकट रूचि–** प्रकट रूचि उस रूचि को कहा जाता है जिसकी अभिव्यक्ति **व्यक्ति द्वारा स्वयं** अपनी इच्छा से कोई काम करने से होती है। उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति खाली समय में अगर टीवी देखता है तो यह कहा जा सकता है कि टीवी देखना उसकी **रूचि** है, तो यह प्रकट रूचि का उदाहरण होगा।

(iii) **सूचित रूचि–** इस प्रकार की रुचि प्रमापिकृत रुचि अनुसूची की सहायता से ज्ञात की जाती है। इसमें व्यक्ति की विभिन्न क्रियाओं के समूह में से कुछ क्रियाओं का चयन किया जाता है।

- आदत शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के शब्द **Habit** से हुई जिसकी उत्पत्ति–

Habit (अंग्रेजी भाषा)
↓
Habius/habere (लैटिन भाषा)
↓
जिसका अभिप्राय 'किसी वस्तु को प्राप्त करना' होता है।

➢ **जैसे–** खाना, पीना, उठना, **रोना, खेलना** आदि आदत के उदाहरण होते हैं।

☞ **नोट–** आदतों का प्रथम मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने वाला मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स है।

- विलियम जेम्स ने आदतों को मानव का दूसरा स्वभाव माना है।

❖ आदत की परिभाषाएँ (Definitions of Habits)–

☞ "आदत सीखने की ऐसी क्रिया है जिसमें एक साधारण प्रतिक्रिया स्वतः और बार–बार होती है।"– थायन

☞ "आदत वह अर्जित अनुभव है जो व्यवहार के परिवर्तन से आता है।"– मार्गन एवं गिलिलैण्ड

☞ "जो क्रियाएँ बहुत कम विचार के साथ या बिना किसी विचार के साथ नियमित रूप से एक ही प्रकार से की जाए तो वो आदतें कहलाती हैं।"– स्टुअर्ट एवं ऑकडेन

☞ "आदतें व्यवहार करने की और परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना करने की **निश्चित विधियाँ** होती है"– मर्सेल

☞ "आदत मानव का **दूसरा** स्वभाव है"– विलियम जेम्स

☞ आदत उस व्यवहार को दिया गया नाम है जो प्रायः इतनी बार **दोहराया** जाता है कि **स्वचालित** हो जाता है"– गैरेट

☞ "आदत कार्य का वह रूप है जो प्रारम्भ में अपनी इच्छा से **जान–बूझकर** किया जाता है परन्तु बार–बार किए जाने के कारण वह **स्वचालित** हो जाता है"– लैडेल

☞ "'सीखना **आदतों के निर्माण** की प्रक्रिया है"– रायबर्न

➢ **उदाहरण–** बालक **प्रारम्भ में** साईकिल चलाना सीखता है तब वह कैसे **हैण्डल** का पकड़ता है, कैसे **घुमाता** है, प्रारम्भ में यह स्थिति जटिल लगती है, परन्तु कुछ समय बाद वह आसानी से चला लेता है।

❖ आदतों की विशेषताएँ (Characteristics of Habits)–

1. आदतें जन्मजात न होकर अर्जित होती है।
2. आदतें दोहराए जाने वाले स्वचालित व्यवहार का नाम है।
3. आदत **पर्यावरण** अर्थात् **वातावरण** की देन है। यह वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण से अधिक **घनिष्ठ** जुड़ी होती है– शराब पीना, **जुआरी बनना** आदि।
4. कम थकान का होना अर्थात् कार्य की निरन्तरता होने के बाद उस कार्य को सरलता से किया जाता है।
5. आदत की क्रिया **स्वचालित** सम्पन्न होती है।
6. आदत **धीरे–धीरे** स्थायित्व की ओर जगह बना लेती है।
7. आदत पहचान का एक भाग माना जाता है।
8. आदत में रोचकता होती है।
9. कार्य में **एकाग्रता** व **तत्परता** आती है।
10. आदत होने पर कार्य में **शीघ्रता** मिलती है।
11. आदतें चरित्र का पुंज होती है।

❖ आदतों के प्रकार (Types of Habits)–

1. बनार्ड के अनुसार–
   (i) **शारीरिक**
   (ii) **मानसिक**
   (iii) **सांवेगिक**
2. सामान्य आदतें दो प्रकार की होती है–
   (i) **अच्छी**
   (ii) **बुरी**
3. वैलेन्टाइन के अनुसार–

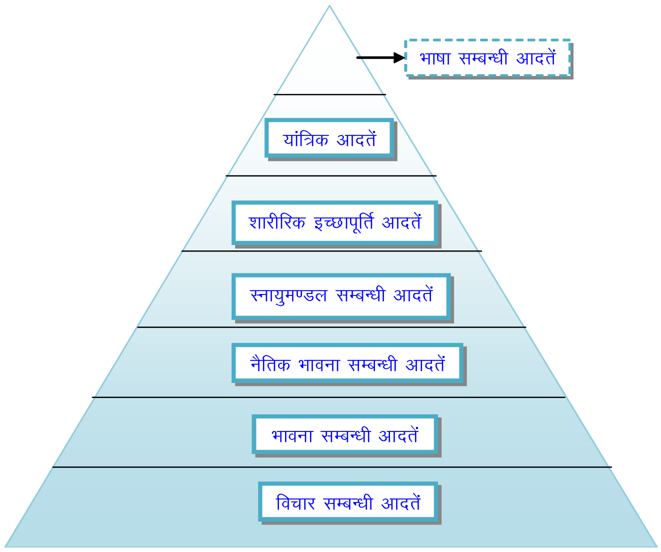

(i) भाषा सम्बन्धी आदतें– **विचार** आधारित या **बोलने** आधारित कार्य जो किसी अन्य द्वारा प्रभावित होकर सीखा जाता है। **जैसे–** किसी परिवार के सदस्य **अपशब्दों** या **भद्दे शब्दों** को बार–बार बोलते तब सभी उस आदत में ढल जाते हैं।

(ii) यांत्रिक आदतें– शारीरिक क्रियाओं द्वारा होने वाली गतिविधि है जिसे बिना किसी प्रयास के करते हैं। **जैसे–** जूते खोलना, गाड़ी चलाना।

(iii) शारीरिक अभिलाषा सम्बन्धी आदतें– इसके द्वारा शारीरिक **इच्छा पूर्ति** पूर्ण होती है **जैसे–** शराब पीना, धुम्रपान करना।

अभिक्षमता एवं उपलब्धि में अन्तर

क्र.सं.	अभिक्षमता	उपलब्धि
1.	भविष्यपरक	अतीत पर आधारित
2.	इसके द्वारा मापन किया जाता कि व्यक्ति भविष्य में कितना अच्छा सीखेगा।	यह आकलन करता कि व्यक्ति ने अतीत में कितना अच्छा सीखा है।
3.	प्रशिक्षण पूर्व अभिक्षमता परीक्षण दिए जाते हैं।	प्रशिक्षण के बाद यह उपलब्धि प्रदान की जाती है।
4.	इसमें देखा जाता है कि व्यक्ति क्या कर सकता है, इससे सीखने की क्षमता को मापा जाता है।	इसमें मौजूदा स्थिति को जाना जाता है, जो कि व्यक्ति पहले से जानता है।

अभिक्षमता एवं रुचि में अन्तर

क्र.सं.	अभिक्षमता	रुचि
1.	आपको संगीत गाने का स्वर, ताल सभी यंत्रों का ज्ञान है, तो यह अभिक्षमता है।	किसी व्यक्ति को किसी विशेष चीज के लिए पसंद करने के लिए इंगित किया जाता है, जैसे– मुझे संगीत बहुत पसंद है।
2.	स्थायी	अस्थायी
3.	क्या कर सकता है।	जबकि करना पसंद है।
4.	अभिक्षमता समय के साथ नहीं बदलती क्योंकि यह जन्मजात होती है।	रुचि समय के साथ बदल जाती है। इनको ग्रहण किया जाता माता–पिता से
क्षमता होने मात्र से किसी की रुचि हो यह जरूरी नहीं है।		

➢ **नोट**– इस प्रकार किसी व्यक्ति विशेष के लिए **क्षमता** है और उसमें **रुचि** भी है तो वह गतिविधि **सरल** हो जाती है।

❖ अभिक्षमता परीक्षणों का वर्गीकरण

1. **बहु अभिक्षमता परीक्षण मालाएँ (बैटरियाँ)–**

(क) विभेदक अभिक्षमता परीक्षण **(Differential Aptitude test) (DAT)**– यह बैनेट, सीपोर और वेसमैन द्वारा विकसित किया इसका उपयोग सबसे ज्यादा किया जाता है। प्रथम बार यह 1947 में किया गया था।

➢ **DAT में आठ स्वतंत्र परीक्षण होते हैं–**
- मौखिक तर्क
- संख्यात्मक तर्क
- अमूर्त तर्क
- प्रत्यक्षणात्मक गति व आधारित
- यांत्रिक तर्क
- अंतराल तर्क
- वर्तनी
- भाषा प्रयोग

(ख) बहुआयामी अभिक्षमा माला **(Multidimensional Aptitudes Battery) (MAB)**– इसको **जैक्सन** द्वारा विकसित किया गया था।

➢ शाब्दिक	निष्पादन
• सूचना	अंगुलिक संकेत
• अवबोधन	चित्र संकेत
• अंकगणित	रक्षाणिक
• समानताएँ	चित्र व्यवस्था
• शब्दावली	वस्तु संयोजन

- यह परीक्षण किशोर एवं वयस्क के लिए उपयुक्त है। इसका उपयोग **कैरियर काउंसलिंग और कर्मियों** के चयन में किया जाता है।

(ग) सामान्य अभिक्षमता परीक्षण माला **(General Aptitude test Battery) (GATB)–**
- यह एक **बहुअभिक्षमता परीक्षण माला** है।
- यह 1940 में विकसित किया गया और इसका उपयोग **100 से अधिक** व्यवसायों में नौकरी के प्रदर्शन की **पूर्व सूचना** देने के लिए किया जाता है।

➢ इसमें **9 कारकों** पर यह परीक्षण किया जाता है–
- **सामान्य अधिगम क्षमता**
- लिपिकीय
- मौखिक अभिक्षमता
- **मोटर**
- **संख्यात्मक अभिक्षमता**
- अंगुली
- स्थानिक
- हस्त निपुणता
- प्रारूप/रूप

(घ) थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यता परीक्षण **(Thurston's Primary Mental Ability test)–**
- इस परीक्षण का निर्माण **माध्यमिक व महाविद्यालय** के छात्रों के लिए **1938** में किया गया था और इसका प्रकाशन **1941** में **शिकागो प्राथमिक मानसिक योग्यता परीक्षण** नाम से प्रकाशित हुआ।
- यह परीक्षण **11 से 17 वर्ष** के बालकों पर किया गया था।
- इसमें लगभग **45 मिनट** लिए जाते हैं।

➢ यह परीक्षण **5–7 वर्ष** के बालकों पर निम्न तरह के प्रश्नों को पूछा गया था– 1. **शब्दार्थ**, 2. **बोध आधारित**, 3. **परिमाणात्मक/गणितीय** 4. **गत्ति आधारित** 5. **स्थान**।

(ङ) मनोवैज्ञानिक कॉर्पोरेशन द्वारा **(Psychological Corporation)**– यह परीक्षण मुख्यत: शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के लिए मनोवैज्ञानिक कॉर्पोरेशन ने किया है।
- यह परीक्षण **कक्षा 8 से 12** के बालकों के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- इसमें अलग–अलग पुस्तिका होती उन्हीं में से कुछ प्रश्न पूछे जाते एवं कुल **35–40 मिनट** तक लग जाते हैं।

(च) कैलीफोर्निया मानसिक परिपक्वता परीक्षण– **(California Mental Maturity Test)–**